

Title: Shri Atal Bihari Vajpayee moved the motion that this House expresses its confidence in the Council of Ministers. The motion was under consideration. (Not Concluded)

11.06 1/2 hrs.

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ:-

‘कि यह सभा मंत्रि-परिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है।’

अध्यक्ष महोदय, यह प्रस्ताव पेश करते हुए मेरे हृदय में मिली-जुली भावनाएं हैं। बरबस मेरा ध्यान २८ मई, १९९६ की ओर जाता है। उस दिन, इसी सदन में, इसी स्थान से, मैंने उस समय की अपनी सरकार के लिए विश्वास मत की मांग की थी। तब से लेकर नदियों में बहुत सा पानी बह गया है। लोक तंत्र की सरिता अबाध गति से बहती रहे, यह आवश्यक है। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह सरिता अविश्वास के भंवर में फंसकर अपना प्रवाह खो रही है। तब मैंने त्याग-पत्र दे दिया क्योंकि मैं अल्पमत में था और अम्पायर मुझे कहते कि आप मैदान से बाहर चले जाइए, उससे पहले ही मैंने मैदान छोड़ दिया। लेकिन उसके बाद जो घटनाचक्र चला, उस पर इस देश को गंभीरता से विचार करना होगा। १९८९ से विश्वास मत के भंवर में पड़े हुए लोक तंत्र का चित्र हमें चिंता पैदा करता है।

२१ दिसम्बर १९८९ को फिर विश्वास मत हुआ था। सरकार केवल ग्यारह महीने चली। ७ नवम्बर १९९० को पुनः विश्वास मत हुआ। १९९० में नए प्रधान मंत्री ने विश्वास मत लिया किंतु पांच वर्ष सरकार चलने की बजाए पांच महीने सरकार चली। लोक सभा भंग हो गई। १९९१ के चुनाव में किसी को बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस की अल्पमत की सरकार बनी। प्रारम्भ में हमने उसे सहयोग दिया।

बाद में वह अल्पमत बहुमत में कैसे बदला, इस कहानी में मैं जाना नहीं चाहता। मामला अदालत में है। वह सरकार अस्थिरता के भंवर में तो नहीं थी, लेकिन इस सरकार की नाव को भ्रष्टाचार के मगरमच्छों ने क्षत-विक्षत कर दिया। इसीलिए कांग्रेस चुनाव में हारी। कांग्रेस की ऐसी पराजय पहले कभी नहीं हुई थी। १९७७ में इमरजेंसी के अपराधों के कारण कांग्रेस को सत्ता से हाथ धोना पड़ा था, फिर भी कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी। लेकिन उस समय सबसे बड़ा दल होने का स्थान कांग्रेस ने खो दिया। भारतीय जनता पार्टी बढ़ते हुए जन-विश्वास के आधार पर सबसे बड़े दल का दर्जा प्राप्त करने में सफल हुई। लेकिन चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद फिर एक अस्थिरता का दौर चला। संख्या कम होने के कारण हमने अपने आप को अगल कर लिया। लेकिन २८ मई को इस सदन में भाषण करते हुए मैंने कहा था कि जनता का विश्वास प्राप्त करके

SHRI PUNNU LAL MOHALE (BILASPUR)

हम पुनः आर्येगे और आज हम फिर यहां उपस्थित हैं।

... (व्यवधान)

उस समय की परिस्थिति में और आज की परिस्थिति में जमीन आसमान का अन्तर है। इस बीच असुश्यता की राजनीति विफल हो गई और अलग-थलग करने के प्रयासों पर पानी फिर गया। हम सबसे बड़े दल के रूप में उभरे हैं और अपने मित्र दलों के सहयोग से हम सबसे बड़े गठबंधन के रूप में उभरे हैं।

... (व्यवधान)

बहुमत से थोड़ा कम हैं। हमने इस बात पर पर्दा नहीं डाला। हम राष्ट्रपति जी के पास दावा पेश करने के लिए नहीं गए। राष्ट्रपति महोदय ने हमें स्वयं विचार-विमर्श के लिए बुलाया और हमने उनसे कहा कि संख्या थोड़ी कम है। उन्होंने कहा - मैं और दलों से विचार-विमर्श करूंगा और उन्होंने विचार-विमर्श किया। हमारे साथ जो दल थे, जिन दलों के समर्थन का हम दावा कर रहे थे, उनके बारे में राष्ट्रपति महोदय ने दस्तावेज मांगे। अलग-अलग बातें कीं। तेलंग देशम के नेताओं से उनकी चर्चा हुई और वे इस परिणाम पर पहुंचे। कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनाने का दावा नहीं किया। कांग्रेस की अध्यक्षता और कांग्रेस के संसदीय दल की नेत्री, श्रीमती सोनिया गांधी, भी राष्ट्रपति जी से मिलने गई थी और श्रीमती सोनिया गांधी ने उनसे कहा कि हम दावा नहीं कर रहे हैं। संयुक्त मोर्चा दावा करता, इसका तो सवाल ही नहीं था। चुनाव में सबसे ज्यादा चोट उन्हें ही लगी है।

कांग्रेस का भी एक सदस्य बढ़ा है। संयुक्त मोर्चा की संख्या तो आधी रह गयी है। उन्होंने भी कहा है कि हम सरकार बनाने में रूचि नहीं रखते। तब राष्ट्रपति महोदय ने मुझे सरकार बनाने के लिए कहा। एक समय-सीमा निर्धारित की और वह समय-सीमा २९ तारीख को समाप्त हो रही है। मैं विश्वास का मत प्राप्त करने के लिए आपके सामने खड़ा हूँ।

मैं सदन के सामने इस बात को रखना चाहता हूँ कि विश्वास मत प्राप्त करने का सिलसिला एक वर्ष के बाद दूसरे वर्ष, तीसरे वर्ष, ये कब तक चलेगा। विश्वास का मत मुझे प्राप्त करना है इसलिए मैं यह प्रश्न खड़ा कर रहा हूँ ऐसी बात नहीं है। आज हर देशवासी के मन में, हर लोकतंत्र प्रेमी के मन में यह सवाल उठ रहा होगा और उठना भी चाहिए कि आखिर देश राजनीतिक अस्थिरता के भंवर में क्यों फंस गया है? जैसा मैंने कहा, यह सिलसिला बंद होना चाहिए। हम आशा करते थे कि चुनाव के बाद दो-दूक फंसला होगा। यह ठीक है कि आज यदि जनादेश किसी के पक्ष में है तो वह भारतीय जनता पार्टी और उसके मित्र दलों के पक्ष में है। कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा के पक्ष में तो विल्कुल नहीं है।

... (व्यवधान)

हमारे विरोधी दल आपस में भी लड़कर आए थे। इसलिए मैंने राष्ट्रपति महोदय से कहा था कि आप और दलों को बुलाकर पूछ लीजिए। जिम्मेदारी लेने से पहले हम चाहते हैं कि और दलों को आप मौका दें। कोई सरकार बनाने के लिए तैयार नहीं था। आज मैं फिर उस बात को दोहराता हूँ। अगर हमारे विरुद्ध सब दल इकट्ठे होते हैं, और स्थिर सरकार देने में सफल होते हैं तो आगे आएँ। इकट्ठे तो पिछली बार भी हो गये थे। कांग्रेस पार्टी बाहर से समर्थन दे रही थी। कुछ महीने समर्थन दिया और फिर समर्थन वापिस ले लिया और देवगोड़ा जी मुश्किल में फंस गये।

... (व्यवधान)

उनके ऊपर यह आरोप लगाया गया कि वह कांग्रेस पार्टी को तोड़ना चाहते थे। मैं नहीं जानता कि इसमें सच्चाई क्या है? फिर मेरे मित्र श्री इंद्र कुमार गुजराल प्रधान मंत्री बने और कांग्रेस पार्टी ने थोड़े महीने बाद फिर समर्थन वापिस ले लिया। अब कांग्रेस पर भरोसा कौन करेगा? लेकिन अब अगर नये विश्वास की सृष्टि हुई है और कुछ नयी शुरुआत की आकांक्षा है तो मैं कहूंगा कि देश को स्थिर सरकार की आवश्यकता है, ईमानदार सरकार की आवश्यकता है और इस आवश्यकता को, इस सरकार की आवश्यकता को हम पूरा करेंगे।

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी ने जब हमें बुलाया तो उनके सामने दो कसौटियां थीं।

उन्होंने दो बालों पर गम्भीरता से विचार किया - एक भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी और दूसरा भारतीय जनता पार्टी और मित्र दलों का गठबंधन सबसे शक्तिशाली गठबंधन था, लेकिन एक और विशेषता थी कि यह गठबंधन चुनाव के पूर्व हुआ था, चुनाव के बाद नहीं। हम इस गठबंधन को लेकर मतदाता के पास गए थे। चुनाव के पूर्व जो गठबंधन होते हैं, उनमें विचारों की समानता होती है। इसलिए राष्ट्रपति महोदय ने चुनाव के पूर्व गठबंधन के तथ्य को अधिमान दिया और हमें सरकार बनाने के लिए बुलाया। चुनाव में हम जनता के सामने दो प्रमुख लक्ष्य लेकर गए थे - एक देश को राजनैतिक स्थिरता देना और दूसरा देश को स्वच्छ शासन और प्रशासन देना। यह गठबंधन चुनाव के पूर्व था, इसलिए यह कहना गलत होगा कि यह गठबंधन केवल सत्ता के लिए था। लोकतंत्र में सत्ता में भागीदारी स्वाभाविक है, आवश्यक है, लेकिन चुनाव पूर्व गठबंधन में और चुनाव के बाद के गठबंधन में जो गुणात्मक परिवर्तन है, उसको समझा जाना चाहिए। राष्ट्रपति महोदय ने समझा और उन्होंने हमें सरकार बनाने के लिए बुलाया।

अध्यक्ष महोदय, जिस तरह के चुनाव परिणाम आए हैं, उनका मैं संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूँ। तमिलनाडु में सुश्री जयललिता के नेतृत्व में ए.आई.ए.डी.एम.के. की वापसी ने चुनाव दृश्य के पर्यवेक्षकों को आश्चर्य में डाल दिया। कर्नाटक में श्री हेगड़े के नेतृत्व में लोक शक्ति के साथ हमारा गठबंधन परिणाम लाया है। उड़ीसा में श्रद्धेय बीजू बाबू के सुपुत्र श्री नवीन पटनायक ने बीजू जनता दल का उदय करके राजनीति की तस्वीर ही बदल दी। पश्चिम बंगाल में ममता जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने कांग्रेस तथा मार्क्सवादी दलों को मूल से हिला दिया।

... (व्यवधान)

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) अध्यक्ष महोदय, आप माननीय सदस्यों से कहिए कि वे टोका-टाकी न करें, नहीं तो हम भी इनके लीडर्स को बोलने नहीं देंगे। इसके बाद शरद पवार जी ने बोलना है

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छा नहीं है।

... (व्यवधान)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: गुजरात में सिद्धांहीन गठबंधन परास्त हुआ और जनता ने

SHRI OMAR ABDULLAH (SRINAGAR)

पुनः हमें अपना विश्वास दिया। कुछ प्रदेशों में हमें अपेक्षा के अनुसार सफलता नहीं मिली। हम असफलता के कारणों पर गहराई से विचार कर रहे हैं। कुछ दलों के साथ हमारा गठबंधन इस चुनाव को लेकर ही नहीं हुआ, इससे पहले भी हम उनके साथ मिल कर काम करते रहे हैं, सरकार चलाते रहे हैं। अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी का गठबंधन

केवल सत्ता के बंटवारे के लिए नहीं है, पंजाब में सैकड़ों साल से हिन्दू और सिखों के बीच में जो भाईचारा चला आ रहा है, उसे मजबूत करने के लिए है।

अब पंजाब में सरसों की पीली फसल के ऊपर रक्त के लाल धब्बे नहीं दिखाई देंगे। पंजाब की शामों में गिद्धा सुनाई देता है। अभी बैसाखी का त्यौहार आ रहा है। पूरा पंजाब मस्ती में झूमेगा।

... (व्यवधान)

पंजाब में आतंकवाद को परास्त करने का कांग्रेस श्रेय लेती है, लेकिन जनता इस दावे को स्वीकार नहीं करती। अगर स्वीकार करती तो पंजाब में कांग्रेस की पराजय क्यों होती? हिमाचल प्रदेश में हिमाचल विकास कांग्रेस के साथ हम मिलकर काम कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी और हरियाणा विकास पार्टी की मिली-जुली सरकार चल रही है। अब हरियाणा और पंजाब के बीच में पारस्परिक सहयोग की चर्चा होती है, विवाद के मसले नहीं उलझाए जा रहे। जहां-जहां हमारी सरकारें हैं भारतीय जनता पार्टी की, वहां दारू बंद कर दी गई है। लेकिन जनता की मांग पर उस पर पुनर्विचार किया जा रहा है, क्योंकि लोकतंत्रात्मक सरकार है। और प्रदेशों में भी यह दारूबंदी का प्रयोग कई रूपों में से निकला है। लोग एक प्रयोग करते हैं, फिर उससे सीखते हैं, फिर दूसरी नीति बनाते हैं। लेकिन जो कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं उनका विचार करके सरकार अगर नीति में परिवर्तन करे तो फिर उसे उसके लिए श्रेय दिया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है भजन लाल जी जरूर इसके लिए वाहवाही कर रहे होंगे।

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैं स्पष्ट कर चुका हूँ कि बहुमत प्राप्त करने में कमी रहने के कारण हमने सरकार बनाने का दावा नहीं किया था, लेकिन आज हम सदन में बहुमत में हैं और अपना बहुमत सिद्ध करेंगे। लेकिन मैं फिर इस बात को दोहराना चाहता हूँ कि बहुमत और अल्पमत, ये लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं लेकिन क्या लोकतंत्रीय पद्धति बहुमत और अल्पमत के खेल में अटककर रह जाएगी? क्या स्थिरता का कभी समाप्त न होने वाला दौर चलता रहेगा? पिछले १८ महीने की अनिश्चितता ने, अस्थिरता ने किस तरह से देश को कठिनाइयों में डाला है, विशेषकर आर्थिक मोर्चे पर, उसका उल्लेख मेरे सहयोगी वित्त मंत्री श्री यशवन्त सिन्हा कर चुके हैं। उन्होंने स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। स्थिति चिन्ताजनक है। १८ महीने की अनिश्चितता के कारण, अदूरदर्शी नीतियों के कारण अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। खाद्यान्न का उत्पादन घटा है, निर्यात घटा है, सरकारी आमदनी घटी है, वित्तीय घाटा बढ़ा है। इसे रोकने के उपाय करने पड़ेंगे। उसके लिए केन्द्र में स्थिर, सक्षम और ईमानदार सरकार की जरूरत है। अगली शताब्दी की चुनौतियों का सबको सामना करना होगा।

यह अकेले एक दल का या अनेक दलों के गठबंधन का सवाल नहीं है। आप जब इधर थे तब आपकी कठिनाइयां हम देख रहे थे और जब-जब उन कठिनाइयों से निकलने के लिए हमारी सहायता की आवश्यकता हुई, हमने कभी इंकार नहीं किया, हमने कभी अस्वीकार नहीं किया। आखिर दल देश के लिए हैं, राष्ट्र सर्वोपरि है, भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता न केवल हमारी अर्थव्यवस्था को आहत कर रही है बल्कि सबसे बड़े लोकतंत्र के नाते वह विश्व में हमारी छवि को भी धूमिल कर रही है।

राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के माध्यम से मैंने अपनी सरकार की प्राथमिकताओं और उसकी नीतियों पर प्रकाश डाला है। राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण से अगर किसी का मतभेद है तो वह मतभेद कहाँ है और क्यों है, हम इस पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। हमारा कार्यक्रम राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का कार्यक्रम है। यह सर्वस्पर्शी कार्यक्रम है। यह देश के सभी भागों और समाज के सभी अंगों के उत्थान के लिए है। इसीलिए हमने इसे न्यूनतम कार्यक्रम नहीं कहा। हमने इसे राष्ट्रीय एजेंडा का नाम दिया है। हम चाहेंगे कि वह गम्भीर चर्चा का विषय बने। इस एजेंडे में हम जनआकांक्षाओं और सरकार की करनी के बीच जो फासला बढ़ा है, उसे कम करना चाहते हैं। भारत एक बहुदलीय लोकतंत्र है, हमें इस पर गर्व है और हम लोकतंत्र की इस विशेषता को वर्धमान करने के लिए कटिबद्ध हैं। स्वाधीनता के बाद ऐतिहासिक कारणों से केन्द्र में और राज्यों में भी एक दल का वर्चस्व रहा, जिसके कारण अनेक विकृतियाँ आईं। कुछ लाभ भी हुए थे। लेकिन स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई कि मुख्य मंत्री केन्द्र से नामजद होने लगे। प्रदेशों की स्वायत्तता व्यवहार में घटने लगी। क्षेत्रीय अपेक्षा और आवश्यकताओं के प्रकटीकरण का उचित माध्यम नहीं मिला। आज यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि अलग-अलग क्षेत्रों में क्षेत्रीय दल सत्ता की बागडोर संभाल रहे हैं और राष्ट्र के विकास में अखिल भारतीय दृष्टिकोण विकसित करते हुए योगदान दे रहे हैं। ये सब हमारी बधाई के अधिकारी हैं, हमारे अभिनन्दन के अधिकारी हैं।

शक्तिशाली केन्द्र और शक्तिशाली राज्य इनमें कोई अंतरविरोध नहीं है। हम चाहेंगे कि राज्यों को और अधिक स्वायत्तता मिले। हम चाहेंगे कि मुख्य मंत्री छोटी सी बात के लिए, थोड़ा सा अनुदान लेने के लिए, छोटी सी योजना पूरी कराने के लिए नई दिल्ली तक दौड़ लगाने का सिलसिला बंद कर दें। साथनों का बंटवारा इस तरह से होना चाहिए कि राज्य अपने पैरों पर खड़े हो सकें, विकास की जिम्मेदारियाँ निभा सकें। मित्रों इसके लिए राजनीति में जो नकारात्मकता आ गई है, जो एक छूआछूत की भावना आ गई है, उसे दूर करने की जरूरत है। पिछली बार केवल भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से अलग रखने के लिए जो गठबंधन बना, वह गठबंधन टूट गया, बिखर गया।

अध्यक्ष महोदय, देश के सामने नए चुनाव की चुनौती आ गई। अब क्या फिर वही परिदृश्य दोहराया जाएगा? पुराने राजनीतिक दल पहले जहाँ खड़े थे, भले ही वे वहाँ खड़े हों, लेकिन जनता आगे बढ़ गई और हमारे साथ काम करने वालों की संख्या भी निरंतर आगे बढ़ रही है। आज सारे देश का प्रतिनिधित्व इधर है। हम समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलना चाहते हैं। देश में अनेक विभिन्नताएँ हैं। बहुदलीय होने के साथ-साथ यह देश बहुभाषी और बहुधर्मी भी है। इस देश में अलग-अलग जनजातियों का निवास है। वे संख्या में कम हैं, इसलिए अपने अस्तित्व के बारे में चिन्तित हैं। कभी-कभी उत्तर पूर्व में बसे हुए लोग न केवल भौगोलिक दूरी अनुभव करते हैं, बल्कि भावनात्मक दृष्टि से भी अपने को उपेक्षित पाते हैं। इस स्थिति को बदलना पड़ेगा और हम बदलने के लिए कटिबद्ध हैं। लेकिन यह काम आम सहमति के आधार पर ज्यादा अच्छी तरह हो सकता है, केवल सरकार के भरोसे नहीं। विविधता हमारी संस्कृति की समृद्धि का परिचायक है, हमारी दुर्बलता को दैन नहीं। सभी भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कीजिए, तो उनमें कहीं न कहीं एक स्वर की झनक सुनाई देती है, एक झलक दिखाई देती है। अनेक कारणों से जो संख्या में कम हैं भाषा के कारण, धर्म के कारण या अपनी नस्ल के कारण, वैसे तो हम सभी एक ही नस्ल के हैं, उनके मन में आशंकाएँ पैदा होती हैं। हम उन आशंकाओं से परिचित हैं और उन आशंकाओं के निराकरण के लिए पूरी कोशिश करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मैं अधिक विस्तार से नहीं बोलना चाहता। अनेक मसले हैं जिन पर चर्चा होगी। मुझे उत्तर में अपनी बात कहने का मौका मिलेगा। कुछ प्रश्नों पर इस देश में हमेशा आम सहमति रही है और व्यापक आम सहमति रही है। मैं खासतौर से विदेश नीति के क्षेत्र का उल्लेख करना चाहूँगा। जब जेनेवा में मानवाधिकारों के सम्मेलन में कश्मीर के सवाल को हमारे पड़ोसी देश ने उठाने का फैसला किया, तो उस समय के प्रधान मंत्री श्री नरसिंहराव को नजर मेरे ऊपर गई कि मैं वहाँ जाकर भारत का प्रतिनिधित्व करूँ। इस पर हमारे पड़ोसी देश के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, वहाँ के नेताओं को बड़ा ताज्जुब हुआ। किसी नेता ने कहा भी कि भारत का लोकतंत्र बड़ा विचित्र लोकतंत्र है कि प्रतिपक्ष का नेता अपनी सरकार के पक्ष को रखने के लिए जेनेवा जाता है और एक हमारा प्रतिपक्ष का नेता है जो देश के अंदर ही ऐसी कठिनाइयाँ पैदा करता है जिससे अन्तरराष्ट्रीय बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

लोगों ने कहा कि नरसिंह राव जी सरल आदमी नहीं हैं, बड़े चतुर आदमी हैं। यह मत समझिए कि वे केवल देश की एकता का प्रदर्शन करने के लिए आपको भेज रहे हैं बल्कि उनके मन में यह भी हो सकता है कि अगर जेने वा में बात नहीं बनी और हमारे खिलाफ प्रस्ताव पास हो गया तो दोष में हिस्सा बंटाने के लिए वाजपेयी जी को भी बलि का

बकरा बनाया जा सकता है। मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। हम एक दूसरे की सदाशयता पर भरोसा करते हैं।

मेरे मित्र श्री गुजराल यहाँ बैठे हैं। जब मैं थोड़ी देर के लिए विदेश मंत्री बना था तब वे मास्को में हमारे राजदूत थे-हमारे मायने मेरे नहीं, देश के राजदूत थे। उस समय से हम एक दूसरे को जानते हैं। १९७७ में भी एमरजेंसी के बाद, देश में एक परिवर्तन आया था, आमूल परिवर्तन आया था। बड़े-बड़े स्तम्भ ढह गये थे। तम्बू उखड़ गये थे। बरसों से सत्तारूढ़ दल लोगों का विश्वास खो चुका था। उस समय भी विदेश नीति आम सहमति के आधार पर चली थी।

मुझसे एक विदेशी राजनीतिज्ञ ने पूछा था कि विदेश मंत्री महोदय, आप जहाँ बैठते हैं, वहाँ क्या परिवर्तन हुआ है, साउथ ब्लाक में क्या परिवर्तन होने वाला है? मैंने कहा कि मंत्री बदल गया है और कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। कांग्रेस के मित्र शायद भरोसा नहीं करेंगे। साउथ ब्लाक में नेहरू जी का एक चित्र लगा रहता था। मैं आते-जाते देखता था। नेहरू जी के साथ सदन में नोक-झोंक भी हुआ करती थी। मैं नया था और पीछे बैठता था। कभी-कभी तो बोलने के लिए मुझे वाकआउट करना पड़ता था लेकिन धीरे-धीरे मैंने जगह बनाई। मैं आगे बढ़ा और जब मैं विदेश मंत्री बन गया, तो एक दिन मैंने देखा कि गलियारे में टंगा हुआ नेहरू जी का फोटो गायब है। मैंने कहा कि यह चित्र कहाँ गया? कोई उत्तर नहीं मिला। वह चित्र वहाँ फिर से लगा दिया गया। क्या इस भावना की कद्र है? क्या देश में यह भावना पनपे?

ऐसा नहीं है कि नेहरू जी से मेरे मतभेद नहीं थे। मतभेद चर्चा में गंभीर रूप से उभर कर सामने आते थे। मैंने एक बार पंडित जी से कह दिया कि आपका एक मिला-जुला व्यक्तित्व है और आप चर्चित भी हैं, चेम्बरलिन भी हैं। वह नाराज नहीं हुए। शाम को किसी बैंक्रेट में मुलाकात हो गयी। उन्होंने कहा कि आज तो बड़ा जोरदार भाषण दिया और हँसते हुए चले गये। आजकल ऐसी आलोचना करना दुश्मनी को दावत देना है। लोग बोलना बंद कर देंगे। क्या एक राष्ट्र के नेता, हम आपस में मिलकर काम नहीं कर सकते? क्या एक राष्ट्र के नेता, हम सब आने वाले संकटों का सामना नहीं कर सकते?

एक शताब्दी खत्म हो रही है, दूसरी शताब्दी दरवाजे पर खड़ी है। अगर हमें छोड़कर आप कोई नया प्रयोग करना चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी लेकिन हम जो प्रयोग कर रहे हैं, उस प्रयोग को आप सफल होने दें, यह मैं आपसे अनुरोध जरूर करना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ मैं अपना प्रस्ताविक भाषण समाप्त करता हूँ। चर्चा में जो मुझे उठायें जायेंगे, उनका मैं उत्तर के रूप में जवाब दूँगा। धन्यवाद।

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That this House expresses its confidence in the Council of Ministers."

">

">

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, सदन के सामने प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में जो प्रस्ताव लाया गया है, उस बारे में मैं सदन के सामने अपने विचार और भावना रखने के लिए खड़ा हुआ हूँ। प्रधान मंत्री जी का वक्तव्य मैंने बड़ी शान्ति से सुना। मुझे एक बात माननी होगी कि भाषा की समृद्धि है। जहाँ तक मुहों की समृद्धि है, उस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। सदन के सामने प्रधान मंत्री जी ने पहले कहा कि हमारे पास शुरू में बहुमत नहीं था, कुछ नम्बर कम थे। आज विश्वास दिलाया कि आज हम बहुमत में पहुँचे हैं। कैसे पहुँचे, क्यों पहुँचे, इस पर मैं अभी बोलना नहीं चाहता हूँ। मगर हमें यह देखना होगा कि देश की जनता ने इस समय जनादेश निश्चित रूप में क्या दिया। कितने प्रतिशत लोगों ने अटल जी को यह सरकार चलाने का अधिकार दिया। कई पोलिटिकल पार्टियों के गुटों को साथ लेकर उन्होंने चुनाव के पहले गठबंधन बनाया था, यह सब देशवासी जानते हैं। चुनाव के पहले गठबंधन और चुनाव के बाद के गठबंधन के बारे में उन्होंने अपनी भूमिका सदन के सामने रखी है। चुनाव के पहले जो गठबंधन होता है, उसे मैं जरूर महत्व देता हूँ लेकिन चुनाव के पहले गठबंधन में लोगों के सामने जाते समय एक निश्चित कार्यक्रम लेकर जाना होता है, तो इस गठबंधन को महत्व देने की आवश्यकता है। भारतीय जनता पार्टी ने अपना घोषणा पत्र तय किया। जार्ज फर्नान्डो साहब ने अपना घोषणा पत्र अलग से तैयार किया और उनके अन्य साथियों ने अपना घोषणा पत्र अलग तैयार किया। सभी घोषणा पत्रों को देखने के बाद आप इस राय पर आ गए कि जिस तरह से देश चलाना चाहते थे, उसमें आज सरकार में शामिल होने वाली पार्टियों में भी अलग-अलग राय थी, अलग-अलग मुद्दे थे, अलग-अलग विचार और कार्यक्रम थे।

कांग्रेस ने अपना कार्यक्रम लोगों के सामने रखा था। युनाइटेड फ्रंट ने अपना कार्यक्रम लोगों के सामने रखा था। हमने मिलकर चुनाव नहीं लड़ा। लेकिन जब हमने युनाइटेड फ्रंट में शामिल होने वाली सभी पार्टियों की नीतियाँ देखीं, जो मुझे उन्होंने देशवासियों के सामने रखे, वे देखे तो पता लगा कि कांग्रेस और युनाइटेड फ्रंट के घोषणा पत्र में कई ऐसे समान कार्यक्रम हैं जिनके बारे में हम सदन में एकता से, एक विचार से बैठ सकते हैं, बोल सकते हैं, साथ काम कर सकते हैं। इसलिए हमें यह देखना होगा कि इस देश की जनता ने हुकुमत में बैठे हुए लोगों के लिए किस तरह मत दिया और इस तरफ मेरे साथ बैठने वाले हमारे साथियों के लिए किस तरह दिया। भारतीय जनता पार्टी और उनके मित्र पक्ष के जो आंकड़े मेरे सामने आए, वे यह हैं कि उनको ३७ प्रतिशत के आस-पास वोट पड़े और कांग्रेस और उनके साथी, युनाइटेड फ्रंट और उनके साथियों को मिलाकर ५५ प्रतिशत से ज्यादा वोट पड़े। इनमें से तेलंग देशम और नेशनल कॉन्फ्रेंस को जो वोट पड़े, वे आंकड़े दूर रखकर मैंने यह फिगर दी है। इसलिए मेरी और मेरे साथ बैठने वाले मेरे सभी साथियों की कुछ जिम्मेदारी है।

वह जिम्मेदारी इस देश की जनता ने हमारे ऊपर रखी है। देश के बारे में उनके मन में एक मजबूत भारत बनाने के, एक सैकुलर भारत बनाने के कुछ सपने थे। इक्कीसवीं शताब्दी में पहुँचने वाले दुनिया का एक शक्तिशाली आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन करने वाला भारत बनाने का और यह काम हम यहाँ मजबूती से करेंगे।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: No running commentary please.

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : १५ पार्टियों और चार निर्दलीयों की मदद से यह सरकार यहाँ बनी। इनको एक जगह लाने के लिए, मुझे लगता है कि १२ दिन से ज्यादा दिन लगे थे और यह सब करने के बाद ही समर्थन देने वाले कुछ लोगों ने, एक घटक अभी तक सरकार में शामिल नहीं हुआ। उसने बाहर से समर्थन देने का रास्ता पसन्द किया। मुझे गुजराल जी का जो प्रस्ताव बहुमत पुरःस्थापित करने का आया था, तब का आज के प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के भाषण की याद आती है। तब उन्होंने कहा था कि बाहर से समर्थन, इससे बड़ी परेशानी पैदा होती है, सरकार चलाना बड़ा मुश्किल होता है। ... (व्यवधान) कुछ दिनों के बाद संघर्ष की परिस्थिति भी पैदा होती है और जब तक ये हुकुमत में शामिल नहीं होंगे, तब तक यहाँ स्थिरता लाना या इस बारे में विश्वास देना, इसे स्वीकार करना बड़ा मुश्किल है।

MAJOR GENERAL BHUVAN CHANDRA, KHANDURI (GARHWAL)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खंडुड़ी एवीएसएम (गढ़वाल) : तब १४० थे।

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार (बारामती) : यही परिस्थिति आज हमें यहाँ दिखाई देती है। एक पार्टी ने बाहर से समर्थन दिया। इनमें एक अन्य घटक है, उन्होंने सरकार में शामिल होने से पहले दो दिन खुलेआम सरकार की वचनबद्धता और विश्वसनीयता के बारे में अपना अविश्वास जाहिर किया था। उन्होंने यह बात कही कि प्रादेशिक शक्ति मजबूत होनी चाहिए। एक हद तक मैं इससे सहमत हूँ। राज्य मजबूत होने चाहिए, मगर भारत सरकार दुबली रहकर यह देश चला नहीं सकती। हमें केन्द्र भी मजबूत चाहिए और हमें राज्य भी मजबूत चाहिए। जब केन्द्र में सरकार बनाने के लिए पार्टी की नीति के बारे में या पार्टी के बारे में किसी एक स्टेट की लीडरशिप की तरफ से अविश्वास की भावना प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से पूरे देशवासियों के सामने जब आती है, तब मेरे मन में एक आशंका पैदा होती है कि स्थिरता का किया हुआ दावा कहाँ तक और कब तक चलेगा?

जसवन्त सिंह जी को चेन्नई जाना पड़ा। ये दो दिन तक राह देखते रहे कि चिट्ठी आ रही है, चिट्ठी आ रही है। दो दिन के बाद चिट्ठी आई। ये जाकर वापस आये।

... (व्यवधान)

इस सरकार को समर्थन देने वाले एक मान्यवर ऐसे हैं कि उनकी नीति सरकार के बारे में इश्यू बेस्ड शायद तय हो सकती है। इसलिए जो गठबन्धन पूरे देशवासियों को स्थिरता के बारे में विश्वास दिलाना चाहता है, इस विश्वास पर आज भरोसा करने की परिस्थिति है, ऐसा मुझे नहीं लगता है। इस सरकार में सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी है।

भारतीय जनता पार्टी ने अपना चुनाव घोषणा-पत्र देशवासियों के सामने रखा था। उनको जो समर्थन मिला, यह तो मानना होगा कि उनके चुनाव घोषणा-पत्र को यह समर्थन मिला है। लेकिन आज जो कार्यक्रम हमारे सामने आ रहा है, जो नेशनल एजेंडा बना, आदरणीय राष्ट्रपति जी का अधिभाषण हमने सुना, मुझे मालूम नहीं कि अपने चुनाव घोषणा-पत्र में जो वादे भारत की जनता से भारतीय जनता पार्टी की तरफ से किए गए थे, उनमें से कई मुद्दे ठंडे बस्ते में डाल दिए या कोई सीक्रेट एजेंडा उन्होंने अपने सामने रखा है। सरकार के साथ बैठने वाले बाकी अन्य उनके सहयोगी हैं, उन पार्टियों की भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा-पत्र के बारे में क्या भूमिका रहेगी, यह जानने का हमारा अधिकार है?

भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में शुरू में लिखा -भय मुक्त-भ्रष्टाचार रहित शासन।

... (व्यवधान)

हुकूमत में आ गए इसलिए मैं भूख के बारे में कुछ बोलना नहीं चाहता। जहां तक भय की बात है इस देश में सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश की सरकार की जो आज की स्थिति है और उस सरकार में शामिल होने वाले लोगों के बारे में अखबारों में यह आता है कि किसी का क्रिमिनल रिकार्ड है, किसी को खिलाफ कई केस अदालतों में चल रहे हैं।

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती (अकबरपुर): उत्तर प्रदेश सरकार में २८ मंत्री ऐसे हैं जिनका क्रिमिनल रिकार्ड है।

... (व्यवधान)

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : मैं मायावती जी का आभारी हूँ कि उन्होंने सदन के सामने लेटेस्ट इंफार्मेशन रखकर पूरे देशवासियों को जानकारी देने का काम किया है।

तीसरा मुद्दा था - भ्रष्टाचार मुक्त समाज। कौन सा भ्रष्टाचार मुक्त समाज! हम लोगों ने देखा, पूरे देश में एक नेशनल क्राइसेज की परिस्थिति पैदा हुई। १३ दिन सदन का कारोबार ठप हुआ था। हर दिन अखबारों में सुखराम, सुखराम, एक ही बात आती थी। वही सुखराम आज उप मुख्यमंत्री बनाये गए हैं।

... (व्यवधान)

जिन सुखराम जी को कांग्रेस पार्टी ने अपने दल से बाहर निकाल दिया, वही सुखराम जी

... (व्यवधान)

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH)

श्री सत्य पाल जैन : बोफोर्स के बारे में भी बोलिए।

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : आपके हाथ में हुकूमत है, आप जो चाहे करें, बोलने की कोई जरूरत नहीं है, आप दिखाएं पार्लियामेंट को, क्योंकि आपके पास हुकूमत है। (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Sharad Pawarji, one minute. Hon. Members, please understand the position. The Doordarshan is telecasting the proceedings nationally and internationally. Please understand the position. When the hon. Leader of the Opposition is on his legs, please do not disturb him.

... (Interruptions)

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार: जिस मुद्दे पर १३ दिन इस देश की लोक सभा बंद हुई थी, राज्य सभा बंद हुई थी, वही महानुभाव आज भारतीय जनता पार्टी के राज में मुख्य मंत्री के बाद नम्बर दो के मंत्री की हैसियत से बैठे हैं। जिनके लड़के के बारे में केस दायर किए थे, उनको आज भारतीय जनता पार्टी ने राज्य सभा में भेजने का प्रबंध किया है।

12.00 hrs.

ये लोग ही भ्रष्टाचार रहित समाज की स्थापना की बात करते हैं। इस बारे में मुझे ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है। मुझे याद है जब लोहिया जी ने

... (व्यवधान)

मुझे याद है जब आडवाणी जी की यात्रा की शुरुआत हुई, तब उन्होंने कहा था कि हमारा श्री राम है और कांग्रेस का सुख राम है। वही कांग्रेस का सुखराम आज भारतीय जनता पार्टी का सुखराम बन गया।

... (व्यवधान)

मुझे कुछ ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। जो यहां राजनैतिक स्थिरता की बात कही गई, मैं मानता हूँ कि भारत जैसे देश में आज स्थिरता की आवश्यकता है। वह स्थिरता कब पैदा हो सकती है, कब मिल सकती है?

समाज में एकता हो तो स्थिरता पैदा हो सकती है। सभी वर्गों में विश्वास पैदा करने में हम कामयाब हों तो समाज में एकता पैदा हो सकती है। मंदिर मस्जिद जैसे मुद्दों से समाज में एकता कभी पैदा नहीं हो सकती।

आज जो कमियां हैं, वे कमियां हैं कि इस देश के मूलभूत सिद्धांतों को छोड़कर जब हम आगे जाने के लिए कदम उठाते हैं, उसकी हमें कीमत देनी पड़ती है। ... (व्यवधान) भारतीय जनता पार्टी और उनके घोषणा-पत्र पर भी हमें ध्यान देना पड़ेगा। जहां तक एकता की बात है, इसमें सेकुलरिज्म को हम नजरन्दाज नहीं कर सकते। अटल जी ने यहां कहा कि इस देश के समाज में, सभी धर्मों को, सभी वर्गों को, हम सभी लोगों को एक रहना पड़ेगा और इसके लिए उनको समझना पड़ेगा। मैं इनसे सहमत हूँ। लेकिन जो घोषणा-पत्र इन्होंने दिया, उसमें क्या लिखा है:- 'हमारी राष्ट्रवादी परिकल्पना भारत की केवल भौगोलिक या राजनैतिक पहचान से बंधी हुई नहीं है बल्कि यह हमारी धिरन्तक सांस्कृतिक विरासत की गरिमा है।' यह सांस्कृतिक विरासत धर्म और भाषा सभी तत्वों का केंद्रबिन्दु है। यह सभ्यता की पहचान है और भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को निर्धारित करती है जो हिन्दुत्व का मूल है।

... (व्यवधान)

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जिसका मूल हिन्दुत्व है।

... (व्यवधान)

हिन्दू राष्ट्रवाद की संकल्पना मानना चाहते हैं ?

... (व्यवधान)

यहां सदन में हमारे रेल मंत्री जी हैं, आदरणीय हमारे दोस्त नीतीश कुमार जी हैं।

... (व्यवधान)

मुझे याद है, दिसम्बर १९९० में इसी सदन में, आज सरकार में बैठने वाले हमारे एक मित्र ने एक वक्तव्य दिया था। वह आज कैबिनेट मंत्री हैं। उनका जो वक्तव्य था, उसे यहां मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। भारतीय राष्ट्रवाद की जगह जो हिन्दू राष्ट्रवाद लाना चाहते हैं, उन्हें यह सोचना चाहिए कि तब देश को एक रखना कठिन हो जाएगा। यह हमारे साथी नीतीश कुमार जी ने इस सदन में कहा था।

... (व्यवधान)

आज मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि यहां पर हिन्दू राष्ट्रवाद की जो संकल्पना उन्होंने सदन के सामने रखी, घोषणा-पत्र में रखी और लोगों के सामने रखकर, उनसे समर्थन लेकर जो भारतीय जनता पार्टी आई, इनकी विचारधारा से आप सहमत हैं या नहीं, इसका जवाब उनको देना पड़ेगा।

मंदिर के विषय को लेकर इस देश में संघर्ष हुए। मुझे बहुत ख़ुशी है, प्रधान मंत्री जी ने ब्यान दिया कि अयोध्या मुद्दा पार्टी के लिए कोई महत्व नहीं रखता। बड़ी अच्छी बात है। उन्होंने कहा कि अयोध्या का मुद्दा भारतीय जनता पार्टी के लिए बहुत महत्व का नहीं है।

... (व्यवधान)

मैं उनके चुनाव घोषणा पत्र के इस पैरा को यहां पढ़ना चाहता हूँ। इसमें लिखा है - भारतीय जनता पार्टी को निश्चित विश्वास है कि हिन्दुत्व में राष्ट्र के नवोदय और सुदृढ़ करने तथा राष्ट्र निर्माण के कठिन कार्य को सम्पन्न करने की अपार संभावनाएँ हैं। यह उच्च स्तर की राष्ट्र भक्ति पैदा कर सकता है और निश्चय ही सभी में चेतना पैदा करता है, जिससे देश में उच्च स्तर की निपुणता आ सकती है और बेहतर प्रदर्शन किया जा सकता है। ऐसे संगठनशील विचारों को ध्यान में रखकर भाजपा अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण के रामजन्म भूमि आन्दोलन में शामिल हुई थी। इतिहास के इस सबसे बड़े जन आन्दोलन ने भारत की आत्मविस्मृत राजनीति को फिर से जागृत कर दिया और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव को सुदृढ़ किया। इसमें दो बातें हैं। एक तो अटल जी ने कहा कि अयोध्या का मुद्दा हमारे सामने नहीं है, लेकिन चुनाव घोषणा पत्र में उन्होंने यह मुद्दा रखा है। दूसरी एक और सबसे बड़ी गम्भीर बात उन्होंने लिखी है - इतिहास के सबसे बड़े जन-आन्दोलन में भारत की राजनीति आत्म-विश्वास की है। इस देश में महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की जंग हुई। क्या यह इससे भी बड़ा जन-आन्दोलन है ? क्या आप नया इतिहास लिखना चाहते हैं ? आगे आने वाले लोगों के लिए स्वतन्त्रता के आन्दोलन के महत्व को कम करने की कोशिश आप कर सकते हैं। आप इतिहास बदलना चाहते हैं। इससे यही बात साफ हो रही है। आपने भले ही अभिमत की बात कही है, मगर जो आपका छुपा हुआ एजेंडा है, सिक्केट एजेंडा है, यह एजेंडा देशवासियों में एक तरह से भय की स्थिति पैदा करता है। आपकी पार्टी के अध्यक्ष और आज के गृह मंत्री का ब्यान मैं आपके सामने पढ़ना चाहता हूँ। उन्होंने कहा है - अयोध्या में मंदिर बनने तक शान्त नहीं बैठेंगे। यह उनका ७ फरवरी, १९९८ का ब्यान है, कोई बहुत पुराना नहीं है। इसमें आगे लिखा है - भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष, श्री लाल कृष्ण आडवाणी, ने आज यहां आकर कहा कि विभिन्न दलों के गठबन्धन के बाद भी भारतीय जनता पार्टी ने अपने सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं किया। उन्होंने अयोध्या मुद्दे को भावनात्मक रूप देते हुए कहा कि अपने राजनीतिक जीवन में जो कुछ सीखा और मथा है, उसमें अयोध्या का राम मंदिर सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। राम जन्म भूमि के आन्दोलन से भारतीय जनता पार्टी को यह लोकप्रियता मिली और वह देश की सबसे बड़ी पार्टी बनी है। ऐसे में जो लोग भाजपा को राम मंदिर से पीछे हटने की बात कहते हैं, उसमें सच्चाई नहीं थी। आडवाणी जी ने कहा - भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र जारी होने से पहले, अन्य राजनीतिक दलों को यह आशा थी कि इस बार भारतीय जनता पार्टी राम मंदिर के मुद्दे को नहीं उठाएगी, परन्तु भाजपा ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में इसको प्राथमिकता देकर यह साबित कर दिया कि वह जनभावना का आदर करती है। यह इस देश के गृह मंत्री का चुनाव में दिया ब्यान है।

SHRI MOHAN SINGH (DEORIA)

श्री मोहन सिंह (देवरिया): अपने नेता के बारे में भी उनकी यही राय है।

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री का ११ फरवरी का बयान है। उसमें मुख्य मंत्री ने कहा कि लोकतन्त्र में श्री राम मंदिर जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर सब पार्टियों का दृष्टिकोण जानने का हक जनता का है। इससे जनता को फैसला लेने की सुविधा होगी।

भारतीय जनता पार्टी बता चुकी है कि वह अयोध्या में राम मंदिर बनाएगी। अब आपके दल भी स्पष्ट करें कि क्या वे वहां मस्जिद बनाना चाहते हैं ? उन्होंने कहा है कि राम जन्म-भूमि मंदिर मुद्दा अदालत में कभी हल नहीं हो सकता। इसमें हमें कुछ रास्ता निकालना होगा और हम रास्ता निकालेंगे। भारत सरकार की हुकूमत हमारे पास आने के बाद हम इसमें सफल होंगे।

... (व्यवधान)

अब मैं अपने साथी जार्ज फर्नान्डेज साहब और बहन ममता जी से पूछना चाहता हूँ कि जैसा आडवाणी जी ने कहा है, जो भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा-पत्र में दिया है तथा जो मुद्दा लेकर वे जनता के पास गये, कुछ हद तक उस मुद्दे पर उनको समर्थन भी मिला और जिसे पूरा करने की उनकी कोशिश रहेगी - उस पर आप लोगों की क्या नीति रहेगी ? मैं प्रधान मंत्री अटल जी से पूछना चाहता हूँ कि जब आप कहते हैं कि अयोध्या का मुद्दा आज की परिस्थिति में महत्व का मुद्दा नहीं है तो छः साल पहले इस देश में जो कुछ हुआ, वह क्या हुआ ? मैं मुम्बई शहर से आता हूँ। वहां कितने बड़े पैमाने पर खून-खराबा हुआ, कितने लोगों को हत्याएं हुईं और करोड़ों रुपये की सम्पत्ति कैसे जल गयी ? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: किसने किया ?

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार: किसने किया ? (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी (रायगढ़): अगर ये लोग हमारे नेता को नहीं बोलने देंगे तो हम भी इनके नेता को नहीं बोलने देंगे। (व्यवधान)

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH)

श्री सत्य पाल जैन : अब क्यों चिल्लाते हो। पहले क्यों इन्ट्रूट कर रहे थे?

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : किसने किया? इसकी जांच करने के लिए मुम्बई के सिटिंग हाई-कोर्ट जज श्री कुलकर्णी को नियुक्ति हुई थी। इस कमीशन का काम जब शुरू था तब महाराष्ट्र की भाजपा-शिवसेना सरकार ने इस कमीशन को समाप्त करने का निर्णय लिया। मैं अटल जी को धन्यवाद देता हूँ कि जब उनकी तेरह दिन की सरकार थी तब उन्होंने महाराष्ट्र सरकार को संदेश भेजा कि इस कमीशन को रिवाईव करिये। वह कमीशन रिवाईव हुआ। इस कमीशन की अंतिम रिपोर्ट महाराष्ट्र सरकार के पास आई है। पिछले कई हफ्ते से वहाँ महाराष्ट्र की विधान सभा में और विधान परिषद में संघर्ष चला कि वह रिपोर्ट सदन में रखिये। वह रिपोर्ट आई नहीं है क्योंकि इस रिपोर्ट में वहाँ खून-खराबा किसने किया, लोगों की हत्याएं किसने की, वहाँ आग लगाने का काम किसने किया और कौनसी साम्प्रदायिक शक्ति इसके पीछे थी - ये सब उसमें हैं।

... (व्यवधान)

हाई-कोर्ट के सिटिंग जज का यह निष्कर्ष है। अगर आज यह राम-मंदिर का मुद्दा महत्व का मुद्दा नहीं होता तो छः साल पहले देश में खून-खराबे की आवश्यकता क्या थी, मस्जिद तोड़ने की आवश्यकता क्या थी, समाज में दरार पैदा करने और समाज की एकता पर हमला करने आवश्यकता क्यों थी? इसको जब तक आप नहीं बताएंगे तब तक आपके ऊपर हमारे जैसे किसी भी व्यक्ति को भरोसा नहीं होगा।

... (व्यवधान)

यह मुद्दा खासतौर से हम आपके सामने रखना चाहते हैं।

SHRI SHAKUNI CHOUDHARY (KHAGARIA)

श्री शकुनी चौधरी (खगड़िया): मेरा पाइंट ऑफ आर्डर है।

MR. SPEAKER : Please cooperate.

ऐसे नहीं।

... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please be seated. Take your seats.

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : सैकुलरिज्म के इस देश में अनन्य असाधारण महत्व हैं। अगर उसकी संकल्पना किसी ने डाइल्यूट करने की कोशिश की तो यह समाज कभी एक नहीं रहेगा। जब तक समाज में एकता नहीं रहेगी, तब तक स्थिरता पैदा नहीं होगी इस बात को ध्यान में रखना होगा। मैं यह बात सदन के सामने कहना चाहता हूँ। आपको ये कमियाँ हैं। इन कमियों की तरफ आपका ध्यान पहुँच नहीं सकता। आपको ये सबसे बड़ी कमियाँ हैं। आपके इनके बारे में सोचना होगा। आप जब तक अपनी नीति साफ नहीं करेंगे तब तक देश के सभी वर्गों का विश्वास हासिल करने में कामयाब नहीं होंगे।

इसमें एक बात और है। यहाँ स्वदेशी की बात कही गई। मेरे जैसा व्यक्ति जो देश की तरक्की के बारे में सोचता है, वह बहुत कुछ बातें सोचने को मजबूर हो जाता है। दुनिया किस तरफ जा रही है? पड़ोसी देशों में आर्थिक क्षेत्र में जो परिवर्तन हो रहे हैं, मैं हमेशा उसका बड़े नजदीक से अभ्यास करने की कोशिश करता हूँ। कई बार लगता है कि भारत जैसे देश में सब कुछ है, यहाँ टैलेंट हैं, मेहनत करने वाले समाज का बहुत बड़ा वर्ग है, यहाँ पर खेती अच्छी है, यहाँ पानी की उपलब्धी है, यहाँ भूगर्भ में सम्पत्ति है, यहाँ साल में बहुत महानों तक और बहुत दिनों तक उपलब्ध रहने वाला सूरज का प्रकाश है। अगर हम इनफ्रास्ट्रक्चर फील्ड पर मिल कर और ज्यादा ध्यान देकर कदम उठाएंगे तो कुछ दिनों में प्रगतिशील राष्ट्रों के बराबर पहुँच जाएंगे। हम जब परिवर्तन और विकास की बात करते हैं, अगर उस समय हमारा दृष्टिकोण कुछ राज्यों तक या देश तक सीमित रहेगा तो यहाँ पर परिवर्तन लाने की मर्यादा आदे आ सकती है। इसलिए हम वैश्वीकरण पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं कर सकते।

स्वदेशी शब्द गांधी जी का था। महात्मा गांधी जी ने जब स्वदेशी को विचार पूरे देश के सामने रखे तो उनके मन में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की भावना थी। जो चीजें दुनिया के अन्य देशों में पैदा होती थीं, अगर उन्हें यहाँ बेचने की कोशिश होती थी तो वह उनका विरोध करते थे। उन्होंने इसके खिलाफ आन्दोलन भी किया था। मैं यह मानता हूँ कि भारत का निर्माण भारत के लोग करें, लेकिन उसके साथ-साथ गांधी जी के स्वदेशी के बारे में जो विचार थे, उन्हें हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। कांग्रेस ने ही स्वदेशी शब्द को लेकर इस देश में स्वतंत्रता का ज्वर पैदा किया था। स्वदेशी एक ऐसा मंत्र था जिस में आदर, स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना थी। आज भारतीय जनता पार्टी और उनकी सरकार में शामिल होने वाले कई हमारे साथी जिस तरह से स्वदेशी की भावना देश के सामने रखते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि वह इससे डर पैदा करने वाली मानसिकता का दर्शन पूरे देशवासियों को कराते हैं। कई ऐसे क्षेत्र हैं चाहे वे उसे बेसिक डेवलपमेंट कहें, इनफ्रास्ट्रक्चर कहें, उनके लिए बहुत बड़े पैमाने पर राशि रखने की जिम्मेदारी हम सब की है। जब देश के बाकी कामों के लिए हमारे पास राशि की कमी होती है तो ऐसे क्षेत्र में बाहर से लोग आएँ और एक हद तक सहयोग दें तो हमें उनसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहा गया कि यहाँ ईस्ट इंडिया कम्पनी आएगी। मुझे याद है जब यहाँ एनरॉन का प्रोजेक्ट क्लीयर हुआ था तो उसको लेकर भारतीय जनता पार्टी ने महाराष्ट्र में संघर्ष और आन्दोलन किया था। वे बार-बार कहते थे कि यहाँ ईस्ट इंडिया कम्पनी आएगी। जहाँ एनरॉन का प्रोजेक्ट लगना था। वहाँ बंदरगाह बनाने की बात थी। कहते थे कि वहाँ अमरीका का दसवाँ फ्लोट आएगा और हमारे देश पर आक्रमण हो जाएगा।

बहुत सी बातें की थीं पर मुझे ख़ुशी है कि उन १३ दिनों में आपने वह प्रकल्प क्लियर किया था। उसका कुछ फायदा हो ही गया। मगर आज जो भय की मानसिकता हम देश के सामने रखना चाहते हैं, मुझे लगता है कि इससे देश का नुकसान होगा। इस देश की नयी पीढ़ी को, विद्वानों को हमारे शासन पर भरोसा हो, ऐसी तैयारी हमारी होनी चाहिए और मुझे विश्वास है कि इस देश की नयी पीढ़ी हो, विद्वान हों या मजदूर हों, ये सभी लोग इस देश को मजबूत करने में पीछे नहीं रहेंगे।

पिछले कुछ सालों से इस देश में जो कुछ इनवेस्टमेंट हुआ, इस देश में जी.डी.पी. का कुल दो प्रतिशत से ज्यादा बाहर का इनवेस्टमेंट नहीं हुआ, इसके द्वारा हमारे मन में जो भय पैदा करने का काम किया जाता है, उससे कुछ लाभ नहीं होगा। आज जब आर्थिक क्षेत्र में महाशक्ति पैदा करने की बात की जाती है, तो मेरे मन में इस बात की चिन्ता होती है कि स्वदेशी की गलत व्याख्या करके हम अपनी आर्थिक प्रगति को रोकने का काम करेंगे जिसकी कीमत आगे आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी। यह भय मेरे मन में भारतीय जनता पार्टी और उनके साथियों की हकूमत के बारे में है। आपने आर्थिक एजेण्डा बनाया। मैं बड़ा चिन्तित हूँ कि हर दिन हमारे साथी जार्ज फर्नान्डीज़ एक आर्थिक एजेण्डा देते थे। यह सरकार भी अजीब थी। नेशनल एजेण्डा अलग आता था, जार्ज साहब का एजेण्डा अलग आता था और परराष्ट्र नीति के बारे में हेगड़े जी का एजेण्डा अलग आता था। अच्छा हुआ कि मिनिस्टर बनने के बाद वे अलग-अलग एजेण्डा बंद हो गए मगर उनके मन में जो विचार है, वे बंद नहीं होंगे और इसकी कीमत हमें आने वाले सालों में चुकानी पड़ेगी।

एक और शंका मेरे मन में इस सरकार के बारे में है। अटल जी ने जो कहा, मैं उनसे सहमत हूँ, कि देश की राष्ट्रीय नीति पर कई सालों तक इस देश में विचार हुआ, चर्चा हुई और आम सहमति से एक राष्ट्रीय नीति बनी, जिसका समर्थन इस सदन में बैठने वाले सभी साधियों ने सालों-साल किया है। सरकार में बैठने वाले कुछ साधियों के बयान पढ़ने के बाद आज मेरे मन में चिन्ता पैदा होती है। देश के रक्षा मंत्री का बयान मैंने पढ़ा। अभी-अभी लोहिया जी के स्मृति दिन के बारे में और चीन के पास भारत की जो जमीन है, उस पर एक वक्तव्य मैंने पढ़ा। आपके नेशनल एजेंड्डा में पड़ोसी देशों के साथ अच्छे रिश्ते रखने की बात कही गई है और जिस तरह स्टेटमेंट दिया गया है उसे आपको देखना होगा। मैं कहना चाहता हूँ कि अटल जी को इस बारे में देश के सामने सफाई देनी चाहिए और बताना चाहिए कि स्थिति क्या है। मुझे याद है कि साल डेढ़ साल पहले चीन के राष्ट्र प्रमुख जब भारत में आए थे तो एक बड़ा डिमोनस्ट्रेशन करने का काम इन्हीं रक्षा मंत्री जी के नेतृत्व में हुआ था। मुझे इस बारे में याद है, मैं इसे भूला नहीं हूँ और इसका असर पड़ोसी देशों पर क्या होगा, इसे हम नज़रंदाज़ नहीं कर सकते। इसकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी।

मैंने सिर्फ दो-चार मुद्दे यहां पर रखे हैं। मुझे दिखाई देता है कि इस सरकार की नीतियों में और समझ में बहुत अंतर है। इनमें बहुत कंट्राडिक्शन्स हैं और कंट्राडिक्शन्स से भरा हुआ कार्यक्रम लेकर, देश को आगे ले जाने का विचार देश के सामने इन्होंने रखा है, उसकी यात्रा ठीक होगी या नहीं, इस पर विश्वास करना मेरे जैसे व्यक्ति के लिए बड़ा मुश्किल है। इसलिए आज के प्रस्ताव का विरोध करना मेरा फर्ज बनता है।

मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूँ मगर एक बात साफ कहना चाहता हूँ कि इस देश को आज स्थिरता की आवश्यकता है। रूलिंग पार्टी के पास, प्रधान मंत्री के पास अगर आवश्यक बहुमत का नंबर हो तो सरकार चलाने का उनका अधिकार हम ज़रूर मानेंगे। लेकिन अगर पार्टियों को तोड़कर, जिसे लेकर कल सदन के कई घंटे बीत गए, इस रास्ते से जाकर अगर सदन में बहुमत बनाने की कोशिश कल होगी तो ऐसी परिस्थिति कल होगी कि ऐसी परिस्थिति बार-बार भी आ सकती है। मुझे विश्वास है कि ऐसी परिस्थिति पैदा न होने देने के लिए कदम सामने की तरफ से उठेगा।

डेढ़ साल पहले चीन के राष्ट्र प्रमुख जब भारत में आए थे तो एक बड़ा डिमोनस्ट्रेशन करने का काम इन्हीं रक्षा मंत्री जी के नेतृत्व में हुआ था। मुझे इस बारे में याद है, मैं इसे भूला नहीं हूँ और इसका असर पड़ोसी देशों पर क्या होगा, इसे हम नज़रंदाज़ नहीं कर सकते। इसकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी।

मैंने सिर्फ दो-चार मुद्दे यहां पर रखे हैं। मुझे दिखाई देता है कि इस सरकार की नीतियों में और समझ में बहुत अंतर है। इनमें बहुत कंट्राडिक्शन्स हैं और कंट्राडिक्शन्स से भरा हुआ कार्यक्रम लेकर, देश को आगे ले जाने का विचार देश के सामने इन्होंने रखा है, उसकी यात्रा ठीक होगी या नहीं, इस पर विश्वास करना मेरे जैसे व्यक्ति के लिए बड़ा मुश्किल है। इसलिए आज के प्रस्ताव का विरोध करना मेरा फर्ज बनता है।

मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूँ मगर एक बात साफ कहना चाहता हूँ कि इस देश को आज स्थिरता की आवश्यकता है। रूलिंग पार्टी के पास, प्रधान मंत्री के पास अगर आवश्यक बहुमत का नंबर हो तो सरकार चलाने का उनका अधिकार हम ज़रूर मानेंगे। लेकिन अगर पार्टियों को तोड़कर, जिसे लेकर कल सदन के कई घंटे बीत गए, इस रास्ते से जाकर अगर सदन में बहुमत बनाने की कोशिश कल होगी तो ऐसी परिस्थिति कल होगी कि ऐसी परिस्थिति बार-बार भी आ सकती है। मुझे विश्वास है कि ऐसी परिस्थिति पैदा न होने देने के लिए कदम सामने की तरफ से उठेगा।

और जो कंट्राडिक्शन्स आपमें हैं, इन कंट्राडिक्शन्स को लेकर अगर आप चलेंगे तो मुझे मालूम नहीं कि आप कामयाब होंगे या नहीं। आपने राज्यों के दलों और उनके नेताओं के साथ कुछ अंडरस्टैंडिंग की होगी, लेकिन वह कहां तक रहेगी, कब तक चलेगी, इस पर विश्वास करना मुश्किल है। इसलिए यह स्थिरता कहाँ तक रहेगी इस पर देशवासियों को विश्वास नहीं है।

... (व्यवधान)

इसी के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ।

MR. SPEAKER: He is not yielding.

SHRI MOHAN RAWALE (MUMBAI SOUTH CENTRAL)

श्री मोहन रावले (मुम्बई - दक्षिण): मुम्बई शहर में जो दंगे हुए थे वे किसने कराये थे।

SHRI DATTA MEGHE (WARDHA)

श्री दत्ता मेघे (वर्धा): वह तुमने कराये थे।

SHRI MOHAN RAWALE (MUMBAI SOUTH CENTRAL)

श्री मोहन रावले : वह बिल्डर्स ने कराये थे।

SHRI DATTA MEGHE (WARDHA)

श्री दत्ता मेघे : वह दंगे आपकी शिवसेना ने कराये थे।

MR. SPEAKER: Now, Shri Somnath Chatterjee will speak.

">SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Mr. Speaker, Sir, I rise to oppose this motion as I consider this to be my patriotic duty. I have heard our Prime Minister's speech with rapt attention and I never disturbed him. I was thinking of the slogan that was used this time 'Abki Bari Atal Bihari', but what Atal Bihari, which Atal Bihari is this? Is it Atal Bihari with a guilty conscience, feeling the weight of the combination that he has formed? His speech clearly betrays the guilty conscience. He has talked of consensus, but that consensus is to surrender to his type of politics.

Sir, I do not think that the Indian political system has ever exhibited in the past a more opportunist, a more power hungry, a more brazen faced and a more dubious political combination than this which is today masquerading as alliance partners.

Mr. Speaker, Sir, our attachment or commitment to secularism and unity and integrity of the nation is not a mere slogan. Our Constitution provides for a secular, democratic Republic. Our Supreme Court has construed that secularism is one of the basic features of our Constitution to which we all swear. But this multi-religious, multi-ethnic and multi-linguistic character of our society is under severe attack today. In regard to Hindutva, about which Shri Sharad Pawar has spoken, I will not read out the manifesto of BJP again. It is based on the RSS slogan of 'one nation, one people and one culture' and to them, the minorities like Christians, Muslims and Parsis are acceptable if they follow the Indian tradition or Hindutva as they understand. We have seen the intolerance of the BJP and its supporters to other religions, other view points and other thoughts. I know, they get upset when I refer to the demolition of Babri Masjid.(Interruptions)

But what is it apart from intolerance? Only a few days before the elections were held we read about the attack on a museum of modern art in Delhi. One of the leading luminaries of the B.J.P. staged an attack because he did not like two paintings of Shri M.F. Hussain and one of the most celebrated artists of this country was beaten up. This is their spirit of tolerance for others. One of the most celebrated literatuers of this country who is a member of the Sahitya Akademi has spoken of the fate of the Bharat Bhavan in Bhopal. (Interruptions)

SHRI PRAKASH VISHWANATH PARANJPE (THANE)

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे(ठाणे): इनकी ये बात सुन-सुन कर तो हम थक गए। इन्हें सिर्फ यही बात कहनी है। (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, this is the intolerance. They are not even prepared to hear others and now to talk of a consensus sounds very hollow. Let it be very clear; we shall never make any compromise on the question of democracy and secularism in this country. We can never allow the unity and integrity of this country to be destroyed. We have already had one division of this country. (Interruptions) You do not like bhasan. What are we here for? Fisticuffs?

Sir, our country has not been strengthened. Let not a situation be created when we have another attack on the unity and integrity of our country.

Sir, we are told ad nauseam - even today the Prime Minister had referred - that the people of this country had voted for a change, for a stable Government under an able Prime Minister, where different political parties entered into an alliance even before the elections. We know the figures, we have also heard the figures and I need not repeat them. But, I believe, the time has come when this myth of pre-poll alliance has to be exploded.

I am sorry, Sir, with all my respect and unbounded veneration of our Rashtrapatiji, he seems to have also fallen into this error that there was a pre-poll alliance. Sir, after that 13 day, what I said, constitutional aberration ended, I had said in this House that I would like to see Shri Atal Bihari Vajpayee as the permanent Ex-Prime Minister of this country. But I have been proved wrong; I have been proved wrong because I wrongly assumed that Shri Atal Bihari Vajpayee had a conscience. I assumed that he was committed to certain basic values and that grievous mistake was made by me, a very humble political worker. My mistake was, I thought that the B.J.P. believed in political morality and we have been lectured on that from housetops.

Sir, we have heard from the B.J.P., from Shri Atal Bihari Vajpayee, his friends in his party and, maybe, his present cohorts also, about the danger to the country emanating from corruption. Shri Sharad Pawar has rightly reminded us how in the House we had also joined in our protest against the activities of Shri Sukh Ram. We remember how Shri Atal Bihari Vajpayee and his friends had criticised Shri Lalu Prasad Yadav. I had also, on the floor of this House, demanded his resignation. I admit that.

Sir, I remember how some of the events in Tamil Nadu had been criticised on the floor of the House. We admired the decision of Shri Lal Krishna Advani when he resigned from even the membership of this House and for his decision of not contesting the election because he was under some clout. Happily he is free from that. But that was we thought to be the morality of B.J.P. But as Shri Atal Bihari Vajpayee is only a mask, all your commitments to fight corruption are nothing but also masks. That is why, we see today another Constitutional distortion. We have found that all their commitments, all their so called moral stand, have been breached in every aspect of it, with only one object, to get power by hook or crook or on the basis of give and take as Lalooji said the other day.

Sir, alliance means coming together. For what purpose? There has to be a purpose even if you go by literal meaning. So, what was the objective? What was the common basis? It has been correctly pointed out. What was the purpose? Was there any unity of purpose on economic policy or was there unity of objectives between the B.J.P. and any of the parties? As has rightly been pointed out, then there would not have been separate manifestoes. The Samata Party, the AIADMK and the Trinamool Congress are all entitled to have their own separate manifestoes. They did. What is the foreign policy of the different parties? What is their attitude towards swadeshi? What is the attitude towards land reforms? We know nothing of it. They had no common policy at all. They had no common objective. What is the attitude of the respective parties on industry and on multinational corporations? There was no common programme, there was no common manifesto and there was no commitment to any principle or to unity of action. So, what was this alliance then? Today I am thinking of the day, 1st of September, 1997 in this House when the celebration of the Golden Jubilee Year ended with a Resolution which was passed unanimously during the Special Session. The Resolution was moved from the Chair by your distinguished predecessor, Shri P.A. Sangma. Sir, I quote a few lines:

"Having reflected upon the state of the nation with the Preamble to Constitution as the guide...

...That meaningful electoral reforms be carried out so that our Parliament and other Legislative bodies be balanced and effective instruments of democracy; and further that political life and processes be free of the adverse impact on governance of undesirable extraneous factors including criminalisation.

That continuous and pro-active efforts be launched for ensuring greater transparency, probity and accountability in public life so that the freedom, authority and dignity of the Parliament and other Legislative bodies are ensured and enhanced; that more especially, all political parties shall undertake all such steps as will attain the objective of ridding our polity of criminalisation or its influence."

One of the great leaders in this House said and I quote:

"The demon of criminalisation of politics is devouring the basic tenets of our democracy."

I am reading from the synopsis of the debate issued by the Lok Sabha.

"In order to identify and declare ineligible candidates from contesting elections, we shall have to consider every aspect of this malady and judge according to the law who is a criminal. Then, the whole house has to reach a consensus on the twin issues of criminalisation of politics and corruption in public life. Corruption is devastating our public life. The entire country is fed up because of this problem. People should not give bribes to get their work done. Ultimately, it is the duty of our leaders and administrators that such practices are dealt with a heavy hand and stringent steps should be taken to curb this menace."

Sir, thus spoke Shri Atal Bihari Vajpayee. Probably, every word has been breached today. That is why, I know that he has a guilty conscience.

Sir, the B.J.P's manifesto, if I read one sentence, says :

"B.J.P. will set an example of unimpeachable accountability and impeccable probity in public life. It will expeditiously deal with unresolved cases of corruption in which no action has been taken in the last 12 years."

Of course, they have not spoken of new cases of corruption or of their alliance partners.

Sir, shall we try to find out what is the commonality? We have to refer to this U.P. Government episode because this is a party of so-called principles and morality. Well, I do not know all the details. But who does not know of a Government consisting of deserters, those who defected from one party to several other parties? I remember the picture which came out on the T.V., and newspapers on the day Mayawatiji was ensconced in the centre with Shri Vajpayee on one side and Shri L.K. Advani on the other side in the Main Committee Room of the Parliament House Annexe announcing the great alliance and sharing of the Chief Ministership every six months -- what I had called a constitutional monstrosity. That was the first time ever when the high office of the Chief Ministership became a matter of sauda or a matter of sharing every six months. I am sure, Mayawatiji will be able to defend herself now, who is at the receiving end, because she is not supporting them.

We cannot forget Shri Sukh Ram, who was a very prominent Member of this House and a Minister. We remember, even in the room of the hon. Speaker, how he was trying to impress Shri Advani, Shri Jaswant Singh and others about his supposed innocence. But it was not acceptable to anybody.

Now, let us see what has happened in Tamil Nadu. What is the common basis? We cannot forget that Shri Vajpayee had to send a list of 240 Members. Where were these alliance Members -- 18 Members of the AIADMK, four Members of the PMK, three Members of the MDMK and one Member of the TRC? They were supposedly alliance partners, who fought together on a certain basis and it was supposedly a pre-poll alliance.

Now, the Prime Minister has not said to us as to why their names were not included in the list. He said: "Now, the ball is in the President's court. Rashtrapathiji called me, and I never staked the claim."

They could not stake the claim because they deserted you then for other saudas. How can we forget what had happened here when there were cases against the leader of that party there in Tamil Nadu?

What was their attitude towards the former Bihar Chief Minister? I am not going into the details. But how many cases are pending against the leader of the Party there in Tamil Nadu? We see in the newspapers and in the journals the list of cases. Now what is the approach? If Shri Laloo Prasad Yadav was wrong in sticking to his Chair, if a Sukh Ram was wrong then, not now, then how could this type of alliance be entered into? Today I find a host of cases. I need not read them and I do not wish to take up the time of the House. Today one of the leading national dailies says that one of the Ministers has been asked to appear in court on 6th of April or, the court will issue a non-bailable arrest warrant. I am not taking any name on the floor of the House. (Interruptions)

SHRI V. SATHIAMOORTHY (RAMANATHAPURAM): I am on a point of order.

MR. SPEAKER : What is your point of order?

SHRI V. SATHIAMOORTHY: There are cases, according to some news items in the newspapers. I am not denying it. But all cases are foisted on our Party leader and on other people. We cannot take newspaper reports as authentic. No court has proved it in any single case. All are foisted cases.

MR. SPEAKER : What is your point of order? Please sit down. Please take your seat.

SHRI V. SATHIAMOORTHY: Not one case has been proved in any court. All the cases are foisted ones.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: I have not even taken any name. I have only said that he is one of the colleagues of the hon. Prime Minister in his Cabinet now. Let us see the perfect understanding and relationship between these alliance partners. I do not know he may be somewhere, the leader of the Janata Party.

SHRI V. SATHIAMOORTHY: He is attributing motives for political decisions by the leaders.

MR. SPEAKER : Please cooperate.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: Let us see the perfect understanding and good relationship between the alliance partners.... (Interruptions)

MR. SPEAKER : You are not supposed to talk like that.

(Interruptions)

MR. SPEAKER :Please continue, Shri Somnath Chatterjee.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: The Janata Party President described himself like this. I am reading from "India Today" of 23rd March.

SHRI V. SATHIAMOORTHY: He is a senior and experienced Member. He is putting a false report.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: I am reading the report: -

"She is mentally unstable, charged her with colluding with LTTE to assassinate Rajiv Gandhi and initiated corruption cases that have dogged her since she lost power in May, 1996. On her part, she described him as a pathological liar."

What else have we seen in Tamil Nadu but a drama? We miss, particularly I miss my very good friend, Shri Jaswant Singhji in the House. He should have been here. I do not know if there is a sabotage in his election because they did not want him to be the Finance Minister.

You have got a substitute as close to him as possible. I know that Atalji is sorry. I am also very sorry. But he is very handy, useful, the Prince Charming. The articulate Prince Charming was sent there. Although he could not win over the hearts of the people of Chittorgarh, yet he could win over her heart... (Interruptions) It was a real, palace coup or a Garden Coup, Poes Garden or something, I do not know. She said for three or four days (Interruptions)

MR. SPEAKER : He is not yielding. Please take your seat.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, Shri Vajpayee and Shri Advani were accused of taking a negative attitude. Even Shri Advani was accused of mocking at her, making fun of her... (Interruptions) Although she did not want to indulge in a slanging match with Shri Hegde, she did retaliate. She said that she also had brought Shri Hegde's behaviour to the notice of Shri Vajpayee and Shri Advani. Perfect harmony! Perfect understanding!! Great personal respect for each other... (Interruptions)

She complained that the AIADMK and its allies were treated as inferior partners and second class citizens. She further said: "If this is their attitude before forming the Government, what would their attitude be after forming the Government?"

She then referred to very important issues concerning Tamil Nadu. I am not minimising the importance, the issues such as Cauvery... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please take your seat.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER : This will not go on record. I have not allowed you. Please take your seat. This is not good. This will not go on record.

(Interruptions)*

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): I agree that these are very important issues for Tamil Nadu which were raised by her. (Interruptions)

MR. SPEAKER : This is not good. Take your seat.

... (Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : The question of Cauvery, the 69 per cent reservation, raising the height, the level of the Periyar dam and the question of making Tamil as an official language were all put as conditions for her support... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please understand that you will get the time to rebut this.

... (Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : I say that these are important demands. I am telling them about this. I do not know what to do... (Interruptions) I am not objecting to them. I am supporting you. You please get those demands accepted by them... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please understand that you have got a chance to speak. At that time, you can rebut this.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : As I said, Shri Jaswant Singh went there and we were told of a happy resolution... (Interruptions)

SHRI KONIJETI ROSAIAH (NARASARAOPET): Sir, when a very senior Member is speaking, they must have some restraint. This type of interruptions from the ruling party are not good

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Shri Janardhanan, please take your seat.

... (Interruptions)

* Not recorded.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker, Sir, I have never said that those demands are unjustified. Please listen. Do not be too touchy. I know why you are touchy. I am only saying that for three, four days, the second biggest alliance partner of the BJP, the AIDMK and its allies with 18 Members, refused to send a letter of support. As Shri Sharad Pawar said: "

चिढ़ी आती है, आली है।'

Then I said, Shri Jaswant Singh did the trick. Of course, that was all inside the room. We do not know. We are humble mortals. We do not know what happened there. But then we were told, I remember, on the TV... (Interruptions)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): I am very sorry about that observation (Interruptions)

MR. SPEAKER: That will not go on record.

(Interruptions) *

SHRI K.P. MUNUSAMY (KRISHNAGIRI): He is misleading the House. He is unnecessarily talking.(Interruptions)

KUMARI MAMTA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH): This is not proper to use such words against a woman.(Interruptions)

MR. SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) *

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Whatever I have said, I withdraw that...(Interruptions)

SHRI P. RAJARETHINAM (PERAMBALUR): We do not allow him to speak(Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon. Members, if there is any objectionable sentence, I will go through the record.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please sit down. If there is anything objectionable, I will go through the record.

... (Interruptions)

* Not recorded.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : It seems, I have been misunderstood. I withdraw that...(Interruptions)

SHRI AJIT KUMAR PANJA (CALCUTTA NORTH EAST): He must withdraw that...(Interruptions)

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (DR. MURLI MANOHAR JOSHI): He should apologise...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Please cooperate with me.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: If there is anything objectionable, I will remove that from the record.

... (Interruptions)

SHRI AJIT KUMAR PANJA : Is it proper?...(Interruptions)

MR. SPEAKER: I will request the Members that if there is anything objectionable, I will remove that from the record.

... (Interruptions)

SHRI SATYA PAL JAIN : He should not use such cheap words. He should apologise...(Interruptions)

13.00 hrs.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, this is very unfair... (Interruptions)

SHRI SATYA PAL JAIN : Sir, he should withdraw those words... (Interruptions)

13.02 hrs

(At this stage, Shri K.P. Munusamy and some other hon. Members came

and sat on the floor near the Table.)

SHRI M. THIYAGARAJAN (POLLACHI): He is giving wrong information. He must apologise... (Interruptions)

SHRI P. RAJARETHINAM : Mr. Speaker, Sir, he is misleading the House. He must apologise... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 2.30 p.m.

13.03 hrs

The Lok Sabha then adjourned till thirty minutes

past Fourteen of the Clock.

14.30 hrs

The Lok Sabha re-assembled at thirty minutes past

Fourteen of the Clock.

(Mr. Speaker in the Chair)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker Sir, ...(Interruptions)

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (CALCUTTA NORTH WEST): Is he going to withdraw his words or not?

MR. SPEAKER: Please take your seat first.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : It seems many of my hon. friends on that side felt upset about what I might have said or might have meant. I wish to make it categorically clear that I never meant any disrespect to anybody, nor have I said, had in mind even, anything derogatory about anybody either within or outside the House.

It is very painful to me that after twenty-eight years I am being charged with some sort of an alleged impropriety. Without in any way admitting that I have committed any impropriety, since some of my hon. friends felt very upset, I regret if there was any misunderstanding about what I have said.

MR. SPEAKER: Please continue.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : What I was saying was that initially the AIADMK did not agree to join the Government for a few days. Thereafter they changed their mind and they expressed their intention to join the Government. What I wanted to say was that there must have been some terms and conditions on the basis of which some agreement was arrived at or there was this change of mind. That was what really I wanted to mean. We would not know this until it is disclosed. We know of the demands that were made.

I remember having seen on the television Shri Jaswant Singh, my very good friend, who, again I say unfortunately is not here, said that what has been agreed to will find a place in the National Agenda, if I am not mistaken. He also very categorically said; I believe I am quoting his words, "the past is behind us, the future is beckoning us". Therefore, we would have been very happy if the hon. Prime Minister had said what ultimately was arrived at, what was agreed to. Why I am mentioning this is because I am trying to show that this alliance is a fragile alliance and this so called pre-poll alliance is a myth. That is my contention. They would not agree. But allow me to say what I feel.

Similarly, in my State, the BJP had a seat sharing arrangement with West Bengal TMC and I congratulate them for having won so many seats. It is the people's verdict. We accept it.

I am very unhappy that Shri Tapan Sikdar has won, but I respect the people's verdict. I have congratulated him. My understanding is that he is out of the Government because of some comments that he had made - "Didigiri Nahi Chalega". This came out in the papers, nobody denied it. Therefore, it has been repeated even after the formation of the Government, if I am not mistaken. She is here, she will speak about it. There was only a seat sharing arrangement. I was in my constituency, I did not know anything except what appeared in the papers.

I read that even in her meetings the leader of the Trinamool Congress did not allow BJP flags. She did not share the platform with any BJP leaders. That is what I saw. If I am wrong, please correct me. Therefore, where is that alliance? What is the commonality of the view points or the approach or the attitude or the policies and programmes?

As a matter of fact, they contested each other at least in one constituency in West Bengal. I was trying to find out the basis of the claim that there was a so-called 'pre-poll alliance' and the distinction which is being sought to be made with the understanding between the U.F. Government and the Congress understanding after the 1996 elections. It was being said that that was a post-poll alliance or a post-poll understanding. Now, they take greater credit saying that this is a pre-poll alliance and therefore the people have voted for them.

The people have voted for which manifesto in West Bengal, in Andhra Pradesh, in Tamil Nadu and in Orissa? We do not know what the Biju Janata Dal's economic policy is, if there is any; we do not know what their education policy is, what their policy about MNCs is and what their policy about the nuclear option is. But they say that they are allies. Can seat sharing during an election be the basis of a durable alliance? This is an issue which is staring the country in the face.

Now, of course, the AIADMK has said that it will unconditionally support this Government. We saw that there was a denial that any particular Ministry was asked for. I accept it if they have denied it. I am not questioning it. There are many versions coming out in the Press but we do not find any denial.

What was said in the Press? I am referring to very responsible journals. I will not take long. Now, I quote: 'Refusal by the AIADMK leader to forward a letter of support for the BJP has upset the party's plans to form a Government at the Centre'. I remember those two or three days when television was showing Shri Atal Bihari Vajpayee not in a very happy mood, all of them sitting very glum faced, waiting for a letter to come from Tamil Nadu. That is why he was forced to go to the hon. Rashtrapati with 240 names.

We have been told then of a Tamil Nadu package, we have been told now of a West Bengal package and we have also been told of the Orissa package! We have been told that they will find a due place in the National Agenda but where are they? We have not seen them in the National Agenda. This is what I wanted to mean. There must be some hidden agendas on which they are not taking the people of the country into confidence, about which they are not telling the people. Therefore, according to me, this National Agenda is nothing but a 'national tamasha'. Where are those agreements? Mr. Prime Minister, where are those packages on the basis of which you have got their support?

14.39 hrs (Shri P.M. Sayeed in the Chair)

In this National Agenda, one aspect is very clear. As we had seen in the President's Address of 1996, they have suddenly omitted their main issues, main demands like building of a Ram Mandir at Ayodhya, abrogation of Article 370 and bringing in a Uniform Civil Code. Earlier, Shri Sharad Pawar has read it out and I need not read it out again. These issues find primacy in their manifesto. They get primacy in the BJP manifesto. But today, the National Agenda does not mention about them. There is only a very fleeting reference to corruption. They have referred to it only in the case of electoral reforms. These are very difficult subjects for them now.

Although building of a Ram Mandir is not in the National Agenda, what has been said by many of our hon. friends?

Shri Vinay Katiyar was here. He had very categorically said, "Atalji will make the mandir possible". That was his statement on 21st March. Then, "Hindutva hawks want Ram revived." Under this it is said: "The BJP high command has incurred the wrath of some MPs, chiefly sants-turned-politicians - I find quite a few here - and Ayodhya-based sadhus, who resent the party's soft line on Ayodhya and the uniform civil code." I am not reading the entire report. Therefore, there are already protests in the BJP itself on the omission of the Ram mandir issue from the national agenda. Then what is cohesiveness? The BJP itself is not cohesive. How can the Government be united?..(interruptions)..We would like to know from the Prime Minister on this point. He should tell

us and take the party people into confidence on this when he is asking for confidence vote. You cannot ask for confidence vote without disclosing your commitments to different so-called alliance partners.

I want to make it clear that I do not grudge on any special arrangements or any benefits given to any State in India. I am glad that the Prime Minister said that for a strong India, there have to be strong States. And that is our demand all along. We had quarrelled with Congress and we still quarrel with them because they feel that a strong Centre will be sufficient which does not help the development of this country. There are areas of disparities from place to place.

I cannot but comment in view of the AIADMK and its allies in Tamil Nadu being the major partners of this alliance. I am reminded of what Dr. Shyama Prasad Mukherjee had said. He said, "India, that is Bharat," that is, Tamil Nadu now. This Government's life depends on this. Sir, there are very disquieting reports that the hon. Minister of Law had already said that certain cases are falsely instituted. Within a day or two of his assumption of power, he passes judgement when the cases are pending in the courts...(interruptions)

THE MINISTER OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI M. THAMBI DURAI): I had never passed any judgement. I had made only observations. When I went to Chennai, some people approached me to enquire regarding the false cases made against my leader and some workers. Then, I said, "I will go through and find out the facts." What was wrong in that? What was the judgement that I gave? I cannot understand it.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Very well. He did not pass any judgement but made only comments...(interruptions)

SHRI M. THAMBI DURAI: I am not a judge. I made only a comment. When you are making comments, I can also make a comment...(interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri Thambi Durai, please sit down.

... (Interruptions)

SHRI M. THAMBI DURAI: I stand by my statement and what I said. It is a false case and I will prove it in the court. I have no doubt at all on this point...(interruptions)....I am not a judge to give a judgement.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : I agree and I stand corrected. The Law Minister cannot pass judgements but he has passed comments...(interruptions)

SHRI M. THAMBI DURAI: I did not interfere with the judiciary. We cannot influence our judges on any account...(interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : I have not implicated the judiciary...(interruptions)...You do not know what is in my mouth. Sir, I have only said that he has passed comments about the truth or the correctness or otherwise of certain cases...(interruptions)...Therefore, with a Government of such disparate and desperate forces, I wonder what will happen to this country.

As I said earlier, Shri Atal Bihari Vajpayee is a mask. It has been said by one of their leaders. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : No running commentary, please.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please do not do that.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I am asking him to conclude now.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : 'Sangh Parivar' has utilised Shri Vajpayee's charismatic leadership and stature. I feel that if unfortunately this Government continues and is saddled in power, apart from the common people and the country, the biggest victim will be Shri Atal Bihari Vajpayee. He does not know when the rug will be drawn from under his feet. ... (Interruptions) Then, it will be:

अब की बारी लाल बिहारी और प्रमोद बिहारी।

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): सभापति महोदय,

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : मुलायम सिंह जी एक मिनट रुकिये।

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF TOURISM (SHRI MADAN LAL KHURANA): I was told that Shri George Fernandes would now be given the opportunity to speak.

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : अच्छा रहेगा जॉर्ज साहब मेरे बाद बोलें।

...(व्यवधान)

(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Now, I have already called him.

SHRI M. THAMBI DURAI: That will be all right.

MR. CHAIRMAN: I am sorry, it is written here.

श्री मुलायम सिंह यादव आपने भी उनको धोखा दिया और उन्होंने भी आपको धोखा दिया, सबको धोखा दिया।

सभापति महोदय : इस तरह से इंटरप्रॉस होंगी तो दो-तीन आदमी भी कवर नहीं हो सकेंगे।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : उसे समझने में दिक्कत हो जायेगी कि कैसे धोखा दिया था।

सभापति महोदय : मुलायम सिंह जी, आप इधर देखिये, उधर मत देखिये।

">SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति महोदय, कुछ ऐसी बातें हैं जिनको मैं दोहराना नहीं चाहता हूँ, वे बातें माननीय नेता विरोधी दल और सोमनाथ चटर्जी साहब ने कह दी हैं। लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि भाजपा कितनी भी अफवाह फैलाइये और चाहे जितना असत्य बोलें, (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : चाहे कितना भी असत्य कहिये, अफवाहों से चुनाव में तो जीता जा सकता है, लेकिन अफवाहों के माध्यम से सरकार नहीं चलाई जा सकती (व्यवधान) साथ में हमारा समय जोड़ते जाइये, मुझे कोई दिक्कत नहीं है।

सभापति महोदय : उनके कमेंट पर आप कोई प्रतिक्रिया मत दीजिए। मैं उनसे भी कह रहा हूँ।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं भी वही बोल रहा हूँ। मैं तो अपनी बात कह रहा हूँ। जैसा अभी कहा गया कि भारतीय जनता पार्टी को जनादेश मिला

... (व्यवधान)

कितना जनादेश मिला यह ऑन रिकार्ड है। 1996 के चुनाव की तुलना में ज्यादा से ज्यादा कुल 15-16 सीटें भारतीय जनता पार्टी की बढ़ गईं और कह रहे हैं जनादेश मिल गया है। जनादेश किस बात पर मिला वह आप सबने बता ही दिया है। यह कब बदलेंगे, क्या बोलेंगे इस पर कभी कोई भरोसा नहीं कर सकते और देश की जनता अब बिलकुल समझ गई है। हम फिर दोहराना चाहते हैं कि धारा 370, राम मंदिर, समान आचार संहिता, अ पराधीकरण, स्वच्छ प्रशासन और योग्य प्रधानमंत्री, आदि-आदि नारों पर चुनाव जीता। आप योग्य हैं बाकी क्या सब नाकाबिल बैठे हैं।

सभापति महोदय, यदि इन मुद्दों पर वोट नहीं मांगा गया होता, तो आपकी पार्टी के 169 सांसदों की जगह मात्र 79 सांसद रह जाते। माननीय आडवाणी जी मेरी इस बात से सहमत होंगे, लेकिन आप सबसे मैं कहना चाहता हूँ, विशेष रूप से जार्ज साहब से तो बाद में कहूंगा कि अभी तक जितने भी इंटरव्यू आए हैं, उन सब में भाजपा नेताओं ने यही कहा है कि अभी हमारा बहुमत नहीं है। जिस दिन हमारा बहुमत हो जाएगा, यानी जिस दिन अकेली भारतीय जनता पार्टी का बहुमत होगा, उस दिन मंदिर भी बनेगा, धारा 370 भी लागू होगी और समान आचार संहिता भी लागू हो जाएगी। जार्ज साहब मैं अब आपसे कहता हूँ कि आप भी इस बात पर विचार करें। जिन जार्ज साहब को कभी हमने अपना नेता माना था, उन जार्ज साहब को अब हमें नेता मानने में कठिनाई हो रही है क्योंकि वे साम्प्रदायिकता का सहयोग कर रहे हैं।

महोदय, चुनाव से पहले भी हमने कई जगह कहा था कि भारतीय जनता पार्टी के दो चेहरे हैं, दो चुनाव घोषणापत्र हैं, एक तो वह जो चुनाव से पहले जनता के बीच में प्रचारित किया जाता है और दूसरा वह जब सत्ता में आ जाते हैं, तब दूसरा कार्यक्रम बना लेते हैं। दो सदस्यताएं हैं जिनके पीछे हमें लड़ना भी पड़ा। दो नेता हैं और दोहरा चरित्र है। माननीय प्रधानमंत्री जी, आप इस पार्टी के मुखड़ा या मुखौटा हैं। ऐसा हम नहीं कह रहे हैं बल्कि आपकी पार्टी के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हुए पदाधिकारी कह रहे हैं और एक विदेशी दूतावास में कह रहे हैं कि अटल जी हमारी पार्टी के मुखौटा हैं, असली नेता हमारे माननीय आडवाणी जी हैं, जो प्रधानमंत्री बहुत जल्दी बनने वाले हैं। आप मेरी इस बात को ध्यान रखिए, यदि आज आपको यहां बहुमत मिल गया, तो वाजपेयी जी, आप प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। असली प्रधानमंत्री जो तो आपके पास बैठे हैं, आडवाणी जी बनेंगे। (व्यवधान)

महोदय, अभी हमारे मान्यवर कुछ साथियों ने पीछे से कहा कि धोखा दिया है। कैसे बदल गए, कौन मुख्यमंत्री कब आ जाता है, कैसे, कब, कौन प्रधानमंत्री आ जाता है, यह देखने की बात है। अटल जी से हमारे पहले बहुत गहरे रिश्ते थे, लेकिन अब वे हमसे नाराज हैं। हमारे नाम लेने में भी उनको परेशानी है। इसलिए हम आपको सावधान कर रहे हैं कि चुनाव तो ये आपके नाम पर जीत गए। हम जानते हैं कि किस तरह से आपके नाम पर वोट मिले हैं, और इससे हम कोई इंकार नहीं करते हैं। इस बात को हमने सब जगह स्वीकार किया है, न केवल टी.वी. पर बल्कि जहां भी हम गए हमने यह बात कही है कि आपको अटल जी के नाम पर वोट मिला है। यह दूसरी बात है कि अटल जी के नाम पर आपको ज्यादा वोट मिल गया और मेरे नाम पर कम वोट मिला। इसलिए हम अटल जी को सावधान करना चाहते हैं और आपसे कह रहे हैं कि आप भी सावधान रहिए। असली प्रधानमंत्री आपके बगल में बैठे हैं जिनका नाम बहुत जल्दी नागपुर से आ जाएगा।

महोदय, अभी क्या हुआ, इन्होंने मंत्रिमंडल बनाया। यह मंत्रिमंडल भी इन्होंने अपने मन से नहीं बनाया। गुजराल जी ने अपने मन से और हमारे मन से मंत्रिमंडल बनाया था। लेकिन प्रधान मंत्री जी ने यह मंत्रिमंडल अपने मन से नहीं बनाया। यह बात संघ के नेता ने स्वयं कही है कि हमारे संघ के ही सारे मिनिस्टर होने चाहिए। इस समय मेरे पास वह अखबार नहीं है, नहीं तो मैं आपको पढ़कर सुनाता। माननीय जसवंत सिंह जी हमारे मित्र हैं। हम भी उनकी बहुत इज्जत करते हैं। उनको सबसे पहले वित्त मंत्री बनाए जाने की बात की गई, लेकिन संघ के लोग नहीं चाहते, इसलिए दोपहर को प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि वित्त मंत्रालय वे अपने पास रखेंगे, लेकिन रात में वित्त मंत्री बन गए जसवंत सिन्हा।

जिस सरकार का दिमाग ही स्थिर नहीं है, वह सरकार स्थिर कभी नहीं रह सकती। कैसा उनका दिमाग है। कितनी बार दिमाग बदला कि किसको वित्त मंत्रालय मिले, ए. आई.

डी.एम.के. के साथियों को कैसे मनाया जाये ताकि आगे वे नाराज न हों। हमारे कामरेड सोमनाथ चटर्जी यहां बैठे हुए हैं। उनके कहने का सेंस दूसरा नहीं था लेकिन उन्होंने उसका दूसरा अर्थ लगा लिया। फिर भी उन्होंने अपनी बात को वापस ले लिया। ये हमारी सरकार को क्या कह रहे थे। जब हम सरकार में थे और ये इधर बैठे हुए थे, उन्होंने उस समय हमारी सरकार को खिचड़ी सरकार कहा था। अब यह सरकार क्या है--यह खिचड़ा है।

... (व्यवधान)

वह बता देंगे। अगर हमारे दक्षिण के साथियों की समझ में न आ रहा हो तो उन्हें जरूर समझा दीजिए कि खिचड़ी तो पच जाती है लेकिन खिचड़ा नहीं पचता।

... (व्यवधान)

वही तो मैं कह रहा हूँ।

... (व्यवधान)

SHRI VIRENDRA SINGH (MIRZAPUR)

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): मुलायम सिंह जी, आप कहते हैं कि खिचड़ी पचती नहीं है। जो खिचड़ी पकती नहीं है, वह पचती नहीं है। आपकी खिचड़ी पकी नहीं थी इसलिए वह पची नहीं।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : यही तो मैं कह रहा हूँ कि खिचड़ी पच जाती है लेकिन खिचड़ा पचता नहीं है।

सभापति महोदय, नैतिकता का आधार होता है। नैतिकता की बड़ी चर्चा होती है। हमेशा 'नैतिकता' और 'जी', यह दो बातें हमारे भाजपा मित्र बहुत करते हैं। कितनी नैतिकता आप में है? पूरे देश में आपने क्या वायदे किये और उन वायदों के विपरीत आपने नेशनल एजेंडा में क्या लिखा है। सोमनाथ चटर्जी ने ठीक ही कहा कि यह नेशनल एजेंडा नहीं बल्कि एक तमाशा है और हमारे कई साथियों की भावना है, जिसमें सच्चाई है कि यह नेशनल एजेंडा देश विरोधी है, राष्ट्र विरोधी है। इसका उदाहरण मैं बताऊंगा कि ऐसा क्यों है। आप अखंड भारत की बात करते हैं लेकिन आप देश को कहां ले जाना चाहते हैं? किस भावनाओं को भड़काना चाहते हैं। कितनी भावना को भड़कायेंगे। यह सबसे बड़ा अनैतिक काम है। किसी भी पार्टी का चुनाव घोषणा पत्र उसका सबसे पवित्र दस्तावेज होता है। आप जनता से जो वायदा करते आये, उसे बदलकर कहते कि यह अभी हमारे इस एजेंडे में नहीं है।

सभापति महोदय, कार्यक्रम का सवाल नहीं है, सवाल मानसिकता का है। मानसिकता कहां है। मानसिकता यही है कि मंदिर भी बनायेंगे, धारा ३७० को भी खत्म करेंगे और आचार संहिता को भी लागू करेंगे। आचार संहिता पर हम ज्यादा नहीं बोलेंगे, नहीं तो परेशानी हो जायेगी। आचार संहिता की बात केवल मुसलमानों को बार-बार उकसाने के लिए होती है।

... (व्यवधान)

समान आचार संहिता बहुतों की पता चल जायेगी। केवल

मुसलमानों के लिए ही एक शादी करने की आचार संहिता लागू करने की भात कहते हैं, क्या हिन्दुओं में एक से अधिक शादी लोग नहीं कर रहे हैं। बल्कि वह कितनी-कितनी बार करते हैं।

... (व्यवधान)

मजबूरी में कहिए, हम तो पब्लिक में भी बोलेंगे। (व्यवधान)

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री अशोक प्रधान (खुर्जा): २१ तारीख को यह खेल न हुआ होता तो आप भी यहां न आए होते (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव: सभापति महोदय, आप हमारा समय देखते जाइए। उधर से जितना समय कटेगा उतना समय हम और ले लेंगे। आप हम पर यह मेहरबानी करें। दूसरी तरफ राष्ट्रीय एकता परिषद में हम भी थे। राष्ट्रीय एकता परिषद, जो देश का सर्वोच्च राजनैतिक मंच है, उसमें भी वायदा किया गया कि मस्जिद नहीं तोड़ी जायेगी। यही नहीं सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा भी दे दिया। हलफनामा देने के बाद भी मस्जिद गिराई गयी--क्या यही नैतिकता है? इनकी कथनी और करनी में भेद है और जब कथनी और करनी में भेद होता है, वह देश की सच्ची सेवा नहीं कर सकता। (व्यवधान)

15.00 hrs.

नैतिकता की बात नहीं सुनना चाहते। इनकी कथनी और करनी में भेद है। दो जीभ से बात करने वाले बड़े खतरनाक होते हैं। बुरा मत मानिए, दो जीभ से बात मत करिए, एक जबान से बोलिए। हमने एक जबान से बोला है, साम्प्रदायिकता के खिलाफ जो संकल्प लिया है उसके लिए लड़ेंगे और साम्प्रदायिकता को खत्म करेंगे। इतिहास इस बात का गवाह है कि कट्टरवादी ताकतों को हिन्दुस्तान ने कभी स्वीकार नहीं किया। लेकिन अफसोस है कि हमारे कुछ नेता, जो हमारी विचारधारा के थे, इनका सहारा लेकर उधर बैठे हैं। जार्ज साहब, मुलायम सिंह से चाहे जो कीमत ले लें लेकिन साम्प्रदायिक शक्तियों को ताकत देने का काम आपको नहीं करना चाहिए। लालू प्रसाद के साथ आपका जो कुछ भी मतभेद था, हम तो आपके थे, हमारे साथ जुड़ जाते। जार्ज साहब, मैं सच्चाई कह रहा हूँ कि आप देश में ऐतिहासिक व्यक्ति बन जाते। आप चाहे पार्लियामेंट में पहुँचते या नहीं, डिफेंस मिनिस्टर बनते या नहीं, चाहे सड़कों पर पजामा-कुर्ता पहनकर घूमते रहते लेकिन सड़कों पर हजारों-लाखों लोग आपका जिन्दाबाद बोलते।

... (व्यवधान)

डिफेंस मिनिस्टर को छोड़ दीजिए, डिफेंस मिनिस्टर तो छोटी चीज है। यदि मैं जिद कर जाता तो प्रधानमंत्री भी बन जाता। लेकिन फिरकापरस्ती के खिलाफ मैंने अपने संयुक्त मोर्चे को कमजोर नहीं किया (व्यवधान) पहले चुनाव में दोस्त बेचारी लक्ष्मी पार्वती को बनाया और अब आम सहमति का विरोध करके तेलंगु देशम से बातचीत कर रहे हैं। यह धोखाधड़ी नहीं तो क्या है।

... (व्यवधान)

इसी तरह से हरियाणा में चौधरी बंसी लाल से समझौता करके चुनाव लड़ा और अब दूसरी पार्टियों से समझौता कर रहे हैं कि हम बंसी लाल को हटा देंगे, चलो, मेरे साथ आ जाओ। यही है इनकी नैतिकता। इनकी नैतिकता यह है कि सत्ता में कैसे बने रहें। यह सत्ता का एजेंडा है, राष्ट्रीय एजेंडा नहीं है। इसलिए सोमनाथ चटर्जी ने ठीक कहा कि यह एक तमाशा है। इनमें कितनी नैतिकता है, हमारे पास उसके बहुत उदाहरण हैं।

आपने भ्रष्टाचार के नाम पर १३-१३ दिन लोक सभा नहीं चलने दी और अब सब के सब एक जगह समा गए। इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। ये तो समुद्र और गंगा दोनों हो गए। यह सच्चाई है, आप गंभीरता से विचार कीजिए। ये समुद्र भी बन गए, चाहे जो आ जाए। कोई इनके यहाँ चला जाए तो वह पवित्र हो जाएगा, जब तक इधर रहे तब तक अपवित्र मुलायम सिंह अपवित्र, जार्ज साहब बड़े अपवित्र थे और कई बड़े-बड़े अपवित्र माने जाने वाले लोग इधर गंगा में चले गए तो पवित्र हो गये, चाहे कुछ भी करके आएँ। ... (व्यवधान)कहाँ गया अपराधीकरण? मध्य प्रदेश इस बात का गवाह है। वहाँ दो ऐसे उम्मीदवार भाजपा ने खड़े किए जिनके अपराधिक इतिहास के कारण उनके पर्वे खारिज हुए थे।

... (व्यवधान)

फिर वे डमी कैन्डीडेट के रूप में लड़े।

किस अपराधीकरण की बात करते हो, किस राजनैतिक अपराधीकरण को रोकने की बात करते हो। (व्यवधान)

SHRI KANTILAL BHURIA (JHABUA)

श्री कान्तिलाल भूरिया (झाबुआ) : धार और मुरैना में धारा ३०२ के दो अपराधी थे, उनके नॉमिनेशन पेपर खारिज हो गये।

MR. CHAIRMAN : Shri Pradhani, this is not correct.

... (Interruptions)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : अब सबसे बड़ा उदाहरण देता हूँ, लेकिन एक ही उदाहरण दूंगा। उदाहरण तो सामने बहुत हैं। उत्तर प्रदेश में आज जो सरकार बनी है और जिस सरकार को बनाने का सबसे बड़ा योगदान माननीय प्रधान मंत्री जी का है, उसमें जो मंत्री बने हुए हैं, वे गम्भीर भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और अपराधी भी हैं। ऐसे-ऐसे अपराधी हैं कि जिस दिन कैबिनेट के मंत्री की शपथ ले रहे थे, उस दिन उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट थे। उसके तीन या चार दिन बाद जब इलाहाबाद हाई कोर्ट से स्ट्रे लिया गया, तब उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगी। इसलिए अपराधीकरण पर भाजपा की बात करना निरर्थक है। (व्यवधान)

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री अशोक प्रधान : संयुक्त मोर्चा की सरकार बनी, उसमें कितने ऐसे मंत्री थे।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : अभी इसी मंत्रिमंडल में, जिनपर भ्रष्टाचार के आरोप हैं, वे मंत्रिमंडल में मंत्री बना दिये। आप क्यों कहलवाना चाहते हैं, उनमें मेरे बहुत से दोस्त हैं। अब क्या कहूँ?

... (व्यवधान)

कह तो रहे हैं, आप सुनिये। हम तो कहेंगे ही, सुनिये।

... (व्यवधान)

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री अशोक प्रधान : आप अपनी स्टोरी भी खोलते जाइये।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : माननीय प्रधान मंत्री जी जब भी उत्तर दें, उस समय यह जरूर बतायें कि आपके मंत्रिमंडल में सारे के सारे लोग ऐसे हैं, जिनपर कोई भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है तो फिर छह दिन का विशेष अधिवेशन बुलाकर लोक सभा क्यों चलाई?

फिर स्वच्छ प्रशासन की बात है, ईमानदार प्रधान मंत्री, जिस प्रधान मंत्री के मंत्रिमंडल में भ्रष्टाचार के आरोपी मंत्री बने होंगे तो देश की जनता आपपर अंगुली उठाएगी। प्रधान मंत्री अगर ईमानदार होगा तो प्रधान मंत्री के मंत्रिमंडल में भी सारे लोग ईमानदार होने चाहिए। आडवाणी जी ने ठीक उदाहरण दिया था, जब उनपर भ्रष्टाचार का आरोप लगा तो उन्होंने इस्तीफा दे दिया और इस्तीफा देकर कहा कि मैं तब तक कोई सरकारी या लोक सभा में पद नहीं लूंगा, जब तक कि हमें न्यायालय निर्दोष मुक्त नहीं कर देता।

SHRI VIRENDRA SINGH (MIRZAPUR)

श्री वीरेन्द्र सिंह : उन्होंने कहा था कि पार्लियामेंट के परिसर में कदम नहीं रखूंगा।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, कहा था। उसकी मैं तारीफ ही कर रहा हूँ। हम यहीं तारीफ करेंगे। लेकिन अब प्रधान मंत्री की तारीफ हम कैसे कर दें ?

सभापति महोदय : मुलायम सिंह जी, आप उनसे बात मत कीजिए, इधर देखिये।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : क्या इसी आधार पर चलाएंगे, होम मिनिस्ट्री। उनके ऊपर है। इनका पुलिन्दा बांध देंगे। वे कमजोर नहीं हैं, वे सब का पुलिन्दा बांधेंगे और सब की फाइल बन रही होगी। हम तो प्रधानमंत्री जी को सावधान कर रहे हैं, आपकी आलोचना नहीं कर रहे। आप बुरा मत मानिये, हम आपको आने वाले खतरों से सावधान कर रहे हैं। हमारे सामने जो खतरे हैं, उनसे लड़ने के लिए हम तैयार हो गये हैं। आपका कोई बड़ा बहुमत नहीं है। आप बार-बार कहते हैं कि आपको सरकार किसने गिराई। हमारी सरकार कांग्रेस ने गिराई, जो बहुत बड़ा दल है और आपके यहाँ तो माननीय बूटा सिंह जी चाहें तो आज ही सरकार गिर जायेंगी। फिर क्या होगा ?

... (व्यवधान)

वह तो बड़ी पार्टी थी, लेकिन आज एक भी निर्दलीय अगर चाहे तो वह आपकी सरकार गिरा दे। इसलिए आप इन बातों में मत जाइये कि सरकार किसने गिराई। वह तो बड़ी पार्टी थी, उसने सरकार गिराई, लेकिन आपकी ताकत तो अभी ऐसी है आपको सरकार गिराने के लिए म. बूटा सिंह ही काफी है।

कितने अफसोस की बात है, इनका संस्कृति भी एक नारा है। आज उत्तर प्रदेश के अन्दर भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने नकल विरोधी कानून बनाया है। हम नकल के पक्षधर नहीं हैं और आपको यह भी विश्वास होना चाहिए (व्यवधान)

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री अशोक प्रधान : आपकी पार्टी के लोग धरने पर बैठे हैं, इससे ज्यादा और क्या होगा।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : इसीलिए कह रहे हैं कि हम नकल के पक्षधर नहीं हैं, नकल के विरोधी हैं। जहाँ मैं टीचर रहा हूँ, अभी तक होम एग्जामिनेशन में नकल नहीं हो रही है, हमारी ऐसी परम्पराएं डाली हुई हैं। (व्यवधान)

लेकिन जिस तरह का काला कानून उत्तर प्रदेश के अंदर बना है उसका विरोध करेंगे (व्यवधान) हल्ला भी बोलेंगे, अभी क्या हुआ है। विश्व के किसी भी सभ्य समाज और देश में शिक्षण संस्थाओं में ऐसा काला कानून लागू नहीं है, हिन्दुस्तान के भी अन्य किसी राज्य में है। १५-१६ साल के छात्र-छात्राओं को जेल भेज देंगे और वहीं उत्तर प्रदेश में अपराधी मंत्री बनेंगे।

एक माननीय सदस्य: आप पर कितने मुकदमों दर्ज हैं ?

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : आपके गृह मंत्री सदन में बैठे हुए हैं, वे बता देंगे। फिर मैं आप लोगों के भी गिना दूंगा। मैंने कोई गलत बात नहीं कही है। सभापति महोदय, इनका जवाब भी साथ-साथ देता जाऊंगा।

सभापति महोदय : यह सवाल-जवाब की बात नहीं है। आप उधर ध्यान मत दें।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं तो आपको ही देख रहा हूँ। उधर देख लिया तो और गड़बड़ हो जाएगी। ये लोग नैतिकता की, संस्कृति की बात करते हैं। भ्रष्टाचार दूर करने की बात करते हैं। लेकिन इन्होंने लोक सभा में अ पराधियों को टिकट दिया, विधान सभा में अपराधियों को टिकट दिया। यहाँ तक कि इस बात का प्रमाण है कि १९९१ से लेकर अभी तक मेरे खिलाफ इन्होंने किसी भले आदमी को चुनाव नहीं लड़ाया।

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री वीरेन्द्र सिंह : आपने मेरे खिलाफ किस भले आदमी को चुनाव लड़ाया था ? ... (व्यवधान) आपने फूलन देवी को मेरे खिलाफ चुनाव लड़ाया।

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: Why don't you sit down? He is not yielding.

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I am on my legs. You sit down. I am sorry, this is too bad.

... (व्यवधान)

सभापति महोदय: आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं, सदन की परम्पराओं को जानते हैं।

* Not recorded.

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री वीरेन्द्र सिंह : मेरा भी यहां उतना अधिकार है जितना इनका है। मेरे से सम्बन्धित बात आई तो मैंने कह दिया।

सभापति महोदय: जब एक सदस्य सदन में भाषण कर रहे हैं, जब वे ईल्ड करें, तभी आप अपनी बात उठा सकते हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय: इस तरह से हाउस नहीं चल सकेगा, अब आप बैठ जाएं, बहुत हो गया।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : मैंने इसीलिए कहा कि आप तो समाजवादी पार्टी को अपराधियों की पार्टी कहते हो, सब मैगजीनों में, दूरदर्शन में यह दिखाया जाता है कि ये मुलायम सिंह के अपराधी हैं, हम तो हैं ही अपराधी

... (व्यवधान)

लेकिन आप जो स्वच्छ छवि वाले हैं, आप अपने बारे में बताएं कि आप क्या हैं। हमारे बारे में तो बहुत कुछ आपके द्वारा कहा जाता है कि हम तो हिंदुओं के दुश्मन हैं, मुसलमानों के मित्र हैं, हम यह फख के साथ कहते हैं

... (व्यवधान)

SQN. LDR. KAMAL CHAUDHRY (HOSHIARPUR)

स्कवाडन लीडर कमल चौधरी (होशियारपुर): इन्होंने कहा कि हम अपराधी हैं, मैंने कहा कि मायावती जी से पूछो क्या हैं, जहां उनको मारने की कोशिश की गई।

सभापति महोदय: कमल जी आप बैठ जाएं।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : ... इसीलिए मैंने कहा कि हम अपराधी नहीं हैं। आप लोग हमें अपराधी कहते रहे हैं।

... (व्यवधान)

SHRI MOHAMMAD ALI ASHRAF FATMI (DARBHANGA)

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी (दरभंगा): जान से मारने की योजना बनाई थी, मायावती बोल चुकी हैं।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं कह रहा था कि सबने हमारे दलों पर भ्रष्टाचारी, अपराधी होने के आरोप लगाए। हम पर तो आरोप लगते ही रहे और आप स्वच्छ छवि वाले हैं हमने कहा कि हम अपराधी को टिकट नहीं देंगे और हमने किसी अपराधी को टिकट नहीं दिया। आपने ऑब्जेक्शन किया था। हम वीरेन्द्र सिंह जी से ज्यादा नहीं कहना चाहते।

... (व्यवधान)

आपने एतराज किया था। लेकिन इलेक्शन कमीशन ने आपके एतराज के भावजूद फूलन देवी का पर्चा सही पाया, अदालत ने सही पाया।

... (व्यवधान)

फूलनदेवी के बारे में हम इससे ज्यादा भी नहीं कहना चाहते।

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री वीरेन्द्र सिंह : इलेक्शन कमीशन के बारे में चर्चा मत करिए।...(व्यवधान) इलेक्शन कमीशन की यहां चर्चा मत करिए।

... (व्यवधान)

SHRI Z.M. KAHANDOLE (MALEGAON)

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : वह मजबूर औरत है। फूलन देवी के ऊपर बड़ा जुल्म हुआ।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Md. Ali Asharaf Fatmi, why you are getting up? Shri Mulayam Singh Yadav is capable enough to defend himself.

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : आम सहमति देख लीजिए।

... (व्यवधान)

ये आम सहमति की बात कर रहे हैं। जिन्होंने हमेशा टकराव की राजनीति की है, वह कैसे आम सहमति पर आ जाएंगे। कहां से आम सहमति लाओगे? १९७७ में एमरजेंसी के दौरान जेल में रहकर, इतनी तकलीफें सहने के बाद, हम लोगों ने सरकार बनाई। इस दोहरी सदस्यता के नाम पर ऐसा टकराव किया जिसकी वजह से १९७७ की बहुमत की सरकार भी हम लोग नहीं चला पाए। हमेशा टकराव किया। १९९० में जब हम मुख्य मंत्री बने तो लाखों लोगों को अयोध्या में ले जाने की क्या जरूरत थी? यह टकराव किसने पैदा किया? मस्जिद गिराकर देश के अंदर टकराव किसने पैदा किया? मुम्बई, सूरत, भोपाल, कानपुर, बनारस, जहां दंगा, हत्याएं, लूटपाट और इतने घृणित काम हुए कि मुम्बई में आज बहुत से परिवार अपने बच्चों को गोदी में लेकर बेबस इधर-उधर घूम रहे हैं। यह टकराव किसने पैदा किया? समाज के अंदर, देश के अंदर, हर स्तर पर टकराव पैदा किया गया। अभी परसों ही आपने टकराव पैदा कर दिया था। अध्यक्ष जी चुने गए, बधाई है, लेकिन अगर देश को मजबूत करना था तो संगमा साहब, जो उत्तर पूर्वी इलाके के हैं, अगर वह अध्यक्ष रहते तो सीमाओं से लगे हुए लोगों को यह फल होता कि हमारे क्षेत्र का एक व्यक्ति हिन्दुस्तान के सर्वोच्च पद पर है।

... (व्यवधान)

आप कहां आम सहमति की बात करते हैं।

... (व्यवधान)

संगमा साहब चुने गए थे, उस समय हमने आम सहमति दिखा दी थी और उन्हें आम सहमति से अध्यक्ष बनाया था।

... (व्यवधान)

हम आपकी नीयत के बारे में कह रहे हैं। आप आम सहमति की बात करते हैं लेकिन हमेशा टकराव करते हैं। यहां दो जुवान से मत बोलिए, एक जुवान से बोलिए।

सभापति महोदय : आपका समय समाप्त हो गया।

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : आपने मुझे इतना ही समय दिया है?

... (व्यवधान)

थोड़े समय में मैं अपनी बात पूरी कर दूंगा।

सभापति महोदय: आपका समय पन्द्रह मिनट था। सोलह मिनट आपने ले लिए हैं।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : पारदर्शिता की बात बहुत अच्छी लगती है। अगर पारदर्शिता है तो हमें माननीय प्रधान मंत्री जी अपने उत्तर में बताएं कि संघ परिवार के आप सदस्य हैं या नहीं? पारदर्शिता कहां से आ जाएगी? पारदर्शिता संघ परिवार में कहां है? आप यह बताएं कि क्या संघ परिवार से आपका रिश्ता है, क्या आप संघ परिवार के मेम्बर हैं? हम पारदर्शिता के बारे में और संघ परिवार के बारे में विस्तार से किसी मोके पर सदन में अपनी बात कहेंगे और आपसे भी सुनना चाहेंगे।

में ज्यादा नहीं कहूंगा। मंत्रिमंडल बनाते समय सहयोगी दलों के सहयोग की बात कही गई। आप यह बतायें, क्या कहीं पर भी यह कहा गया है कि गठबंधन की सरकार है? कहा जा रहा है कि यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। जब हमारी सरकार थी, तब हमने कहा था कि यह संयुक्त मोर्चे की सरकार है। जॉर्ज साहब यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, अभी तक भी यह आपके दल की सरकार नहीं है। इस प्रकार की बात अखबारों

में भी कही गयी है।

... (व्यवधान)

में भारतीय भाषाओं की तरक्की का पक्षधर हूँ। देश में हर भाषा की तरक्की हो, तमिल भाषा की तरक्की है, गुरुमुखी की तरक्की हो, मलयालम भाषा की तरक्की हो, कन्नड़ भाषा की तरक्की हो और चाहे बंगला हो, पंजाबी हो, असमिया हो उर्दू हो - सारी भाषाओं की तरक्की का मैं पक्षधर हूँ। आप यह बतायें कि आपका हिन्दी प्रेम कहाँ चला गया? हिन्दी से प्रेम है, तो अंग्रेजी को हटाओ। अंग्रेजी को हटाने के बारे में एक शब्द भी कहा? आजादी के समय हम लोग जेलों में गए हैं, पिटे हैं। सारी क्षेत्रीय भाषाओं की तरक्की होनी चाहिए। मैंने मुख्यमंत्री होकर आठ भाषाओं को पढ़ाने का काम किया, लेकिन अंग्रेजी का मोह बना हुआ है और आडवाणी जी आप भारतीयता की बात कहते हैं। आपका राष्ट्रीय कार्यक्रम, राष्ट्रीय एजेंडा विदेशी भावना और विदेशी मानसिकता से भरा हुआ है।

एक माननीय सदस्य: सोमनाथ जी का क्या होगा?

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): हम तैयार कर लेंगे।

मैं किसानों की बात करता हूँ। पूरे उत्तर प्रदेश का ही नहीं, बल्कि पूरे हिन्दुस्तान का किसान बरबाद है। कहीं पर तूफान है और कहीं पर समुद्री तूफान है। ओले हैं आपने कहा था कि पहले ही दिन आप कोई ऐसा काम करेंगे कि वह चमत्कारी काम

होगा। छः महीने के अन्दर ऐसा काम करेंगे, जिससे देश की जनता महसूस करेगी कि सरकार काम कर रही है। मैं पूछता हूँ, कौन सा ऐसा काम हुआ है? इतने घन्टे हो गए हैं, लेकिन अभी तक कोई चमत्कारी काम नहीं हुआ है, कब करेंगे? कि अभी तक किसानों को पर्याप्त मदद भी नहीं मिली

... (व्यवधान)

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR (MUMBAI NORTH-WEST)

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : छः महीने की बात है।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): छः महीने की तो अलग बात है।

महोदय, हम जानना चाहते हैं

..... (व्यवधान)

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना: प्रधान मंत्री जी का भाषण ११.४० बजे खत्म हुआ। ११.४० बजे से लेकर अब १५.२५ बज रहे हैं। माननीय सदस्य वहीं से ही बोल रहे हैं। ढाई घन्टे का समय उन्हीं को मिल रहा है।

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : जहाँ तक रक्षा का सवाल है, प्रधान मंत्री जी आपने बयान दिए हैं कि हम एटम बम बनायेंगे। मुझे जॉर्ज साहब से कुछ नहीं कहना है, लेकिन आप पहले तेरह दिन प्रधान मंत्री रह चुके हैं। आपको सब पता है! हम भी रक्षा मंत्री रहे हैं और आप भी प्रधान मंत्री रह चुके थे, क्या आपको इस बारे में पता नहीं था, लेकिन इसके बावजूद भी देश में अनावश्यक चर्चा कर रहे हैं तथा जनता को भ्रमित कर रहे हैं कि परमाणु शक्ति बनायेंगे, आश्चर्य कि आपको तेरह दिन में पता नहीं लगा। यह एक संवेदनशील मामला है। इसके बावजूद कहना कि परमाणु शक्ति बनायेंगे, कहां तक उचित है? हमारी सरकार ने कहा था कि परमाणु शक्ति के बारे में हमारे विचार खुले हुए हैं। इसलिए जो आपने कहा, उसमें कौन सी नई बात है?

इस देश की रक्षा को मजबूत करने के लिए आधुनिक हथियारों का हम लोगों ने जो कार्यक्रम चलाया, अगर उसी को आपने लागू कर दिया तो उससे ही देश की सैन्य शक्ति बहुत मजबूत हो जाएगी फिर ज्यादा बोलने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय, विश्वासमत के पक्ष में जो मतदान करेगा वह हमारे हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के महा सेनानियों के विरोध में वोट होगा, गरीबों के खिलाफ वोट होगा, भ्रष्टाचार के समर्थन में वोट होगा और यह वोट अल्पसंख्यकों के विरोध में होगा। छात्रों के विरोध में होगा तथा अनैतिकता और भ्रष्टाचार के पक्ष में वोट होगा। आज जिस शानदार हिन्दुस्तान के अंदर हम सभी को जोड़ना चाहते हैं, जोड़ने के बाद इस देश को मजबूत करना

चाहते हैं और हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब को एक रखना चाहते हैं। आप जो मुसलमानों के बारे में शक करते हैं, मुसलमान कौम इस देश की शानदार कौम है। इन्हें जब भी देश के समक्ष आजादी की लड़ाई से लेकर आजतक खतरा उठाने का अवसर आया है तो उन्होंने मुकाबला किया है। मुझे मुसलमान कौम पर फक र है। (व्यवधान) आप इन पर शक मत करो। अगर इन पर शक करोगे तो खतरा पैदा होः

२

जाएगा और अगर प्यार, मोहब्बत से देखोगे तो देश मजबूत होगा तथा देश के लिए कुर्बानी करने हेतु मुसलमान सदैव तैयार रहेगा।

सभापति महोदय, इसी के साथ-साथ हम यह कहना चाहते हैं और आपको याद दिलाना चाहते हैं कि आप १९३० और १९३१ का इतिहास पढ़ें।

... (व्यवधान)

राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा करके हिटलर आया था। यही समाजवाद का नारा देकर आया था।

... (व्यवधान)

आज हम जार्ज साहब और बरनाला साहब से साफ कहना चाहते हैं कि आपको आगे आने वाली पीढ़ी माफ नहीं करेगी। हिटलर ने जिस तरीके से सत्ता अपनाई थी। इसी तरह संसद का सहारा लेकर

... (व्यवधान)

आज ये फिरकापरस्ती ताकतें हिन्दुस्तान की सत्ता पर काबिज होना चाहती हैं लेकिन इन नाजीवादी मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया जायेगा। इसलिए हम आपको इससे सावधान करना चाहते हैं। इसी के साथ मैं इस प्रस्तुत प्रस्ताव का विरोध करता हूँ।

">

रक्षा मंत्री (श्री जार्ज फर्नांडीज): सभापति महोदय, इसी सदन में १९९६ में आए विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ था और आज यहां फिर एक बार इस सदन में आए विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। आज यह मौका नहीं आता अगर कांग्रेस पार्टी संयुक्त मोर्चे की सरकार को हटा कर देश को चुनाव के मैदान में न धकेलती।

अभी हमने नेता विरोधी दल का भाषण सुना। उन्होंने इस नयी सरकार को किस परिस्थिति में लाने में मदद की, इस पर कुछ नहीं कहा। लेकिन सोमनाथ बाबू ने अपनी बातें यहां पर रखीं और उन्होंने इस सरकार पर अपने गुस्से को काफी दिखाया। मेरे हाथ में यहां पर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का २२ फरवरी का, उनका जो अपना साप्ताहिक 'पीपल्स डेमोक्रेसी' निकलता है, उसका अंक है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री श्री हरकिशन सिंह सुरजीत का, उनकी अपनी पार्टी की ओर से और संयुक्त मोर्चे की ओर से टेलीविजन पर दिया हुआ भाषण है। चुनाव के पहले हर दल को टेलीविजन पर बोलने का मौका मिला था, उसी अवसर पर दिया हुआ यह भाषण है। उसका दूसरा वाक्य है-

"This unnecessary election has been thrust on the people of India by the Congress Party which brought down the United Front Government for no valid reason at all. The Congress cited the Jain Commission Report and its totally baseless charge against the D.M.K. and the people of Tamil Nadu."

सोमनाथ बाबू और शरद पवार जी दोनों गौर से सुनें।

"The real game of the Congress whose leaders cannot exist without power, was to blackmail the United Front and join the Government. But all the constituents of the United Front stood firm."

लगता है कि अब आपकी फर्मनेस खत्म हो गयी और फिर आप ढिलाई में आ गये हैं। बगल में बैठकर वही बातें आप भी कहने लगे जो बातें उन्होंने यहां पर कहीं। मैं मानता हूँ कि संयुक्त मोर्चे के जो भी लोग इस सदन में मौजूद हैं वे उनकी बातों को नहीं मानेंगे। लेकिन सबसे बढ़कर कांग्रेस पार्टी की उनकी इस टिप्पणी पर क्या राय है, उसे हम चाहते हैं कि देश सुने। यह राय उनके अपने घोषणा-पत्र में लिखी है। भारतीय जनता पार्टी का घोषणा-पत्र आपने अपने हाथों में लिया था अब अपना घोषणा पत्र भी अपने हाथों में लीजिए - यह मेरी आपसे प्रार्थना है। उसके चार नम्बर के पन्ने से शुरू कीजिए। आप भारतीय जनता पार्टी का घोषणा-पत्र नहीं कांग्रेस का घोषणा-पत्र लीजिए। संयुक्त मोर्चे की सरकार को गिराने के कांग्रेस पार्टी ने सात कारण दिये हैं। पहला कारण है -

"The United Front failed to live up to its own Common Minimum Programme."

यानी आप वचन-भंग के दोषी हैं, आपने वचन-भंग किया है। आगे कहा है -

"What was worse was that the United Front spared no effort and lost no opportunity to damage the Congress even while continuing to enjoy with Congress support."

यानी उनका इस्तेमाल आप लोगों ने किया। नम्बर तीन पर है -

"The United Front's commitment to secularism was put to test in Uttar Pradesh but the United Front failed to establish its secular credentials."

कैसे? कांग्रेस ने वहां मांग की कि बी.एस.पी., कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा एक होकर उन ताकतों से लड़े जो कम्यूनल ताकतें हैं लेकिन आप लोगों ने नहीं माना जिससे उत्तर प्रदेश में और पूरे देश में आपने कम्यूनल ताकतों को बढ़ा दिया है। यह संयुक्त मोर्चा पर कांग्रेस का अपने घोषणा-पत्र में आरोप है। आगे जाकर वे बताते हैं कि -

"The United Front constituents had made common cause with the BJP in the past in their pursuit of anti-Congressism."

यानी सीधे आपके ऊपर आरोप है कि आपमें और हममें कोई फर्क नहीं है। इसलिए बहुत परेशान होकर आप लोगों को बोलने की जरूरत नहीं है। वे आगे कहते हैं कि

"It wanted the Congress to fight communal forces alone while it continued to enjoy power with the support of Congress."

यह आप लोगों की नीयत के ऊपर हमला है - सोमनाथ बाबू आपके ऊपर भी क्योंकि आप लोग उस सरकार को चला रहे थे और आप सभी लोग जो यहां पर बैठे हैं। यह आप सब लोगों की नीयत पर प्रश्न-चिन्ह है। फिर वे कहते हैं कि आप लोगों ने कांग्रेस को तोड़ने की कोशिश की -

"In April, 1996, the Congress asked the United Front to change its leadership, since it had built up firm evidence that the agencies of the Government were being used blatantly to subvert the Congress."

यह सारा उनके कहने के अनुसार सच है।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : That is there view.

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : एक ही हो सकता है - या तो यह सच है या यह गलत है। यह व्यू नहीं है, यह सीधे आपके ऊपर आरोप है। (व्यवधान)

EEEEEEEEEE ... (Interruptions)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH): Is it relevant to today's Vote of Confidence?(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri George Fernandes, are you yielding to him?

SHRI S. JAIPAL REDDY (MAHABUBNAGAR): Mr. Chairman, Sir, we do not necessarily agree with the Congress Party. Let Shri George Fernandes speak something about himself.(Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : It is their manifesto and not mine. (Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : यह उनकी अपनी राय है। (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please be seated. Please resume your seat.

एक माननीय सदस्य : आप सोशलिस्ट हैं या नहीं, हमें इस सवाल का

जवाब चाहिए।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing is going on record.

(Interruptions) *

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सभापति महोदय, सच बहुत बुरा लगता है और हमेशा तीखा लगता है। सच को स्वीकार करने में बहुत परेशानी होती है। इसलिए मैं अपने लायक दोस्त जयपाल रेड्डी जी की परेशानी को समझ सकता हूँ। बात यहां खत्म नहीं होती। इससे बढ़ कर डी.एम.के. के ऊपर आरोप है, जिन का बचाव करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ। वह कहते हैं कि आपने जैन कमीशन की रिपोर्ट को यहां पेश करने से रोका। वह आगे जाकर कहते

"This report has exhaustively dealt with the role of a section of the DMK party and of the then Tamil Nadu Government headed by Shri Karunanidhi in aiding and abetting the LTTE organisation. The LTTE could not have killed Rajiv Gandhi without the support and assistance it received from the DMK led Government and a section of the DMK leadership."

It further says : "How could the Congress continue to support the United Front Government, a constituent of which is held by a Commission of Inquiry to be the abetter of an agency that killed the Congress president, a former Congress Prime Minister and a future Congress Prime Minister?"

डी.एम.के. के मित्र यहां बैठे हैं। आप लोगों की इनके बारे में यह राय है। आप उनका समर्थन लेकर चाहते हैं किसी भी रूप में हम सरकार

में पहुंच जाएं। (

Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES: No, I am not. That is the point I am making. That is precisely the point I am making.

SHRI GEORGE FERNANDES: You are in a very bad and dangerous company. That is what I am saying(Interruptions)

में इस बात को मानता हूँ कि जयपाल रेड्डी जी ने जो बात कही, उसको यूनाइटेड फ्रंट की पार्टियाँ नहीं मानेंगी क्योंकि वह उनकी अपनी राय है। उस राय पर जाने से पहले मैं शरद पवार जी की उस बात पर जाऊंगा कि वह जितने दलों को साथ लेकर चलने की बात मानते हैं, उनके बीच में क्या वैचारिक एकमत है?

... (व्यवधान)

बहुत है।

... (व्यवधान)

इसलिए इन दोनों के बीच में कितना सामंजस्य है, कितना नजदीकीपन है, मैं उसको भी बताऊंगा। सोमनाथ बाबू, आपके दिल के बारे में उनकी राय है

... (व्यवधान)

"As for the Left parties, even after seven decades, the CPI and the CPI(M) have not been able to integrate themselves into the national mainstream. They are still out of it. Their national importance has been dwindling."

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : He is agreeing with all that which I am not agreeing to. So, what is the good of putting it on me?

SHRI GEORGE FERNANDES: No, I am not. I am trying to save you. I am trying to rescue you from them.(Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : He should speak on the Confidence Motion.

....(Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES: Shri Somnath Chatterjee, it is important because they are claiming your vote as their vote. That 55 per cent includes all of you.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : We are not saying this.(Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES: They claim it.(Interruptions)

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR): Shri Sharad Pawar was saying about the secular vote against the BJP.(Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES: It further says:

"Their national importance has been dwindling and today their presence is confined to only three States, West Bengal, Kerala and Tripura. For the past 20 years, the Left Front continues to be in power in West Bengal even though the Congress has continued to enjoy 40 per cent of the popular vote."

कहां है ममता जी?

The Trinamul Congress has now very successfully reduced it to 16 per cent. (Interruptions)

Sir, I quote again and it says:

"The Left Front has simply ruined West Bengal. That was one of the premier industrial States in the country prior to 1977. Most industries are sick and obsolete. New investment is a trickle."

हमारे दोस्त मुलायम सिंह जी ने तो यहां पर दो जबान की बात कही।

This document further says:

"Double-speak is characteristic of the CPI(M) and the Marxists. It opposes all sensible economic policies in Parliament, but its State Governments try to attract new businesses from abroad and other parts of India...

Lack of infrastructure towards road connectivity, non-responsive administration and overwhelming influence of partisan interests is holding back investors from investing in these three States." (Interruptions)

यह बहुत ज़रूरी है चूंकि आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि कौन जमात के साथ आप वोट लेकर आते हो, एक दूसरे का सहारा ले रहे हो, एक दूसरे को सहारा दे रहे हो।

... (व्यवधान)

SHRI R.L. JALAPPA (CHIKBALLAPUR): Mr. Chairman, Sir, let him speak on the Motion of Confidence.

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सभापति जी, जहां इनकी राय उनके बारे में यह है, वहां ज़रा उनकी राय भी सुनें।

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA)

श्री वसुदेव आचार्य (बांकुरा) : अपनी राय बताइए।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : यह मैनफेस्टो है आपका और आप अपने मैनफेस्टो में कह रहे हैं सेक्मूलरिज़म के बारे में

... (व्यवधान)

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर : आपकी राय बीजेपी के बारे में क्या रही है वह बताइए।

MR. CHAIRMAN : He is not yielding. Shri Tariq Anwar, he is not yielding. Please take your seat.

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH)

श्री सत्यपाल जैन : वह भी बताएं, आप बैठिये।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : बहुत तकलीफ होती है !

अध्यक्ष जी, अब मार्क्सवादी क्या बोलते हैं ? ये बोलते हैं कांग्रेस के बारे में इतने ही तीखेपन से और इनका सेक्मूलरिज़म भी देख लीजिए कांग्रेस के बारे में।

Their document says:

"The Congress Party has degenerated both politically and organisationally. It is a party in decline as it has pursued, when in power, economic policies which militate against the people. It betrayed the secular heritage by compromising with communal parties and it is a party riddled with corruption. It is this dismal record of the Congress which led to its resounding defeat in the 1996 election....

Its attitude since then shows no redemption. The Congress is no more a party which can govern at the Centre or provide the country with a national agenda." (Interruptions)

मैं जानता हूँ आपने राय बदली है। अब आप उनकी सरकार में जाने के लिए तैयार हैं।

हम जानते हैं आपके नेताओं ने यह बात कही है। अब इन दोनों के बीच में बात हो गई। अब जो हमारे जनता दल के दोस्त हैं, संयुक्त मोर्चा के दोस्त हैं, इनके बारे में इनकी क्या राय है।

"The Janata Dal was born in a convulsive fit of anti-Congressism in 1989. It is a collection of desperate groups and embittered individuals driven by egos. It can hardly be called a serious political formation. Like an ameba it lives on splitting itself into smaller and smaller groups. Its platform of social justice is a hollow."

रामविलास जी यह कहा गया है -

"It is just a misleading power for the practice of divisive caste politics. The leadership of the Janata Dal in the United Front under two Prime Ministers has been disastrous."

दोनों इस समय दिखाई नहीं दे रहे हैं।

It further says:

"The economy had been ruined."

वे कह रहे हैं हम नहीं कह रहे हैं।

That is what we have inherited and the hon. Finance Minister has to now repair it. It adds:

"There has been no real governance. All matters have been allowed to drift."

यह आपके बारे में उनकी राय है। मगर इनकी क्या राय है

... (व्यवधान)

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL)

श्री मुलायम सिंह यादव : आप कुछ और बोलिये, यह तो अटल जी के लिए छोड़िये, आपका भाषण दूसरा होना चाहिए।

सभापति महोदय : यह क्या हो रहा है, आप दोनों आपस में बात कर रहे हैं।

SHRI GEORGE FERNANDES: What is their opinion about you. I quote:

"The Congress Party in its present state of decay and disarray is in no position to even claim to provide a stable Government. Its anti-people policies, its compromising attitude with communal forces and the corruption scandals involving many of its leaders."... (Interruptions)

आप इतना बोलते रहे हैं, यह आपकी पार्टी और आपका मोर्चा इनके बारे में कह रहा है।

SHRI C.K. JAFFER SHARIEF (BANGALORE NORTH): Shri Fernandes, when you are speaking on the Vote of Confidence, it should be your endeavour to speak positive and not take the negative points of others... (Interruptions)

KUMARI MAMTA BANERJEE : They asked us to reply to this question.

SHRI GEORGE FERNANDES: Sir, we are very positive. Our programme is here with me. It is a very positive programme - the National Agenda. It was mentioned in the Address of the President. We will come to that. In fact, all of you should be happy with it.

यह संयुक्त मोर्चा के बारे में हो गया, जनता दल ने अपने घोषणा पत्र में कुछ अच्छी बातें लिखी हैं, वे भी सदन के रिकार्ड पर आना जरूरी हैं।

They say:

"Corruption in India has reached alarming levels. Among those who are on the mat today for corruption include some of those who held the highest positions in the country."

नाम नहीं लिया है, अच्छा किया है।

"Some of them in their drive to become Indian Marcos"... (Interruptions)

मारकोस कौन है, मारकोस वह है जिसने फिलीपीन्स का खजाना लूटा था।

It further adds:

"In their drive to become Indian Marcos they chose to enlist the collaboration of even foreign commission agents to defraud the Indian treasury from the highest seat of power."

"Though some political leaders vainly tried to explain away corruption as an international phenomenon and a personal matter, no civilised society can survive for as long as such a cancer is in its body politic, a parasitical approach pursued at all levels of administration and a new tendency to defraud the public exchequer even from the highest seat of power and pile up deposits at secret bank accounts abroad."

अब सबके सामने साफ है।

MR. CHAIRMAN : Please be seated.

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज: सही बात कही है। मैंने इन दो तीन दस्तावेजों को इसलिए पढ़ा क्योंकि यह जरूरी था। एक तो जब बहस चलती रहेगी,

... (व्यवधान)

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर : जरा बी.जे.पी. का भी घोषणापत्र पढ़िए।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज: वह न केवल हम पढ़ चुके हैं बल्कि उसी के आधार पर हमने यह प्रोग्राम भी बनाया है।

... (व्यवधान)

SHRI KANTILAL BHURIA (JHABUA)

श्री कांति लाल भूरिया : आप भारतीय जनता पार्टी का भी घोषणापत्र पढ़कर सुनाएं।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज: अगर किसी ने यह बात नहीं सुनी हो, तो अब सुन लें क्योंकि यह बहुत जरूरी होता है कि कुछ बातें सब लोग सुनें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कांग्रेस ने तेलुगू देशम के बारे में क्या कहा, तेलुगू देशम को लेकर आपको बहुत गुस्सा है, उसके ऊपर आप बहुत नाराज हैं।

"The Telugu Desam Party in Andhra Pradesh, the Assom Gana Parishad in Assam and the Shiromani Akali Dal in Punjab cannot play any meaningful role in national politics."

दूसरा वाक्य, और यह बहुत खतरनाक वाक्य है।

"In the event of a conflict between national and regional or local interests, regional parties will choose the latter to the detriment of India as we know it and as we cherish it.

बहुत खतरनाक बातें हैं। इसलिए आप कह रहे हैं और अकाली दल, तेलुगू देशम, असम गण परिषद की राष्ट्रभक्ति पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। यही अर्थ है इसका, इसके अलावा इसका और कोई अर्थ नहीं है। हम तो राष्ट्रीय पार्टी हैं, रीजनल पार्टी नहीं हैं। इसलिए हमने यह सोचा कि आज इन बातों को आप सुन लें, समझ लें और जब भी निर्णय करने का वक्त आए, तब हम सब मिलकर निर्णय लें।

अध्यक्ष जी, इस बहस को दरम्यान कई बातें छिड़ गई हैं विशेषकर नेता विरोधी दल ने अपनी स्वदेशी सोच के बारे में बातें कही हैं। जब स्वदेशी की बात आती है, तो दुनियाभर के लोग घबड़ा जाते हैं और यहां बैठे लोग भी समझते हैं कि देश के विकास में रुकावट आ जाएगी। अभी नेता विरोधी दल ने गांधी जी का नाम लिया और गांधी जी के स्वदेशी अपनाओ का अर्थ उन्होंने यह बताया कि गांधी जी ने यह नहीं कहा कि विदेशी चीजों को रोकना चाहिए। मेरे विचार में शरद जी, आपको गांधी जी को फिर से पढ़ना चाहिए क्योंकि गांधी जी ने कहा था कि जब आप कोई काम करना चाहते हैं, तो आपको उस गरीब का चेहरा ध्यान में लाना चाहिए जिसको आपने देखा हो और यह सोचना चाहिए कि हमारे इस काम से उस गरीब को फायदा होगा या नुकसान। यदि आपके कार्य या निर्णय से उस गरीब व्यक्ति को नुकसान पहुंचता है, तो वह नीति देश के हित में नहीं होगी। आपको अपनी नीति या निर्णय उस गरीब से गरीब व्यक्ति के चेहरे को सामने रखकर बनानी होगी। हमारा वही प्रयास है। हमारा स्वदेशी का मतलब राष्ट्र भक्ति है, और कुछ नहीं। जिस व्यक्ति में राष्ट्र भक्ति नहीं है, समझो वह व्यक्ति इस देश में कुछ नहीं कर पाएगा।

शरद पवार जी ५० साल हो गए हमारे देश की आजादी को और इस वर्ष तो हम अपनी आजादी की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं। अगर गैर-कांग्रेसी सरकारें उन्हें कहें, तो दो ही रहें और कुल मिलाकर सिर्फ तीन साल रहें। वे सरकारें मोरारजी देसाई और विश्वनाथ प्रताप सिंह की थीं और तीन सरकारें ऐसी रहीं जिनको गैर-कांग्रेसी कहें, लेकिन वे आपके समर्थन से रहीं और यह कहकर रहीं कि वे आपकी नीतियों पर अमल करेंगी और आपने उनसे वह संकल्प करवा लिया था।

४५ साल आप ही का राज रहा। एक नहीं, दो नहीं, तीसरी पीढ़ी पर आप लोग जा रहे हो। आप लोगों ने

UR

इस देश को ४५ साल तक चलाया है। अगर आज देश यहां पर है, तो उसकी जिम्मेदारी किसकी है, यह आपको नहीं मालूम। आप जाकर देखिये, झुग्गी

में चलिये।

... (व्यवधान)

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर(कटिहार): आज देश आगे बढ़ा है।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Please be seated. Shri Tariq Anwar, please be seated.

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर : आप आंकड़े देखिये।

... (व्यवधान)

जार्ज साहब आप तो आंकड़ों की बात करते हैं।

... (व्यवधान)

आप आंकड़े बताइये।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES: I am not yielding.... (Interruptions)

सभापति महोदय : इस तरह से नहीं हो सकता।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिये।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नांडीज :सभापति जी, उन्हें मैं बताऊंगा कि देश कहां है। ... (व्यवधान) आजादी के ५० साल

... (व्यवधान)

DR. MAHANT CHARAN DAS (JANJIR): I am on a point of order.

MR. CHAIRMAN : Under what rule have you the point of order? Where is the rule? There is no response.

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डोज: सभापति जी, मैं बताने जा रहा था लेकिन जब चिल्लाकर पूछा गया कि कहां है, तो मुझे कहना पड़ा। जिनको मालूम नहीं है कि देश की आर्थिक स्थिति क्या है, उनके लिए मैं अलग से अध्ययन चलाने के लिए तैयार हूँ। मैं उनकी पढ़ाई के लिए अपना समय देने के लिए तैयार हूँ। यह मेरे पास है।

National Council for Applied Economic Research Report

है।

जिससे बढ़कर हिन्दुस्तान में और कोई खोज संस्था नहीं है। यह वर्ष १९९४ के अंत की इसकी रिपोर्ट है जिसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को जानने के लिए इसे बनाया गया था कि हिन्दुस्तान की क्या आर्थिक स्थिति है? वह रिपोर्ट कहती है कि हिन्दुस्तान में ५८ प्रतिशत हिन्दुस्तानी यानी ५२ करोड़ लोग १० रुपया या उससे कम पर अपना दिन गुजारा करते हैं। इसका आगे अर्थ यह है कि २६ करोड़ लोग इस देश में, आज के दिन, ५ रुपये या उससे कम प्रतिदिन आमदनी पर जी रहे हैं, १३ करोड़ लोग २ रुपए ५० पैसे या उससे कम प्रतिदिन आमदनी पर जी रहे हैं, तथा साढ़े ६ करोड़ लोग १ रुपए २५ पैसे या उससे कम प्रतिदिन आमदनी पर जी रहे हैं। अगर ऐसा हिन्दुस्तान आपको बनाना है तो फिर यह अनिवार्य हो जाता है कि इस देश के लोग इन समस्याओं का निदान करने वाली आर्थिक नीतियों को बनायें और हम वही काम करना चाहते हैं।

हम विदेशी पूंजी हिन्दुस्तान में आने के विरोधी नहीं हैं। मैं वर्ष १९७७ में देश का उद्योग मंत्री था। विदेशी पूंजी हिन्दुस्तान में उस समय भी आई थी और मैंने हस्ताक्षर करके उन्हें आने की इजाजत दी थी। यहां प्रश्न पूंजी का नहीं है, प्रश्न इस देश की जरूरतों की पूर्ति का है और जब अपनी नीति स्वदेशी कहकर गर्व करते हैं तो उसके साथ यह बात भी जुड़ी हुई है कि हिन्दुस्तान के लोगों की बुनियादी सेवाओं को हल करने के लिए कोई नीति हो। हम चाहेंगे कि हमारे मित्र, विपक्ष के नेता इस बात का हमेशा ख्याल रखें।

16.00 hrs.

इन्होंने देश की सुरक्षा से जुड़ी हुई दूसरी बात छोड़ी। हमने २३ मार्च को डा. लोहिया के जन्म दिवस पर कौन्सिलटयूशन क्लब में जो भाषण दिया था, उसका उल्लेख इन्होंने किया। हमने क्या कहा? हमने उस नीति में कहा कि हिन्दुस्तान में पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकार बनी है। इसके पहले जिसे हम गैर-कांग्रेसी सरकार बोलते थे, वह कहीं न कहीं कांग्रेस थी। हिन्दुस्तान में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली यह पहली गैर-कांग्रेसी सरकार है।

... (व्यवधान)

वैसे हिन्दुस्तान में जिनकी उम्र ५० साल से अधिक है, उनमें से अनेक लोग ऐसे हैं जो कांग्रेस से आए हैं और आते रहेंगे।

... (व्यवधान)

किसी दिन आप भी आ सकते हैं।

... (व्यवधान)

इतने विश्वास से मत बोलिए, आ सकते हैं।

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर : मैं ऐसी बेवकूफी नहीं करता।

... (व्यवधान)

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डोज : सभापति महोदय, मैं इस सदन में कभी किसी को नहीं टोकता। लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे लोग टोकते रहते हैं।

मैंने उस समय यह कहा कि देश में जिस गैर-कांग्रेसवाद की चर्चा होती रही, वह गैर-कांग्रेसवाद कैसे आया। डा. लोहिया ने १९६२ के सितम्बर-अक्टूबर के महीने में चीनी आक्रमण के बाद एक बात कही थी कि राष्ट्रीयकरण की सरकार है, इसका सामना करने के लिए सब एक हो जाएं। हमने उसका उल्लेख किया और उस संदर्भ में मैंने अपने देश की जमीन की चर्चा की। मैंने कहा कि १५ अगस्त, १९४७ को हिन्दुस्तान की जो सीमा थी, वह आज नहीं है। आज हमारी जमीन औरों के हाथों में है। मैंने यह कहा, हमारी सरकार को यह कोशिश होगी कि बातचीत करके इन समस्याओं को हल करे। लेकिन मैं नहीं जानता था कि यदि मैं अपने देश की जमीन के बारे में बोलूंगा तो शरद पवार जी को परेशानी होगी। मेरे लिए सरकार में रहने का महत्व नहीं है।

... (व्यवधान)

इस देश की धरती का ज्यादा महत्व है, इस देश को बनाए रखने का ज्यादा महत्व है। इसलिए हमने जो बातें कहीं, उन बातों से कम शरद पवार जी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आप भी देश के रक्षा मंत्री रहे हैं। यदि मैं यह बात कहूँ कि आपको इस देश की सीमाओं की कोई फिक्र ही नहीं थी तो आप क्या सोचेंगे, आपके मन में क्या भाव आएगा। यदि मैं इस देश की सीमाओं के बारे में सोचता हूँ तो आपको आपत्ति हो जाती है। हम समझ नहीं सकते कि हम यह बहस कहां ले जा रहे हैं। इसलिए जहां तक हमारी सीमाओं का सवाल है, हम इस देश की सुरक्षा के संदर्भ में उन सीमाओं की समस्या का निदान चाहते हैं। हम अपनी सीमाओं के ऊपर विशेष निगरानी रखना चाहते हैं और इसमें किसी को परेशान होने की, विशेषकर कांग्रेस को परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है।

इसी के साथ राष्ट्रपति का सवाल भी आता है। मैं इसलिए भी चाहता हूँ कि इस देश की आजादी के बाद का इतिहास हम बोलते रहे, कहते रहे ताकि नई पीढ़ी उसे समझ ले, जान ले कि देश कहां है, देश की समस्याएं क्या हैं, सुरक्षा के मामले क्या हैं। हम यह भी चाहते हैं कि वे हमारे पुरखों द्वारा की गई लड़ाई को पहचान लें। इसलिए इन मुद्दों पर हम बोलकर रहेंगे और हम चाहेंगे कि आप परेशान न हों।

भ्रष्टाचार का सवाल उठा। भ्रष्टाचार पर आप दोनों के बीच की जो राय है, आप सबकी आपस में जो राय है, वह हमने रखी और मैं सरकार के बारे में इतना ही कहूँ कि राष्ट्रपति जी ने परसों जो भाषण दिया, उसका यही एक वाक्य आपको सब कुछ बताता है।

"The Government proposes to make all those who hold public office accountable by enacting the Lok Pal Bill. The Official Secrets Act will be reviewed so that we can put in place a right to information law that will enable transparency and integrity in decision making without compromising national security."

तो इसलिए आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यह सरकार ध्रष्टाचार पर कहीं भी किसी से भी किसी भी प्रकार का सौदा नहीं करेगी। जहां तक कानून के अमल का सवाल है, वहां सौदा नहीं करेगी।

अब मैं आखिरी मुद्दे पर आता हूँ। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा और वह मुद्दा सैकुलरिज्म का है। इस प्रश्न पर मैं पिछले एक असें से लोगों को कह रहा हूँ कि बहस चलाओ, लेकिन कोई बहस चलाने के लिए तैयार नहीं है। आप कह रहे हैं कि ये नॉन सैकुलर हैं, ये कह रहे हैं कि आप नॉन सैकुलर हैं, आप दोनों मिलकर कह रहे हैं कि हम नहीं हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि क्या सैकुलर है और क्या नॉन सैकुलर है। सोमनाथ बाबू से मैं पूछना चाहता हूँ, अगर आपकी पार्टी को यह राय है कि कांग्रेस पार्टी नॉन सैकुलर है, जो आप बार-बार अपने दस्तावेजों में कहते हैं, फिर उन लोगों के साथ कैसे सरकार बनाते हो?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR)

श्री सोमनाथ चटर्जी : कहां बनाई?

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : कहां नहीं, आपके बगैर वह सरकार कैसे बनती है, वे कैसे प्रधान मंत्री हो जाते। आपके बगैर कैसे प्रधान मंत्री बने रहते? न देवेगौड़ा साहब बने रहते, न गुजराल साहब बने रहते।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: You remember, the BJP and we supported the V.P. Singh Government from outside. Why? It was because we wanted Shri V.P. Singh to form a Government. The BJP also supported it. Of course, they let them down very badly.

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सोमनाथ बाबू, आपके बगैर न संयुक्त मोर्चा की देवेगौड़ा साहब की सरकार बनती, न गुजराल साहब की सरकार बनती और कांग्रेस के समर्थन से वह सरकार बनी और आपका बार-बार कहना है कि ये नॉन सैकुलर हैं तो इसलिए मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या डिबेट है?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Does that make you secular? Does that make them secular?

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : हम सैकुलर करके सब लोग कह रहे हैं, लेकिन हम अपनी पार्टी के बारे में, हम अपने कार्यक्रम के बारे में आपको बताना चाहते हैं कि हमारा सैकुलरिज्म कहां है और हम इस मुद्दे पर कहां हैं। हम चाहेंगे कि आप जरा हमारे कार्यक्रम को पढ़कर

... (व्यवधान)

इसको समझ लीजिए। इसके पढ़ना जरूरी है।

"We are committed to establishing a civilised, humane and just civil order that which does not discriminate on grounds of caste, religion, class, colour, race or sex. We will truly and genuinely uphold the practice to save secularism consistent with the Indian tradition of "

सर्व पंथ समादर'

equal respect for all faiths and on the basis of equality for all. We are committed to the economic and educational development of the minorities and will take effective steps in this regard."

जी हां, यह हम लोगों का, बी.जे.पी. का

... (व्यवधान)

जरा सुनिये तो। यह बी.जे.पी. का, समता पार्टी का, ए.आई.ए.डी.एम.के. का, हम सब का कार्यक्रम है और यह कार्यक्रम

... (व्यवधान)

इस साल का जो हम लोगों का कार्यक्रम है, राष्ट्रपति के अभिभाषण में जो निकला है, वह भी सुनिये।

"Secularism is integral to India's traditions. My Government is committed to unequivocally committed to upholding our secular values."

मैं नहीं समझ पा रहा हूँ, इसलिए यह बात नहीं समझता हूँ कि जिस दिन यह कार्यक्रम प्रकाशित हुआ,

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR (AKOLA): Shri George Fernandes, will you yield for a minute?

SHRI GEORGE FERNANDES: No, I would not.

जिस दिन यह कार्यक्रम प्रकाशित हुआ, उस दिन कांग्रेस के प्रवक्ता ने एक बात कही और आज मुझे आश्चर्य हुआ कि वही बातें विपक्ष के दोनों महान नेताओं ने यहां दोहराईं।

कि बी.जे.पी. ने गद्दारी की, इन्होंने यह शब्द इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन इनके प्रवक्ता ने किया। जब यह कहा जाता है कि हमारा न्यूनतम कार्यक्रम है, जिसमें विवादास्पद मुद्दे नहीं हैं, तो उसका स्वागत करना चाहिए। अगर दिल साफ है तो धर्मनिरपेक्षता के बारे में आप स्वागत करते, जबकि यह कहा गया कि तुमने गद्दारी की। आज यहां भी मजाक हो गया। कोई भली चीज देश में हो जाती है आपको सोच के अनुसार तो ठीक है, लेकिन हमारे द्वारा अगर कोई चीज देश के लिए ठीक हो जाती है तो उसका स्वागत करने के बजाए आप उसे टोकने लगते हैं, उसका मजाक उड़ाने लगते हैं और ताना मारा जाता है। यह भी कहा जाता है कि यह सेक्युलरिज्म है! यह शब्दों की लड़ाई नहीं है, इनकी तो सत्ता की लड़ाई है। इनका धर्मनिरपेक्षता से कोई लेना-देना नहीं है। ये सब जुड़ जाते हैं एक ही बात पर, और वह है सत्ता। मेरा कोई विरोध नहीं है, जुड़ जाएं।

सभापति महोदय : अब आप समाप्त कीजिए।

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नांडीज: मैं समाप्त कर रहा हूँ। लेकिन इस बहस को खत्म करें कि जहां पर शब्द को लेकर आप लड़ते हो, वह ठीक नहीं है। अब हिन्दुत्व शब्द आया, तो आपको लत्काल गुस्सा आ जाता है। मुझे डर लगता है कि किसी दिन आप यह भी कहेंगे कि हिन्दुस्तान शब्द भी खत्म होना चाहिए। इस देश का नाम हिन्दुस्तान है, भारतवर्ष भी है। गांधी जी ने जीवन भर हिन्दुस्तान कहा। आपको इससे शर्म आती है तो मैं इस पर क्या कहूँ। सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा। अगर हिन्दुस्तान के वासी हिन्दुस्तान की बात कहें, हमारी सभ्यता की बात कहें तो आपको परेशानी हो जाती है, हम समझ नहीं पाते हैं।

SHRI R.S. GAVAI (AMRAVATI)

श्री आर.एस. गवाई (अमरावती): संविधान में क्या लिखा है ?

सभापति महोदय: मि. गवाई आप बैठ जाएं।

SHRI GEORGE FERNANDES (NALANDA)

श्री जार्ज फर्नांडीज: इसलिए शब्दों की लड़ाई मत लड़ें, मुद्दों की लड़ाई लड़ें। लोगों ने आपको वहां बैठने के लिए कहा है, मेरी प्रार्थना है कि आप वहां पर बैठे रहिए, विरोध करिए, राजनीतिक विरोध करिए। लेकिन जो प्रस्ताव अटल जी की ओर से इस सदन में आया है उसे पारित करके इस देश में एक मजबूत सरकार को अगले पांच साल तक चलाने के लिए या कार्यक्रम के आधार पर आप सब अपना सहयोग दीजिए।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

">

">

कुमारी ममता बनर्जी : सभापति जी, मैं आपको आभारी हूँ कि आपने मुझे विश्वास मत के प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया। हम लोग तृण मूल कांग्रेस से आम जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहां पर विपक्ष की ओर से दो नेताओं ने और सी.पी.आई.(एम) के लीडर की ओर से चर्चा की गई। उनके द्वारा मेरे ऊपर और जार्ज जी के ऊपर अंगुली उठाई गई। मैं उस पर दो-चार बातें कहना चाहूंगी। लेकिन उनको कहने से पहले मैं अपना भाषण एक शेर से शुरू करना चाहती हूँ।

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है

वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।

आज हम लोगों की आइडेंटिटी के बारे में प्रश्न किया गया। अगर किसी को हमारे बारे में जानकारी चाहिए तो हम लोग जानकारी देने के लिए तैयार हैं। हाल ही में हम लोगों ने चुनाव में भाग लिया। हम लोग बी.जे.पी. के साथ एलाइंस नहीं थे, लेकिन हमारे साथ उनका सीटों का बंटवारा हुआ था। हम लोगों को कांग्रेस से निकाल दिया गया था, तो हम लोगों ने एक नया छोटा सा दल बनाया था।

एक महीने के अंदर हम लोग जब चुनाव में गए तो हमें कहा गया कि यह लोक सभा का चुनाव हो रहा है, जांत-पांत का चुनाव हो रहा है-- दुख की बात है। जब बंगाल में गए तो वह स्टेट जहां कभी जांत-पांत नहीं होता था, दुख की बात है, शर्म की बात है। वहां जाकर कहा कि तुम लोग कम्युनल हो, तुम लोग बी.जे.पी. का एलाइंस हो गए हो, जो हम लोग नहीं थे।

... हमारे बारे में क्या-क्या कहा गया था ? ... (व्यवधान)

उसका रिफ्लाइं भी देंगे। थोड़ा इन्तजार करिए।

... (व्यवधान)

पेपर में लिखा था कि सी.पी.एम. पार्टी को बी.जे.पी. से नौ करोड़ रुपया मिला था। अगर एक पैसा भी हम लोगों ने लिया हो तो बी.जे.पी. को बोलना चाहिए। एक पैसा भी हम लोगों ने नहीं लिया।

... (व्यवधान)

अगर लिया हो तो बी.जे.पी. को बोलना चाहिए.

... (व्यवधान)

थोड़े दिन के बाद हम लोगों के खिलाफ एकता की थी। ... (व्यवधान) मैंने किसी की स्पीच में इंटरफियर नहीं किया था, कोई कमेंट नहीं किया है, मेरा बोलने का अधिकार है।

... (व्यवधान)

हम लोगों ने देश में क्या देखा? ... (व्यवधान) मैंने बहुत ध्यान से सुना है, किसने क्या-क्या कहा है, मैंने लिखा है। हम लोगों पर ऊंगली उठाई गई है, इसलिए जवाब देना मेरा कर्तव्य है।

दुख की बात है कि लोक सभा के चुनाव में कोई रोजी-रोटी, स्टैबल गवर्नमेंट और इकॉनॉमिक स्टेबिलिटी जैसा कोई इश्यू नहीं रहा। केवल एक ही इश्यू रहा कि हिन्दू और मुसलमानों को विभाजित कर दो। हिन्दू और मुसलमान के टुकड़े कर दो। हम लोग टुकड़े करना नहीं चाहते थे, हम लोग जोड़ना चाहते हैं, इसीलिए हम लोग इधर आए हैं। अगर मैंने एक भी कोई गलत इल्जाम लगाया है और वह साबित हो जाए तो मैं मेम्बरशिप छोड़ दूंगा। मैं जो कुछ कह रही हूँ, कांफिडेंस से कह रही हूँ क्योंकि हमारे पास सबूत हैं। मैं पर्सनल अटैक नहीं कर रही हूँ। जब 'टाडा' के लिए लड़ाई हुई थी, अपोजीशन के लीडर नहीं हैं, मैं महाराष्ट्र सरकार की बड़ी आभारी हूँ, जब सुनील दत्त जी मुझे मिले तो उन्होंने बताया कि मेरे लड़के का केस आर्मस एक्ट में होना चाहिए, लेकिन बिडिक्टिव होकर इन लोगों ने मेरे लड़के को 'टाडा' में फंसा दिया। मैंने कहा कि आप रिपोर्ट दिखाइए। मैंने रिपोर्ट देखी। महाराष्ट्र सरकार ने रिपोर्ट भेजी है। संजय दत्त का केस आर्मस एक्ट का केस होना चाहिए लेकिन इन लोगों ने कंसीडर नहीं किया।

Sunil Dutt is a secular man of this country. It is a matter of shame that his son is being unnecessarily harassed. Why is it so? May I ask this question to all the leaders who were in State Government? I raised this issue so many times.

अगर हम लोगों को कम्युनल कहते हैं।

... (व्यवधान)

चुनाव क्षेत्र में जाकर कहा गया कि हम लोग कुरान जला देंगे। मैं कुरान पढ़ती हूँ। जैसे कुरान पढ़ते हैं, वैसे हम लोग दुआ भी करते हैं। यह हमारा धर्म है। हमारा धर्म कम्युनलिज्म नहीं है। ... (व्यवधान) आप लोगों को यह जानकारी होनी चाहिए।

... (व्यवधान)

इलेक्शन में क्या नहीं कहा गया। हम सबको हॉर्स-ट्रेडिंग करने वाला कहा गया है। चुनाव मीटिंग में कहा गया कि हम लोग ४२० हैं। क्या मैं ४२० हूँ? मैंने आम जनता को बोला था कि ठीक है, अगर मैं ४२० हूँ, मैं तो मंत्री पद तक छोड़कर चली गई थी, लेकिन जो बीस वर्ष से चीफ मिनिस्टर हैं, उनका कितना नम्बर बनता है?

आप बैलेट में दे दीजिए, हमें नहीं चाहिए। दुख की बात है कि हम लोगों को काउन्टिंग बूथ में भी नहीं जाने दिया गया। कहा गया कि वह रजिस्टर्ड पार्टी है, घुसने नहीं देंगे। यह सही बात है कि हम लोगों की रीजनल पार्टी है। यह बात भी सच है कि कांग्रेस और सीपीएम ने मिल कर चुनाव लड़ा। मैं तारिक जी आपको नहीं बोल रही हूँ, आपके स्टेट यूनिट को बोल रही हूँ। आपको पता है कि सीताराम केसरी जी के साथ आप अकेले रह गये हैं। मैं इसीलिए बोल रही हूँ कि कांग्रेस और सीपीएम ने एक साथ इलेक्शन लड़ा है। ट्रायंगुलर फाइट करके और भीख मांग कर हम लोगों ने जीतने की कोशिश की है। वहां पर बहुत गुंडागर्दी चली है। बंगाल में गुंडागर्दी चलती है।

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: बंगाल के इलेक्शन पर डिबेट हो रही है?

... (व्यवधान)

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH)

कुमारी ममता बनर्जी : आप यूपी के बारे में बात कह सकते हैं, बिहार के बारे में बात कह सकते हैं, तमिलनाडु के बारे में बात कह सकते हैं, तो मैं क्या बंगाल के बारे में बात नहीं कह सकती हूँ।

... (व्यवधान)

महोदय, परसों ही प्रधान मंत्री महोदय ने नेचुरल कैलेमिटीज को देखने के लिए एक टीम भेजी। यह हमारा ड्यूटी नहीं है, स्टेट गवर्नमेंट का ड्यूटी है

It is the duty of the State Government to inform the hon. Prime Minister about what happened in the State. We are sorry for the disaster. The hon. Prime Minister has been kind enough. I rang up the hon. Prime Minister on receiving information about the disaster and asked him to send a team to the spot. He agreed to send a team to the spot. We went to the spot along with the Minister of State in the Ministry of Agriculture, Shri Som Pal. He is not here right now.

वहां हम लोगों ने देखा कि पीने का पानी नहीं है। इन लोगों ने झगड़ा किया कि वहां मुझे क्यों भेजा गया है। मैंने वाक-आउट भी किया, लेकिन ये लोग तो नेचुरल कैलेमिटीज पर भी पोलिटिक्स करते हैं। प्राइम मिनिस्टर ने इन्द्रजीत गुप्त जी को भी कहा था, लेकिन उनकी प्रार एण्डमेंट थी, वे नहीं जा सके और उसमें उड़ीसा के एमपी भी गए। मैंने कहा कि मैं जरूर जाऊंगा। हम लोग बंगाल में गए और उड़ीसा में गए, लेकिन वहां पर पीने का

पानी तक भी नहीं था।

The Ramakrishna Mission went there for relief work. They did not allow them to provide relief to the poor people other than this is about West Bengal. But what about Orissa? The Government of Orissa was present there. The Chief Minister of Orissa went to the spot. They have arranged everything. Now, what has the Chief Minister of West Bengal done? He has done nothing. Instead, even for a glass of water, they insulted the Minister and I request the hon. Prime Minister to take action against that District Magistrate in Orissa. When Shri Som Pal asked the District Magistrate of Midnapur Distt. to tell us the number of bodies that they had rescued the number of people they had admitted in the hospital and the number of people missing, they said that they did not have any information with them. This was the way in which the Government of West Bengal was functioning. (Interruptions)

Is it not the duty of the Chief Minister to visit the spot? It is the duty of the Chief Minister to visit the spot. But we are unfortunate enough that the Chief Minister of Orissa went there but the Chief Minister of West Bengal did not. The BJP have not asked for support from us but we are giving it ourselves.

हम लोगों ने जनता की परेशानी को देखा है। यहां एक साल छः महीने में तीन सरकारें बनीं हैं।

जब देवगोड़ा की सरकार आई तो उसको गिरा दिया। मैंने अपोज किया था कि यह ठीक नहीं है, एक इन्डिपेंडेंट अल इशु पर सरकार गिराना ठीक नहीं है।

I raised this matter at that time also. You also must be remembering it now.

जब गुजराल जी की सरकार थी तो उस समय भी किसी बात को लेकर यह हुआ कि जब तक

डीएमके वाले रहेंगे तब तक सरकार नहीं चलेगी। तब ढाई दिन तक हाऊस नहीं चला तो मैं नो-कांफिडेंस मोशन ले आई थी। मैं यह जानना चाहती थी कि राजीव गांधी जी का खूनी कौन है। लेकिन इन लोगों ने इस्तीफा देकर, हाऊस को साइनाडाइ करके सब एडजस्ट कर लिया। हम इसको जानना चाहते हैं, इसको जानने का मेरा अधिकार है। इंदिरा गांधी जी का मर्डर करने वाला कौन है? ठक्कर कमिशन रिपोर्ट सबमिट की जाए, हम लोग जानना चाहते हैं। हम लोग जैन कमिशन के बारे में जानना चाहते हैं।

Who are responsible for that?

हम लोग वोहरा कमिशन के बारे में जानना चाहते हैं।

The full Report of the Vohra Committee has not yet been submitted. We know that it was reported in the Press. There are many politicians who have got link with the underworld and underground elements. There are some politicians who have nexus with the anti-social elements. So, the people have got the right to know as to who are these people. Please submit the full Report of the Vohra Committee.

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA): Sir, I would like to bring one fact to the notice of Kumari Mamta Banerjee that the Report of the Vohra Committee has been laid on the floor of the House in detail. Now, you are in the Government. You can go through it. Everything has been placed on the Table of the House and it is on record. Nothing has been hidden from the nation.

KUMARI MAMTA BANERJEE : I am asking for the record. ... (Interruptions) Shri Rajesh Pilot, I may be wrong. But this is for my information. What we have seen is a small Report. We have not seen the full Report. Their names were not mentioned in that Report. I am asking for the names. I would like to know the names of the culprits. I would like to know as to who are those politicians who have links with the underworld who are doing mischief in this country. We want to know that.

आम जनता ने डेढ़ वर्ष तक देख लिया। प्याज का भाव २५ रुपए हो गया, आलू का भाव सात रुपए हो गया। ऐसी सरकार चल रही थी जिस सरकार को पता ही नहीं था। यह तो सरकार को पता होना चाहिए था, जो आम जनता के हित में काम करे। एक साल में दो बार डीजल का प्राइस बढ़ा, लेकिन कोई आदमी सुनने के लिए नहीं था, कोई भी इसको देखने के लिए नहीं था। इसलिए आज हमारे देश की आम जनता क्या चाहती है, वह एक स्टेबल गवर्नमेंट चाहती है। अगर आप लोग इसको तमाशा कहते हैं तो हम आपको शान से कहते हैं कि यह तमाशा नहीं है, यह जनता का भरोसा है। इसलिए हम लोगों ने आम जनता से पूछा कि हमको क्या करना चाहिए। यह आम जनता की राय है कि आप अटल बिहारी वाजपेयी जी को सपोर्ट दीजिए। यही स्टेबल गवर्नमेंट बना सकते हैं, और कोई नहीं बना सकता है। ये लोग बनाने के मूड में नहीं हैं। इसीलिए मैं कहना चाहती हूँ-

‘रोशनी चांद से होती है, सितारों से नहीं।

मोहब्बत काम से होती है बातों-बातों से नहीं।’

सभापति महोदय, हम लोगों के खिलाफ में बहुत सारी बातें कही गईं कि हम लोग क्यों सपोर्ट करते हैं। हम लोग सपोर्ट करते हैं-

This was in our manifesto. We had mentioned that we would take care of the interests of those who would take care of our interests. We are following our manifesto. If there is anything wrong let them point it out.

They, especially the CPI(M) Party projected Shri Jyoti Basu as their Prime Ministerial candidate. Sir, you will be happy to know that even in his constituency we got lead. We got lead in the constituencies of 36 Ministers.

Within one month, two Mayors from Calcutta Corporation and Howrah Corporation had been defeated. This is not our fault. This is the blessing of the people on us.

हमने जनता से पूछा कि ज्योतिबसु प्रधान मंत्री बनें या अटल बिहारी वाजपेयी प्रधान मंत्री बनें।

... (व्यवधान)

जब आप लोगों ने पूछा है तो क्या मैं प्रश्न का जवाब नहीं दूंगी।

... (व्यवधान)

They asked me to reply to the question and that is why I am replying...(interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri Harin Pathak, I will come to you.

... (Interruptions)

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH)

कुमारी ममता बनर्जी : उनका धर्म-निरपेक्षता के बारे में कोई कमिटेमेंट नहीं है, कोई प्रिन्सिपल नहीं है।

जब चुनाव होता है तब बताते हैं कि कौन हिंदू है, कौन मुस्लिम है, लेकिन उनकी रोजगारी के लिए, पीने के पानी के लिए, उनकी नौकरी के लिए कभी आपने नहीं सोचा। कभी आपने नहीं देखा है कि उनका दिल कैसे धड़कता है? लीडर बनने के बाद आप मुस्लिम कम्युनिटी को भूल जाते हैं। लेकिन हम लोग कहते हैं कि 'जब तक सूरज-चांद रहेगा, तब तक माइनोरिटीज को इज्जत बना रहेगा'। यही हमारी कामयाबी होगी।

This is our fundamental right and that is why, instead of secularism, we have put it as genuine secularism. You may kindly see paragraph 7 of page 2 of President's Address. It says: "Secularism is integral to India's traditions. My Government is unequivocally committed to upholding our secular values." What we need today is dynamic secularism. Dynamic secularism means we should not exploit Muslims only for vote politics but we should extend our full support to that community so that they will come out from the disaster. We want to build up the community and integrate them. We do not want to disturb them.

इन लोगों ने हमारे खिलाफ जब इतना कहा, तब हम लोगों ने सोच लिया है कि गठबंधन में रहेंगे। आप लोगों को गठबंधन में भरोसा नहीं है लेकिन हम लोगों को भरोसा है। आप तो मिलीजुली बात करते हैं। यह ठीक है कि हम लोग छोटी पार्टी से हैं, लेकिन रीजन-रीजन करके ही तो सेंटर बनता है। स्टेट-स्टेट मिलाकर ही तो सेंटर बनता है। सरकारिया कमीशन ने भी कहा है कि -

If the State is strong, then the Centre is strong. Let us strengthen small parties also. The combination is with the national parties or the State parties. What is the harm in it? Why are you so jealous? Do not be jealous.

आपको ईर्ष्यालू नहीं होना चाहिए। सोमनाथ जी, आपने एक बात कही है कि बी.जे.पी. के किसी मेम्बर ने कहा है कि दीदीगिरी नहीं चलेगी। हमको मालूम है कि दादागिरी चलती है, दीदीगिरी नहीं चलती है। हां, अगर आप लोग महिलाओं की इज्जत नहीं रख सकते हैं तो दीदीगिरी चलेगी।

... (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR)

श्री सोमनाथ चटर्जी : तपन सिकदर को मंत्री नहीं बनाया।

KUMARI MAMTA BANERJEE : Then, you are pleading for Shri Tapan Sikdar. You are pleading. You have taken the plead.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR)

श्री सोमनाथ चटर्जी : तपन सिकदर तो मंत्री नहीं बना।

KUMARI MAMTA BANERJEE : Are you pleading for him?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : I have said that I am unhappy that he has won but I respect the verdict of the people.

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH)

कुमारी ममता बनर्जी : जब हम लोगों का दिल दुखाया।

... (व्यवधान)

मैं क्यों बी.जे.पी. में हुआ?

We have a separate manifesto but our commitment is to the people and we will continue to extend our support to this Government. We are not going to see that the Government is toppled. We want to see that this Government continues for full five years and that this Government should be stable economically,

internationally, nationally and you can add all sorts of stability. That is why, we are extending our support to it.

ज्योतिबसु के प्रधान मंत्री न बनने का इन्हें दुःख हुआ। पहले सरकार का रिमोट कंट्रोल हरकिशन सिंह सुरजीत था। इसके बाद आप लोगों ने सोचा कि ज्योतिबसु आयेगा, लेकिन वह नहीं हुआ। हम लोगों ने भी दिखा दिया कि आप लोग जो हिंदू-मुस्लिम को दो भागों में बांटना चाहते थे, वह नहीं हुआ। मैंने पहले भी चुनाव लड़ा है और यह मेरी फोर्थ-टर्म है।

This is my fourth term here. Why I am saying this is because you are a senior Member, Sir.

You are a very senior Member from Lakshadweep. First, my margin was 20,000 votes. Then, I won by a margin of 95,000 votes. Thereafter, it was 1,03,000 votes. Now, the figure is about '2,25,000'.

हमें ३५ परसेंट वोट मिले हैं। वे सीट एडजस्टमेंट के कारण नहीं मिले हैं। कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया जो कि एक नेशनल पार्टी है, उसके वोटों का परसेंटेज कम हो गया है। हमारी रजिस्टर्ड पार्टी है लेकिन इसका अभी रिकॉग्नीशन नहीं हुआ है, हम अपनी पार्टी का सिम्बल आपको दे सकते हैं, पूरे हिन्दुस्तान में दे सकते हैं।

... (व्यवधान)

मैं दो-चार विनती करना चाहती हूँ।

The so-called secularism or communalism have to be stopped in the interests of the nation. Please consider ourselves as human beings or a family of this nation.

It is a fact that the BJP is not the single largest party for absolute majority.

क्या यह बात सच नहीं है कि लोगों के वोट रिफ्लैक्टड होते हैं? जब रीगिंग होती है तो क्या लोगों की ओपीनियन ठीक ढंग से रिफ्लैक्ट होती है? अगर हमारे यहां रीगिंग नहीं होती तो हम २२ सीटें जीत कर यहां पहुंच जाते।

My request is that you should strengthen the Election Commission. As and when the elections take place, they should be held without any misuse of power by the State Government. The Election Commission should handle the election process. Please bring forward the electoral reforms Bill as early as possible.

Regarding judicial reforms, today, the country is lagging behind. Thousands of cases are pending in the courts. The people are frustrated.

Regarding corruption, the Lokpal is all right. But what about corruption? You said that you would take all sorts of steps against corruption.

जो चीफ मिनिस्टर और पॉलिटिकल लीडर्स बाहर जाते हैं, उनके बारे में गवर्नमेंट के पास कोई जानकारी नहीं है। यह एन.आर.आई. इनवैस्टमेंट के नाम पर धोखा देकर करोड़ों रुपए बनाते हैं और फॉरेन एक्सचेंज का वॉयलेशन करते हैं। हमारे यहां के चीफ मिनिस्टर पिछले २० सालों में ३० बार फॉरेन टूर पर गए। जब मिदनापुर में नेचुरल कैलेमिटीज आती है तो उन्हें वहां जाने का समय नहीं मिलता। अगर हम लोग वहां जाते हैं तो ये कहते हैं कि बी.जे.पी. के साथ प्रेम करना बहुत अच्छा लगता है। क्या वे उस समय अनटचेबल नहीं होते? जब लैफ्ट फ्रंट के मेरे दोस्त फ्लाइट में मेरे और बी.जे.पी.के साथ जा रहे थे तो मैंने उनसे पूछा कि आप उनके साथ कैसे जा रहे हैं? इस पर कहने लगे कि यह डिफेंसिव है। जब हमने बी.जे.पी की सरकार को सपोर्ट किया तो वह ऑफेंसिव हो गया। यह डबल स्टैंडर्ड नहीं चलेगा। महिलाओं के लिए ३३ परसेंट रिजर्वेशन का बिल यहां पास होना चाहिए। इसके अलावा सीआर.पी.सी. अमैंडमेंट बिल, लोकपाल बिल पास होना चाहिए। वोहरा कमीशन की रिपोर्ट पर कार्यवाही होनी चाहिए। इलैक्ट्रोल रिफार्मस और जूडिशियल रिफार्मस होने चाहिए। अनएम्पलायमेंट को दूर करने के लिए प्लान्स बनने चाहिए।

There should be a comprehensive plan of action for the minorities. I request you to do something for the minorities and also for the unemployed youth, especially in the Bengal package.

There are 42 MPs from West Bengal. We supported that Government. They have not announced that Calcutta is a category 'A-1' city. ... (Interruptions) We are not begging for it. Because of a lacuna on the part of the State Government, we are not able to announce that Calcutta is a category 'A-1' city. Here is an order of the High court. We went to the High court. The court passed an order that an announcement has to be made within six weeks that Calcutta is a category 'A-1' city.

I would like to bring it to the notice of the Prime Minister that whatever has been given in the Bengal package does not involve any money or any such thing. The Bengal package is especially for the development of West Bengal. It is a development-oriented project.

A rumour is doing the rounds that this Government is not willing to invite foreign investment in this country. Shri George Fernandes has already clarified the position in this regard. I would also like to request the Government that we, in this country need NRI investment generally for the development of the eastern region and more specially for the north-eastern region and for all the regions of this country as well.

Sir, I would also like to mention a point about the unemployed youth. I would like to request the Government to do something about the Postal Order fees. I know this is a Motion for Vote of Confidence and I should not mention all these points but the Postal Order fees is a big headache for the unemployed youth. These youths would largely be saved if the Government could do something about it.

मैं कहना चाहती हूँ कि जो हम लोगों के खिलाफ कहते हैं कि क्यों बी.जे.पी. आ गई, तो हम लोग कहते हैं कि आप लोग जब तक अपने को सुधार नहीं लेंगे तब तक यह सरकार ही चलेगी। इस सरकार के जाने की बात ही नहीं है। आप लोग कंस्ट्रक्टिव अपोजीशन का रोल प्ले करिये। हम लोग भी करेंगे, लेकिन साथ-साथ कहेंगे कि अगर आप लोगों को गलत इल्जाम हम पर लगाना है तो हम लोग भी कहने के लिए तैयार हैं कि --

‘सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है।'

आप बी.जे.पी. के साथ हमारे जाने पर इतना विरोध करते हैं तो मैं आपको कहना चाहती हूँ कि आने वाले पंचायत इलेक्शन में हम सो काल्ड कम्यूनलिज़म और सो काल्ड सेक्यूलरिज़म का रिप्लाई देने के लिए तैयार हैं। बी.जे.पी. के साथ सीट ऐडजस्टमेंट करके हम चुनाव लड़ेंगे और हम लोग दिखाएंगे कि हम पर ऐसे आरोप लगाने से कुछ नहीं होता है। आप जरा सोचिये कि आप क्या कर रहे हैं। सी.पी.एम. और कांग्रेस एक ही दिन में एक हो गए। मुलायम जी आ गए, पर ज्योति बाबू ने एक भी सीट आपको अपने स्टेट में नहीं दी। आपने एक ही सीट तो मांगी थी, वह भी नहीं मिली। लालू प्रसाद कहते हैं कि उनका विरोध है लेकिन माफ़ कीजिए, अभी वे कुर्सी चाहते हैं।

अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं कहना चाहूँगी कि आप देश की तरफ देखिये कि लोग क्या चाहते हैं।

Shri Atal Bihari Vajpayee is a sensible man. He is a very sensible person; he is a man of commitment. Therefore, I would like to request the Members of this House to support him. Before I conclude I would like to convey our gratitude to all the senior leaders of this House. I would like to appeal to each Member of this House that this Government should not be toppled for individual interests. This Government should continue for a full term of five years.

SHRI P. UPENDRA (VIJAYAWADA): Why should we support this Government?

KUMARI MAMTA BANERJEE : This is my appeal to you. You may not do it. An appeal is an appeal. Our appeal and our request to our colleagues is that they should support this Government so that this Government could pave the way for a greater development of this country. My request to the Government is that it should be assertive, effective and should deliver the goods keeping in view the interests of the country. This Government must be pro-people and truly a Government of the people, by the people, for the people.

मैं सिर्फ एक ही बात कहना चाहती हूँ कि आज ये सरकार एक अच्छे गठबंधन को लेकर बनी है। अपनी सरकार बनाने के लिए देश को जाति-पाति में मत बाँटिये। आम जनता को एक रहने दीजिए, शांति से रहने दीजिए।

बाबरी मस्जिद के बारे में सिर्फ एक बात मुझे कहनी है। सुप्रीम कोर्ट में जो केस रैफर हुआ है --

It should be resolved according to the decision of the Supreme Court. I would like to request that the verdict of the Supreme Court should be accepted. We do not want to divide this country. We want unity of our country. That is why, my suggestion to the Government is -

कि वाजपेयी जी, आप ऐसी सरकार चलाइए। आपकी सरकार को कौनफिडेन्स वोट तो मिलेगा ही, कोई कुछ नहीं कर सकता है। हम लोग इस विश्वास के हैं कि -- 'जो हमसे टकराएगा, वह चूर-चूर हो जाएगा।'

आप हम लोगों को कम्यूनल बोलते हैं। इस पर मैं कहती हूँ कि मैं उर्दू लैंग्वेज को बहुत पसंद करती हूँ। जब एक भाषा की बात आई थी तो मैंने मराठी, पंजाबी, सिख, कन्नड़, तेलुगू आदि ऑफिशियल भाषाओं को पूरा सम्मान दिया है।

Bengali is a very good language. Similarly, Urdu, Marathi and Punjabi are also good languages.

आप श्री वाजपेयी जी और आडवाणी जी से पूछ सकते हैं। इसलिए कि इस देश के टुकड़े नहीं होने चाहिए, देश मजबूत होना चाहिए। यह आने वाले दिनों में साबित हो जायेगा।

'खुद ही को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले

खुदा बंदे से पूछे कि बता तेरी रज़ा क्या है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सरकार को सपोर्ट करती हूँ।

SHRI RUP CHAND PAL (HOOGHLY): Sir, certain derogatory remarks have been made about a very very elderly political leader and the Chief Minister of West Bengal and certain other political leaders. You should look into it and delete those remarks from the record.

MR. CHAIRMAN : If there is anything objectionable, I will go through it.

SHRI BASUDEB ACHARIA : You may go through the proceedings. If the hon. Member has made any derogatory remarks, you may delete those remarks from the proceedings.

MR. CHAIRMAN: Yes, that will be done.

SHRIMATI GEETA MUKHERJEE (PANSKURA): Sir, four ministers of the West Bengal Government went to the place of incident as soon as the news was received. Not one, but four of them had gone there.

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY : The Chief Minister of West Bengal had never gone there.

SHRI TARIT BARAN TOPDAR (BARRACKPORE)

श्री तरित वरण तोपदार (बैरकपुर): सभापति महोदय, किस पार्टी के लिए कितना टाइम अलाट किया गया है। तृणमूल के लिए कितना टाइम अलाट किया गया है और वह कितने समय बोली है।

सभापति महोदय : अभी तो चलने दो, छ: बजे टाइम बतायेंगे। समय का बंटवारा यहां की स्ट्रैंथ के हिसाब से होता है।

For your Party, 26 minutes have been allotted which have already been exhausted.

">

श्री राजेश पायलट : सभापति जी, जब प्रधान मंत्री जी ने शुरूआत की तो मुझे उम्मीद थी कि प्रधान मंत्री जब विश्वास प्राप्त करने की बात करेंगे तो कुछ मुद्दों पर प्रकाश डालेंगे और माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी से बहुत ज्यादा उम्मीद थी। जब से सरकार बनी है, अखबारों में और सब जगह चर्चाएं चल रही हैं कि इस देश की दिशा क्या होगी। लेकिन जब प्रधान मंत्री जी ने बात कही तो अपने अंदाज में सब बात कहने की कोशिश की लेकिन असली बात पर उन्होंने नजर नहीं डाली। प्रधान मंत्री जी इस बात को मानेंगे कि आज भी देश में असमंजस है। मैं भी आज पांचवी या छठी बार यहां पार्लियामेंट में चुनकर पहुंचा हूँ। मुझे भी असलियत पता नहीं कि सरकार का रुख क्या है तो आम आदमी का अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम आदमी को यह सरकार क्या दिशा दे रही है। हमेशा विरोध का एक पक्ष रहा है और उनका एक कहना रहा है कि कांग्रेस के पचास साल के राज में कुछ नहीं हुआ। पचास साल कांग्रेस का राज रहा। चाहे देश के दूसरे इंस्टीट्यूशंस हों या अन्य क्षेत्र हों, सारे ब्लेम कांग्रेस पर आते रहे। लेकिन आज यह बात खासकर प्रधान मंत्री जी को साफ करनी चाहिए। स्वतंत्रता का पचास वां साल हम मना रहे हैं, आजादी के पचास साल पूरे हुए हैं इन वर्षों में देश आगे बढ़ा है या नहीं बढ़ा है प्रधान मंत्री जी को यह देश को बताना चाहिए। कल हमारे वित्त मंत्री जी भाषण दे रहे थे और उससे पहले प्रधान मंत्री जी ने राष्ट्र के नाम संदेश दिया था तो उन्होंने कुछ बातें कही थीं और बहुत अच्छी बातें कही थीं।

अध्यक्ष महोदय मैंने खुद इनका संदेश सुना और उन्होंने जो दो-तीन बातें कही थीं उनके बारे में ये यहां कुछ अवश्य कहेंगे, यह मैं सोच रहा था, लेकिन उन पर आज के भाषण में माननीय प्रधान मंत्री जी ने कोई प्रकाश नहीं डाला। मैं यह नहीं कहता कि कांग्रेस ने गलतियां नहीं कीं। कांग्रेस ने गलतियां की हैं, लेकिन कांग्रेस की एक देन है और वह यह है कि कांग्रेस के कारण ही देश में आज प्रजातंत्र कायम है। यह कांग्रेस की प्रजातंत्र की नीतियों और देश की जनता के कारण ही संभव हुआ है जिसके कारण आप आज यहां बैठे हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, जब देश आजाद हुआ था तब देश की कुल आबादी ३६ करोड़ थी और देश का खाद्यान्न का उत्पादन पांच हजार करोड़ टन था। आज साढ़े १८ हजार करोड़ टन अनाज पर हम पहुंचे हैं। यह कांग्रेस की नीतियों और किसान तथा मजदूरों की मेहनत के कारण संभव हुआ है। एक ब्रिटिश एग्रीकल्चरिस्ट विलियम पैडिक थे जिन्होंने भारत के बारे में एक भविष्यवाणी की थी कि १९७५ तक देश की आबादी इतनी बढ़ेगी और अनाज इतना कम पैदा होगा कि देश की दो-तिहाई आबादी भूखी मरने लगेगी, लेकिन कांग्रेस की नीतियों और इस देश के किसान और मजदूरों की मेहनत के कारण यह भविष्यवाणी सत्य साबित नहीं हुई। एक दूसरे लेसर ब्राउन जो वर्ल्ड वाच इंस्टीट्यूट के प्रेसीडेंट हैं जिन्होंने दो किताबें लिखी हैं एक 'फुल हाउस' और दूसरी 'हू विल फीड चायना-२०३०', उन्होंने इनमें लिखा है कि सन २०३० में चायना में अनाज की इतनी कमी पड़ेगी कि उसे अपनी आवश्यकता को पूरी करने के लिए अपने उत्पादन से २१ हजार टन अनाज ज्यादा खरीदना पड़ेगा। इसी प्रकार से भारत के बारे में उन्होंने लिखा है कि भारत की आबादी २०३० तक इतनी हो जाएगी कि उसे अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए अपने उत्पादन के अतिरिक्त साढ़े चार हजार टन अन्न बाहर से खरीदना पड़ेगा। इसलिए मेरा कहना है कि हमें देश के किसान और मजदूर की चिन्ता करनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि अभी हमारी बहिन ममता जी बोल रही थीं, लेकिन उन्होंने पिछले १० दिनों से इस सरकार में क्या चल रहा है, इस बारे में एक भी शब्द नहीं कहा। पिछले १० दिनों से बराबर आप लोगों में यह बहस चल रही है कि वाणिज्य मंत्रालय किसे दिया जाए और विधि मंत्री कौन बनेगा। कृषि मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय को कोई लेने के लिए तैयार नहीं है। मुझे यह भी दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि कृषि एवं ग्रामीण विकास के कैबिनेट स्तर तक के मंत्री भी अभी तक आपकी सरकार में नहीं हैं। इससे आपका ग्रामीण विकास एवं कृषि के प्रति कितना मोह है, यह सिद्ध हो जाता है। मैं बताना चाहता हूँ कि कांग्रेस के समय में ऐसा कभी नहीं हुआ। कांग्रेस के समय में कृषि और ग्रामीण विकास का हमेशा कैबिनेट स्तर का मंत्री रहा या प्रधान मंत्री ने स्वयं इन मंत्रालयों को अपने पास रखा। आप कम से कम सोम पाल जी को ही कैबिनेट स्तर का मंत्री बना दें। ... (व्यवधान)

SHRI SOMPAL (BAGHPAT)

कृषि राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): पहली बार प्रधान मंत्री ने कृषि मंत्रालय को अपने पास रखा है। आप किसकी बात कह रहे हैं ?

... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : मजबूरी में रखा है। सोम पाल जी, मांगा तो आपने भी था, लेकिन मिला नहीं।

... (व्यवधान)

SHRI SOMPAL (BAGHPAT)

श्री सोम पाल: यह तो किसानों के प्रति प्रधान मंत्री जी की रुचि की बात है कि उन्होंने यह विभाग अपने पास रखा है और किसानों को भरोसा दिलाने के लिए उन्होंने ऐसा किया है।

... (व्यवधान)

SHRI KANTILAL BHURIA (JHABUA)

श्री कार्तिक लाल भूरिया : अगर प्रधान मंत्री को किसानों के ऊपर इतना भरोसा है, तो सोम पाल जी को कैबिनेट मिनिसटर बना देते।

... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट: सोम पाल जी, यह बात इस सदन के माध्यम से टेलीविजन के द्वारा सीधे देश के लोगों के सामने जा रही है।

... (व्यवधान)

SHRI SOMPAL (BAGHPAT)

श्री सोम पाल: मैंने भी किसानों को सुनाने के उद्देश्य से ही यह कहा है। ... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट: आप जो कहते हैं, वह कर के दिखाएं, तभी २०३० तक पहुंचते-पहुंचते आप वैसी स्थिति से बच सकते हैं, लेकिन वास्तविक स्थिति देखिए आज कितने किसान गेहूँ बो रहे हैं और कितने किसान गन्ना बो रहे हैं? अगर वे गेहूँ और गन्ना नहीं बोएंगे, तो देश के सामने खाद्यान्न का संकट खड़ा हो जाएगा। ... (व्यवधान)

SQN. LDR. KAMAL CHAUDHRY (HOSHIARPUR)

स्क्वाडन लीडर कमल चौधरी : पिछले ५० सालों में यह १०० करोड़ की आबादी भी तो कांग्रेस की देन है।

... (व्यवधान)

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर: आप भी तो कांग्रेस की देन हैं।

... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : कमल जी, जहां तक जनसंख्या की बात है यह देश उससे चिन्तित है, लेकिन आप यदि गणना करके देखेंगे, तो कांग्रेस से भा.ज.पा. के परिवार ज्यादा पाएंगे।

... (व्यवधान)

SQN. LDR. KAMAL CHAUDHRY (HOSHIARPUR)

स्क्वाडन लीडर कमल चौधरी: मेरे पिताजी चार बार कांग्रेस के प्रत्याशी को हराकर विधायक बने और एक बार कांग्रेस के प्रत्याशी को हराकर एम.पी. बने। कुल पांच बार उन्होंने कांग्रेस को हराया।

... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट: अब आप कहीं अटल जी की बात मत कीजिएगा।

... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : मैं औरों का भी उदाहरण दे दूंगा।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Shri Kamal Chaudhary, please sit down. ... (Interruptions) There is a limit. ... (Interruptions)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : मुझे दो-तीन बातें कहनी हैं। प्रधान मंत्री जी ने जब पहले दिन देश के नाम संदेश दिया तो उसमें तीन-चार बातों पर जोर दिया और सही बातों पर जोर दिया कि देश में सहमति से सरकार चलनी चाहिए। नीतियों पर सहमति होनी चाहिए। हम सब उसके हकदार रहे हैं, उसके पक्षधर हैं। पारदर्शिता होनी चाहिए, जवाबदेही आनी चाहिए और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना चाहिए। उन्होंने चारों चीजें कहीं। इन चारों चीजों को हम सब दिल से मानते हैं। मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से, जो कि बुजुर्ग हैं, बड़े हैं, ईमानदारी से पूछता हूँ कि १९ तारीख से अब तक वह कितनी बातों पर जम पाये हैं। आज सवाल प्रधानमंत्री का नहीं है। आज सवाल पार्टी का नहीं है। आज सवाल देश के सिस्टम की क्रेडेबिलिटी का है। आज सवाल देश की राजनीति की क्रेडेबिलिटी का है। क्या पारदर्शिता हम इन तीन-चार दिनों में दिखा पाये हैं?। क्या करप्शन के खिलाफ आवाज उठाई है? क्या हम सचमुच लड़ पाये हैं? आज सवाल एक व्यक्ति का नहीं है, जिनका नाम श्री शरद पवार जी ने लेकर कहा। आज देश में एक मैसेज जा रहा है। हम नेता लोग जो कहते हैं।

... (व्यवधान)

SHRI RAJVEER SINGH (AONLA)

श्री राजवीर सिंह (आंबला): मैं राजेश पायलट जी से पूछना चाहता हूँ कि वह बार-बार यह कह रहे हैं कि प्रधान मंत्री ने क्या किया। वह उनसे ८ दिन की जवाबतलब कर रहे हैं। आपने ४५ साल तक देश का जो कबाड़ा किया है, उसकेारे में भी बताइये। ... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : करफान की बात हुई। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आप चार दिन में बहुत लम्बे काम कर सकते थे। मैं तो एक प्रार्थना कर रहा हूँ कि जो भी हम कहें, उसका देश में एक संदेश जाना चाहिए। जिन सरकारों को क्रेडेबिलिटी है। मैं इसमें अपने आपको भी शामिल कर रहा हूँ। आज क्रेडेबिलिटी गिर रही है। आज गांवों में जाओ तो लोग हमसे सवाल पूछते हैं। कल परसों हिमाचल की सरकार बनी थी। कल मैं अपने क्षेत्र में दौरा करने गया था तो वहाँ आम आदमी भी सवाल पूछ रहा था। मैंने कहीं एक भाषण में कह दिया था कि हम वायदा करते हैं कि हम सरकार को अच्छी नीतियों का समर्थन करेंगे। हम सरकार की नीति और अगर उनकी नीयत साफ होगी तो जिस मुद्दे पर देश का भला होगा, उस पर हम सहायता देंगे। कल ही मुझे दो फ़ैक्स इनकी नीयत और नीति के बारे में आ गये। वह मैं आपके बीच में रखना चाहता हूँ।

सभापति महोदय, मैं जो रिकार्ड रख रहा हूँ, वह मुझे आये हैं। मैं उन्हें हाउस की टेबल पर रखने को तैयार हूँ। उनके सोर्स भी बताने तो तैयार हूँ कि वह मुझे कहां से मिले हैं। जब मैंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है और अगर वह देश के भले में काम करेगी तो हम लोग हमेशा सहायता देंगे क्योंकि देश पार्टियों से ऊपर है। इस बात के उत्तर में एक शरीफ आदमी ने मुझे चिट्ठी भेजी कि इनकी नीयत ठीक नहीं है। राजेश पायलट जी, तुमने तो कह दिया लेकिन क्या यह देश को एक रख पायेंगे और क्या देश को जोड़कर रख पायेंगे? उन्होंने एक उदाहरण दिया है। ४ फरवरी, १९९१ को आपका जयपुर में कैम्प लगा था। उस समय श्री मुरली मनोहर जोशी जी अध्यक्ष चुने गये थे। आडवाणी जी को याद होगा कि जयपुर में एक कैम्प हुआ था और उसमें सवाल उठाये गये। उन दिनों शायद आडवाणी जी की यात्रा खत्म हुई थी और मुलायम सिंह जी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री थे। श्री लालू प्रसाद यादव ने आपकी यात्रा रोकी थी। वह यात्रा रोककर पहुंचे। कैम्प में जो प्रश्नावली डेलीगेट्स की दी गयी, वह उस दिन आब्जर्वर बिजनेस इन पालिटिकल में ४ फरवरी, १९९१ को आई। श्री सुभांशु मिश्रा उसके एडीटर हैं जिन्होंने लिखा है। प्रश्नावली में क्या पूछते हैं। आखिर चिन्ता की बात है और मैं बड़े दुख के साथ कहता हूँ।

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD)

श्री हरिन पाठक(अहमदाबाद): यह किस ईयर की बात है।

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : ४ फरवरी १९९१ की बात है।

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD)

श्री हरिन पाठक : ६ साल के बाद कल यह लैटर आया है।

... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट: नीयत बदला नहीं करती। ४ फरवरी १९९१ को जयपुर में कैम्प

था। प्रश्नावली के प्रश्न नं १ में उन्होंने अपना नाम लिखा है आचार्य जगदीश मुनि। यह बी.जे.पी. के हैं और हरिद्वार के प्रेजीडेंट हैं। मैं सब सवाल पर नहीं जाऊंगा। मैं केवल संबंधित सवालों का ही जिक्र करूंगा। सवाल नं. १३

... (व्यवधान)

मैं वर्ष १९९१ की बात कर रहा हूँ। जो पढ़ा है, उसको दे रहा हूँ। प्रश्न नं. १३ में यह है कि क्या आपके क्षेत्र की जनता यह समझती है कि देश में पिछले दिनों हुए साम्प्रदायिक दंगे आडवाणी जी की यात्रा के कारण हुए? हां या न या पता नहीं आदि इन तीनों में जवाब दीजिए। चलो कोई बात नहीं, वह पता करना चाहते होंगे कि पार्टी का इससे कोई लिंक तो नहीं है।

17.00 hrs.

प्रश्न नम्बर १४ - देश में चुनाव होने की स्थिति में साम्प्रदायिक दंगों का भारतीय जनता पार्टी पर क्या प्रभाव पड़ेगा? पूछते क्या हैं। बुरा असर पड़ेगा, कोई असर नहीं पड़ेगा, तीसरा ब्लैंक कर दिया है। उसमें एक व्यक्ति लिखता है कि अच्छा असर पड़ेगा।

यह प्रश्नावली १९९१ में जयपुर में डेलीगेट्स को पूछी जा रही थी।

प्रश्न नम्बर १५ - अपने देश के चुनाव पर किन दो मुद्दों पर मतदाता का असर पड़ेगा? किन्हीं दो पर निशान लगाइए। राजनैतिक संगठन का, धार्मिक आधार का, प्रत्याशी के व्यक्तित्व का और जातीय आधार का। चलो यह भी मान लेते हैं।

सवाल नम्बर १६ - इससे दिल टूटता है। अटल जी, इससे दिल पर चोट लगती है, इससे शक होता है कि नीयत साफ नहीं है। पहला सवाल देश की एकता और अखंडता होता तो मैं भी खुश होता और आज आपके भाषण पर यकीन करता कि आपका मन बिल्कुल साफ है और आप देश की एकता, अखंडता के लिए खड़े हो जाएंगे। पहला सवाल राम जन्म भूमि का है। अगले लोक सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के तीन मुख्य चुनावी मुद्दे कौन से होने चाहिए, उन पर निशान लगाइए। सबसे पहले राम जन्म भूमि, दूसरा बेरोजगारी, तीसरा मंहगाई, चौथा एकता और अखंडता। आपके लिए देश की एकता, अखंडता की यह प्रॉपर्टी है।

यह प्रश्नावली बी.जे.पी. के उसमें बांटी गई है। किसी भाई ने मुझे फ़ैक्ट्स एंड फिगरस दिए हैं। इसे मैं टेबल पर रख देता हूँ, आप पता करवा लें कि इसमें कहां तक सच्चाई है और किसने बांटी है। ४ फरवरी, १९९१ के बिजनस स्टैंडर्ड में यह आया है।

... (व्यवधान)

17.02 hrs. (Shri K. Pradhani in the Chair)

आज देश की मजबूती का सवाल है। आज देश जिन चुनौतियों से गुजर रहा है, उसके बारे में मुझे दो बातें कहनी हैं।

... (व्यवधान)

एक तरफ हमारे साथियों ने मैनीफेस्टो में हिन्दुत्व पर जोर दिया है और बी.जे.पी. ने अपने मैनीफेस्टो में हिन्दुत्व का मतलब

justice for all

दिया है।

Hindutva means justice for all. That is the definition which has been given in the Manifesto.

जार्ज साहब, आपने भी आज बातें कहीं। मैं आपकी बहुत कद्र करता हूँ, आप बुजुर्ग हैं, बहुत दिनों से पोलिटिक्स में हैं। एक तरफ तो हिन्दुत्व का मतलब जस्टिस फॉर ऑल और दूसरी तरफ आपके नेशनल एजेंडा में जैनविन सिटीजन की भाषा को आप पढ़ लीजिए कि क्या लिखा है।

"We are committed to establishing a civilised, humane and just civil order..."

...We will truly and genuinely uphold and practice the concept of secularism consistent with the Indian tradition of equal respect for all faiths."

हिन्दुत्व और इक्विवल फेस बराबर नहीं चल सकते। इस देश में जमायते इस्लामी के इंस्टीट्यूशन में जो शिक्षा दी जा रही है, शिशु मंदिर और विद्या मंदिर में जो शिक्षा दी जा रही है, वह देश के सिटीजन को एक नहीं रख सकती है, यह बात आपको माननी पड़ेगी। कश्मीर में जो जमायते इस्लामी की भाषाएं चलती रहीं, आज देश को उससे तकलीफ हुई है। मुझे बी.जे.पी. के भाइयों से दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आप भी उसी लाइन पर जगह-जगह जो शिशु मंदिर, विद्या मंदिर और भाषा बोल रहे हैं, वह भी देश के लिए ठीक नहीं है। मैं देश को यह बताना अपना फर्ज समझता हूँ। मुझे पता है कि आपको यह बात पसंद नहीं आएगी। लेकिन आम आदमी को यह भाषा है कि ये दोनों चीजें देश को एक नहीं रख सकतीं। इसके लिए आपको कुछ करना पड़ेगा।

... (व्यवधान)

जार्ज साहब, आप ७ नवम्बर, १९९० को इसी सदन में बोल रहे थे। मैं बड़ी मुश्किल से पार्लियामेंट से इसे ढूँढकर लाया हूँ। यदि आपको याद हो, आप ७ नवम्बर, १९९० को कह रहे थे -

"It was with a great courage and forbearance that Shri Mulayam Singh Yadav and Shri Laloo Prasad Yadav tried to control the situation which otherwise would have taken an explosive turn."

You have mentioned that.

You had further mentioned the reasons. I quote:

"People of India are for secularism. There is an effort in this country today to judge people by their religion."

You know, where you were hinting at in your speech.

आज आपने बहुत बढ़िया तरीके से कालत की है। मुझे १९ जुलाई, १९७९ की याद आ रही है, जब आप बोल रहे थे। मैं तो एयर फोर्स में था, हम सब बड़े गौर से सुन रहे थे कि जार्ज साहब ने आज मोरारजी भाई को बचा लिया। अगले दिन क्या हुआ, मुझे पता नहीं। कल क्या होगा, अब यह अटल बिहारी वाजपेयी जी की किस्मत पर है कि १९ जुलाई, १९७९ रिपीट होगी या नहीं होगी। यह रात-रात को भगवान के ऊपर है कि कितने दिन घटाता है, कितने दिन आगे बढ़ाता है।

मैं ये बातें कहने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मेरे कुछ पेपर्स लाइब्रेरी में रह गये हैं। मैं उनको ढूँढने में रह गया और एकदम आपने मेरा नाम ले दिया तो गलती से पेपर रह गये। मैं आखिर में दो बातें कहने उठा हूँ, शरद जी ने बहुत विस्तार से बातें कह दी हैं। यह बात सही है कि देश में जनता से न आपको सरकार बनाने का आदेश मिला और न हमको मिला और हमने शुरूआत में कह दिया था कि जिसका बहुमत होगा, वह सरकार बनाये। प्रजातंत्र में यह जरूरी है, लेकिन आज अटल जी, आपने कहा कि हम तो बैठे थे, हम सरकार बनाने के लिए राष्ट्रपति जी के पास नहीं गये, हमें बुलवाया। आपके हर लीडर ने तीन दिन तक प्रेस और मीडिया में यह कहा कि हमारा हक है, हमको बुलाना चाहिए, हमारा सरकार बनाने का हक है। सुषमा स्वराज जी बैठी हुई थीं, डिबेट में मैं भी था, मैंने कहा कि हक तो देखो किसी का नहीं है, जिसकी मैजोरिटी होगी, राष्ट्रपति जी अपने आप बुला लेंगे तो वे मुझसे टेलीवीजन पर लड़ पड़ीं कि हमारा सरकार बनाने का हक है, आप लोग कैसे रोक सकते हैं, हम सरकार बनाकर रहेंगे। हो सकता है कि आपके मन में नहीं हो, लेकिन बी.जे.पी. ने तो मन बना लिया था कि हमें सरकार बनानी है, आपकी चाहे जो मर्जी हो, आपने सरकार बनाई, लेकिन एक बात मैं आपसे कहना चाहूँगा कि बहुत कण्ट्राडिक्शन है।

मैं कहना नहीं चाहता हूँ, १९९३ में मैं होम मिनिस्ट्री में मंत्री था और मनमोहन सिंह जी फाइनेंस मिनिस्टर थे। हमारे रिवेन्यू सेक्रेटरी ने ए.आई.ए.डी.एम.के. के खिलाफ कार्रवाई की और यहां पर जो भाषा ए.आई.ए.डी.एम.के. के बारे में बोली गई थी, जब करप्शन की बात चली थी कि एक हजार साड़ियां, दो हजार चप्पल, पता नहीं क्या-क्या अखबार में छप गया था। हम डिफेंड कर रहे थे, हम यह कह रहे थे कि कोई बात नहीं होगी, हम देखेंगे, हम देखेंगे। उस वक्त तो यह बात हम पर लगाई जा रही थी और हमने वहां पर जाते ही इन्क्वायरी की बात की। मनमोहन सिंह जी और हम दोनों बैठे थे। हमने नरसिंहराव जी से कहा था कि चीफ मिनिस्टर के बारे में ऐसी बातें हमको कही गईं, हमको देश को जवाब देना है, हमें कुछ कार्रवाई करनी पड़ेगी। हमारी एलायंस वाली बात चली। जब हमने अखबार की बात कही, तब यह बात लगी है। मुलायम सिंह जी ने यह बात ठीक कही कि जब तक यहां बैठे तो सब कसूरवार और जब वहां चले गये तो गंगजल छिड़क दिया, वे ईमानदार हो गये। यह बर्ताव बदलना पड़ेगा। जो बेईमान है, वह सब के लिए बेईमान है। इस देश में छांट करनी पड़ेगी और यह छांट तब होगी, जब आप भी साफ मन से बात करना शुरू करेंगे। अभी साफ मन की बात नहीं चली है।

मैं कहना नहीं चाहता, मैं भी कम्युनिकेशन मिनिस्टर रहा हूँ, जो हालात देश के हुए थे, मैं राज्य सभा में खड़ा-खड़ा जवाब दे रहा था, प्रमोद महाजन जी ने दो घंटे तक बोलने नहीं दिया था, सारे टैंडर्स के कागज पकड़ा दिये थे और हालत यह हो गई थी कि जब चार करोड़ रुपये घर में मिले तो हमें यहां से निकलने वाले बी.जे.पी. के भाई टोका करते थे कि तुम्हारे कितने हैं, जरा थोड़े से दे जाओ। आज वही भाई गले मिल रहे हैं, अब उसको ओथ दिला दी और उसको विभाग भी पी.डब्ल्यू.डी. का दे दिया कि तू और जरा आराम कर, पी.डब्ल्यू.डी. ले जा, ऐसे देते हैं।

अटल जी, मुझे आपसे उम्मीद नहीं थी और कोई इस बात को कर देता तो कोई बात नहीं थी। आपकी तरफ से एक रजिस्ट्रेंस तो आ जाता, लेकिन एक रजिस्ट्रेंस नहीं आया।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज) : मेरा पाइंट ऑफ आर्डर है। सभापति जी, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

MR. CHAIRMAN : He is not yielding. Please sit down.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please sit down. He is not yielding.

... (Interruptions)

सभापति महोदय : आप जरा बैठ जाइये।

SHRI PRABHUNATH SINGH (MAHARAJGANJ)

श्री प्रभुनाथ सिंह : आप एक मिनट सुन

तो लीजिए। (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : सभापति जी, जहां तक विचारधाराओं की बात है, विचारधाराओं की लड़ाई हो, हमें भी खुशी होगी। हमारी विचारधाराओं में कमी है तो हम सुधारेंगे। अगर आपकी विचारधाराओं में कमी है तो आप सुधारें। इससे देश में अच्छा संकेत जाएगा। अगर देश में विचारधारा की राजनीति भविष्य में होती है तो देश मजबूत होगा। ... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : No running commentary please.

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA)

श्री राजेश पायलट : आज एक बात सच्ची है, कोई संसद की बात नहीं है, कोई टकराव की बात नहीं है, घोषणा पत्र में घोषणा करो। लेकिन उसको भूलकर राष्ट्रीय एजेंडा में नाम न लो, यह ठीक नहीं है। आज मुझे उम्मीद थी कि प्रधान मंत्री जी खड़े होकर कहेंगे कि हमने घोषणा पत्र के आधार पर चुनाव जीता, लेकिन जो हमारी बातें घोषणा पत्र में थीं या तो वे आज से खत्म हैं या हम उनको उठाएंगे और राष्ट्रीय एजेंडा में जोड़ेंगे। इससे कुछ तो देश में मैसेज जाएगा। कश्मीर में गड़बड़ी क्यों हुई। १९९२-९३ के हमारे बी.जे.पी. भाइयों के भाषणों को मैंने देखा है। मुरली मनोहर जोशी जी श्रीनगर झंडा फहराने गए थे तो वहां धारा ३७० का मामला खड़ा कर दिया गया था। हर कश्मीरी भाई के दिमाग में एक बात आई थी, इस देश में आटोनोमी की बात छोड़िए, हमारी जो मंजूरी बातें हैं, वे भी नहीं होंगी। इससे कश्मीर में नई आफत खड़ी हो गई थी। बड़ी मुश्किल से कश्मीर को सम्भाला। आज उसके बारे में कोई बात तक नहीं है। वह भी गुम है। गांव में एक कहावत है कि जो बककड़ होता है वह दिल की बात कह देता है, लेकिन गुमसुम आदमी का पता नहीं क्या कहेगा और क्या करेगा। आज बी.जे.पी. बोल नहीं रही है, जो बोलती थी वह भी बंद हो गई है। पहले कुछ कह दिया करते थे, आज वह भी चुप हैं। मेरे पास पूरी डिटेल नहीं है। मैं दो उदाहरण देना चाहता हूँ, मेरे पेंपर्स कहीं रह गए हैं। अटल जी ने लखनऊ में जब सरकार बन रही थी तो किसी ने उनसे कैबिनेट एक्सपेंशन के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि बी.जे.पी. आर्ट आफ गवर्नेंस सीख रही है। यह मैंने कहीं नेशनल हैराल्ड या पायनीर में पढ़ा था। आज मैं कटिंग लेकर आया था, लेकिन शायद वह लाइब्रेरी में रह गई है। अगर आर्ट आफ गवर्नेंस यह होगा तो देश की सरकार कैसे चलेगी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि खुली चोट पर पट्टी हो जाती है, लेकिन अटली जी, गुम चोट पर नहीं होती है, बड़ी देर लगती है। इस पर गुम चोट मत कर देना, हम उभर नहीं पाएंगे।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि संवेदनशील मुद्दों पर हमें खुलकर बात करनी चाहिए। हमें अपनी पालिसी खुलकर देश के सामने रखनी चाहिए। आज देश में अंधेरा है इसलिए कि खुलकर पालिसी नहीं दी जा रही है। आज तक भारतीय जनता पार्टी की तरफ से कश्मीर के बारे में कोई शब्द तक नहीं बोला गया है कि क्या रुख होगा। ऐसे जलते मुद्दों पर चाहे नार्थ-ईस्ट की बात हो या कश्मीर की बात हो, अगर हमारे देश की सरकार का विजन साफ नहीं होगा तो वहां कभी भी तकलीफ उठ सकती है। ये सेंसेटिव इलाके हैं।

आज आपने एक कल्चर की बात कही। वन नेशन वन कल्चर, दूर से सुनने में बड़ा अच्छा लगता है। माननीय प्रधान मंत्री जी यह देश रीति-रिवाजों का है। आप गृहस्थी में नहीं रहे, मैं रहा हूँ। मैं बता सकता हूँ कि हमारे यहां जब शादी होती है और फरे होते हैं तो लड़कों लड़कें के साथ चली जाती है। आपके यहां भी ऐसा ही होता होगा। यहां हमारे किडिया साहब जो मेघालय से आते हैं, वे बैठे हैं, उनके यहां शादी के बाद लड़का लड़की के घर चला जाता है। इनके रीति-रिवाज उल्टे हैं। इनको मत छोड़ो, ये चीजें उभरने दो। यह देश ऐसे ही एक रहेगा तो प्यार वैसा ही बना रहेगा। हमारे देश में अनेक परम्पराएं रही हैं। तरह-तरह के धर्म, तरह-तरह के रीति-रिवाज हैं। अगर ये रहेंगे तो हमारा देश मजबूत रहेगा। इन नारों से कहीं नुकसान हो जाएगा। इन नारों से मिसअंडरस्टैंडिंग हो जाएगी, फिर आप रोक नहीं पाओगे।

आखिर में मैं एक सलाह बड़े भाई अटल बिहारी जी को देना चाहता हूँ, एक भाई के नाते दे रहा हूँ, सांसद के नाते नहीं। यहाँ जब-जब दो-दो बैठे हैं, चाहे १९५७ में बैठे हों, चाहे, १९७७ में बैठे हों, चाहे १९९१ या १९९६ में बैठे हों, गड़बड़ हुई है, स्टैबिलिटी वहीं से खराब होती है। आप देख लें, मैं अपनी बात भी बता रहा हूँ। १९५७ में नेहरू जी और सरदार पटेल बैठते थे, इतिहास बताता है। १९९१ में हमारे जमाने में भी यही हुआ और १९७७ में भी यही हुआ। उस समय तो तीन-तीन लोगों, मोरारजी भाई, चौधरी चरण सिंह और बाबू जगजीवन राम ने बैठने की कोशिश की। तब भी गड़बड़ हुई। १९९६ में भी यही हुआ। सी.पी.आई.(एम) के भाई यहाँ बैठे हैं, राम विलास जी नहीं हैं, वे तो बैठे रहे, लेकिन उधर के बदलते रहे। इसलिए दो वाली स्थिरता रहेगी, इसमें शक है। मैं मुलायम सिंह जी की तरफ से भी कहना चाहता हूँ, बाकी आपके ऊपर है। मैं बैठे-बैठे पढ़ रहा था, किसी ने लिखकर भेजा है।

आज के जो संदेश होंगे, वे सारे देश में जाएंगे और सरकार जो भी कदम उठाएगी, वह देश की नीति और भविष्य के लिए होगा। एक शायर ने कहा है:-

'वह दौर भी देखा है तवारी के पन्नों ने,

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई।'

इस देश के साथ ऐसा न हो जाए, हम यही भरोसा आप पर रखते हैं और मुझे पूर्ण उम्मीद है कि कल हम अपनी भाषा और भावना बटन दबाकर दिखाएंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद करता हूँ।

">

रसायन एवं उर्वरक मंत्री (सरदार सुरजीत सिंह बरनाला): सभापति जी, मैं इस प्रस्ताव के हक में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। इस बार जनादेश बहुत साफ नहीं हुआ। किसी को भी पूरी मैजोरिटी नहीं मिली। यह सरकार बनी है लेकिन काफी तादाद से नहीं बनी, इसलिए सदन में बहुमत साबित करने के लिए यह मौका दिया गया है। इसके लिए आज यह बहस चल रही है। ये हालात क्यों पैदा हुए, यह आप सभी जानते हैं।

१९९६ के इलेक्शन के बाद बी.जे.पी. को सरकार बनाने का मौका दिया गया लेकिन वह सरकार थोड़े दिनों के बाद, तेरह दिनों के बाद ही तोड़ दी गई। फिर कोशिश हुई कि और कोई सरकार बनाई जाए। बहुत सी पार्टीज इकट्ठी हुई। यूनाइटेड फ्रंट का नाम दिया गया और उसको बाहर से सपोर्ट करने के लिए कुछ कांग्रेस ने, कुछ लेफ्ट ने वादा किया कि हम सपोर्ट करेंगे। देवगोड़ा जी के नेतृत्व में एक मिलीजुली सरकार खड़ी हो गई, सरकार चली, लेकिन मुश्किल में पड़ी रही। आहिस्ता-आहिस्ता यह मुश्किल इतनी हो गई कि उस सरकार को चलना ही मुश्किल हो गया। थोड़े समय के बाद कहा गया कि नहीं, यह हमें पसन्द नहीं है और उस सरकार को खत्म कर दिया गया। उस वक्त बोलते हुए भी बहुत से लोगों ने कहा था, मैंने भी कहा था कि कांग्रेस अकसर ऐसा किया करती है। सपोर्ट करने का वादा करती है लेकिन मन में कुछ और होता है। एक दफा नहीं, कई दफा इतिहास में यह बात आ चुकी है। चौधरी चरण सिंह जी का मैंने जिक्र किया था, चन्द्र शेखर जी का भी मैंने जिक्र किया था। पहले लोगों को यह तजुर्बा हो चुका है, अब भी ये लोग साथ नहीं निभाएंगे। ऐसा ही हुआ। देवगोड़ा जी की सरकार गई, गुजराल जी की सरकार बनी। थोड़े समय के बाद उसमें भी उनको नुक्स दिखाई देने लग गए। आहिस्ता-आहिस्ता मन बन गया कि इनकी सरकार को भी तोड़ा जाए। दरअसल मन में यह था कि कोई मौका मिले तो अपनी सरकार बनाई जाए। कांग्रेस की ऐसी कोशिश दिखाई दे रही थी। बाहर से हम लोग देखा करते थे कि इनकी कोशिश यह है कि किसी न किसी तरह अपनी सरकार बनाई जाए।

उस वक्त कांग्रेस के एक लीडर थे जो आज नहीं हैं। शायद कांग्रेस से बाहर हो गए हैं। उनकी कोशिश थी कि कुछ ऐसे हालात कर दिए जाएं और शायद उनको कुछ मौका मिल जाए। लेकिन अफसोस, लोक सभा भंग हो गई। फिर से देश के सामने इलेक्शन आ गए। इस चुनाव में भी जनादेश बहुत साफ नहीं आया।

लोगों ने किसी भी दल को बहुमत नहीं दिया। कुछ दल तो बिल्कुल ही रह गए। यूनाइटेड फ्रंट के कई कम्पोनेंट थे, जो बिलकुल ही रह गए। उनकी तादाद उंगलियों पर गिनने वाली रह गई है। देखा गया कि एन्टी इस्टैब्लिशमेंट वोट हुआ है। जहाँ-जहाँ पर भी जिस दल की सरकारें थीं, उसके खिलाफ वोट दिया गया। लेकिन पंजाब ही एक ऐसा राज्य है, जहाँ पर प्रो-इस्टैब्लिशमेंट वोट हुआ है। पिछली दफा कांग्रेस दो सीट्स जीत कर आई थी और उससे पहले तो तेरह की तेरह सीट्स कांग्रेस के पास थी, क्योंकि अकाली दल ने चुनाव का बायकाट किया था, लेकिन इस दफा तो पूर्ण सफाया हो गया। इसके पीछे भी कुछ ऐतिहासिक तथ्य थे कि क्यों कांग्रेस पंजाब में साफ हो गई और इस दफा एक भी सीट नहीं आ सकी। कारण यह कि पंजाब के लोगों ने समझ लिया कि पिछले समय में पंजाब को जिस आतंकवाद को सामना करना पड़ा, वह आतंकवाद कांग्रेस का ही पैदा किया हुआ था। इस बात को पंजाब के लोगों ने समझ लिया। काफी लम्बा इतिहास हो जाता है, १२-१३ साल पंजाब ने काफी कष्ट उठाया है और बहुत नुकसान उठाया है। लोग समझ गए कि ये हालात कांग्रेस के ही पैदा किए हुए हैं। इस आतंकवादी प्रक्रिया में तकरीबन एक लाख लोग पंजाब के मारे गए। बहुत से तो बेकसूर लोग, इनोसेंट लोग मारे गए। जिनका इससे कोई ताल्लुक नहीं था, ऐसे लोग मारे जाते रहे। बहुत से पुलिस के कर्मचारी भी मारे गए और साथ ही बहुत से आतंकवादी भी मारे गए। जैसा मैंने बताया कि एक लाख के करीब लोग मारे गए और पंजाब में जो नुकसान हुआ, उसमें बड़े-बड़े लोग, हरचरण सिंह लोगोंवाला जैसे लोग शहीद कर दिए गए। यह ऐसा घिनौना इतिहास था और पंजाब उस बोझ को उठाता रहा। यह सारा कुछ पंजाब को बरदाश्त करना पड़ता था। नतीजा यह हुआ कि ८०० करोड़ रुपए का कर्ज पंजाब के ऊपर हो गया। बहुत कोशिश की गई कि इस कर्ज को माफ कर दिया जाए। कई सरकारें आईं और कहा गया कि यह बोझ पंजाब के ऊपर नहीं होना चाहिए, क्योंकि पंजाब तो देश की लड़ाई कर रहा था, आतंकवाद का मुकाबला कर रहा था, लेकिन किसी ने भी इसको नहीं देखा। मुझे इस बात को कहने में खुशी है कि जब इन्द्रकुमार गुजराल साहब प्रधान मंत्री बनें, वे पंजाब के हालात को जानते थे, उन्होंने फैंसला लिया कि पंजाब का यह कर्जा माफ होना चाहिए। उन्होंने यह काम किया और हम उनके आभारी हैं। इसीलिए फिर शिरोमणि अकाली दल ने फैंसला लिया कि आप पंजाब से इलैक्शन लड़िए और गुजराल साहब ने पंजाब से इलेक्शन लड़ा और चुनाव जीता। भले ही उनकी पार्टी ग्रास्रूट लैवल पर नहीं थी, चूंकि पंजाब के लोग समझते थे कि गुजराल साहब ने मदद की है, इसलिए वे वहाँ से जीत कर आए। मुझे इस बात को खुशी है कि हम अपने कर्तव्य को निभा सके।

मैं अर्ज कर रहा था, पंजाब में कांग्रेस ने घिनौना काम किया, इसलिए पंजाब में कांग्रेस का यह हाल हुआ।

ब्लू-स्टार आपरेशन को पंजाब के लोग भूला नहीं सकेंगे। ६ जून, १९८४ को दरबार साहब में हिन्दुस्तान की फौज को भेजा गया, टैंक और तोप लेकर हमला करवाया गया और सैंकड़ों लोग शहीद हो गए। देश की फौज देश के लोगों को खिलाफ काम नहीं करती है, देश के धर्म-स्थलों पर नहीं जाया करती है, लेकिन ऐसा हुआ।

जिससे सिख समुदाय बहुत दुखी हो उठा। आज तक इस घिनौने काम की किसी ने माफी नहीं मांगी, किसी सरकार ने माफी नहीं मांगी। पार्टी के तौर पर भी माफी नहीं मांगी गई, मुझे इस बात का बहुत अफसोस है। इसलिए पंजाब के लोग कांग्रेस के खिलाफ हो गए। इतना ही नहीं, इसके बाद जो कुछ हुआ वह इससे भी भयानक था। देश में एक लहर सिख समुदाय को बदनाम करने की चला दी गई थी, पूरा मीडिया इस्तेमाल किया जा रहा था। सरकार पूरा मीडिया इस्तेमाल कर रही थी कि इनको बदनाम कर दिया जाए। सिखों को आतंकवादी का नाम देकर सारे देश में ही नहीं बल्कि सारे संसार में बदनाम कर दिया गया। नतीजा आपके सामने आया, नवम्बर १९८४ में जो कुछ देश में हुआ वह भी इतिहास का एक हिस्सा बन गया। कत्लेआम हुआ। देश की राजधानी दिल्ली में कत्लेआम हुआ। ऐसा कत्लेआम हुआ, जो नादिर शाह के बाद दिल्ली में कभी देखा नहीं था। सिख समुदाय के लोगों को दूँद-दूँद कर मारा गया और बहुत बुरी तरह से मारा गया। उनके घर जला दिये गए, सम्पत्ति लूटी गई, जला दी गई और यह तीन दिन तक होता रहा।

महोदय, देश में सरकार थी। होम मिनिस्टर यहां पर थे, जोकि कोई आर्डर कर सकते थे। प्राइम मिनिस्टर नये बने थे, उन्होंने काम शुरू कर दिया था। लेकिन तीन दिनों तक ये तमाशा देखते रहे। सिखों की हत्या हो रही थी। मोहल्ले-मोहल्ले में, जगह-जगह पर घर जलाये जा रहे थे, बस्तियां जलाई जा रही थीं और तमाशाईं बन कर कुछ लोग ये देख रहे थे तथा कुछ लोग लोगों को उकसा रहे थे। पुलिस नहीं बुलाई गई, शूट एट साइट का आर्डर नहीं दिया गया। फौज यहां मौजूद थी लेकिन फौज को कोई आदेश नहीं दिया गया कि कोई फ्लेग मार्च करके कम से कम लोगों के दिल में कोई दहशत तो डाली जाए कि यह काम ठीक नहीं हो रहा है। तीन दिन आंखें बंद करके उसको इजाजत दी गई कि चलता है तो चलता रहने दिया जाए। इस तरह तीन हजार आदमी दिल्ली में मार दिए गए। ऐसा देश के कई हिस्सों में हुआ। उनमें कुछ लोग अच्छे भी थे, जिन्होंने सिखों को पनाह भी दी। यहां भी बहुत से सांसद बैठे हैं, अगर मैं नाम लूंगा तो कोई रह जाएगा। लेकिन कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने हमदर्दी की वजह से अपने घरों में छिपा कर रखा। यह एक ऐसा इतिहास बन गया जो भूलने में नहीं आता।

महोदय, इतने केस हो गए लेकिन उसके बाद भी कोई केस अदालत में नहीं भेजा गया। सालोंसाल गुजर गए।

... (व्यवधान)

यह सदा चलता रहेगा, जब तक आप इसकी माफी नहीं मांगेंगे। मैं अर्ज कर रहा हूँ कि केस नहीं चलाए गए। इसको १०-१२ साल हो गए। जब केस नहीं चला तो हमने कुछ कोशिश की। मुझे १९९३ की बात याद है जब राजेश पायलट जी होम मिनिस्टरों में थे तो मैं उनको प्राइम मिनिस्टर के पास अपने साथ लेकर गया कि केस नहीं चल रहे हैं आप मेरे साथ चलिए तब वह हमदर्दी करके मेरे साथ गए। उन्होंने भी कहा और मैंने भी कहा कि ये केस चलने चाहिए। भले ही इसमें कुछ कांग्रेस के बड़े लोग आते हैं, लीडर का नाम भी आता है, लेकिन यह अच्छा रहेगा। अगर इन पर केस चला दिए जाएं तो अच्छा होगा। इससे शायद पार्टी को भी फायदा होगा, लेकिन ऐसा नहीं किया, कई कोशिशों के बावजूद भी ऐसा नहीं किया गया। नतीजा क्या हुआ, नतीजा यह हुआ कि महसूस होने लगा कि वाकई ये लोग जिम्मेदार थे। मुझे इस बात की खुशी है कि इस दफा इन लोगों को टिकट नहीं दिए गए, इससे पहले तो टिकट भी दिए जाते थे और न सिर्फ टिकट दिए जाते थे बल्कि वे कामयाब होकर मिनिस्टरों में भी आते थे। उनको मौका दिया जाता था कि सरकार में भी आइए, ऐसे लोग थे। लेकिन इस बार उनको बाहर निकाला गया। इससे यह जाहिर हुआ कि यह बात तो मानी गई है कि हां हमारी पार्टी के लोग थे।

जिन्होंने इस काम में बहुत बुरी तरह से हिस्सा लिया था। मैं आपसे अर्ज कर रहा था कि बाबरी मस्जिद के लिए तो इस इलेक्शन में माफी मांगी गयी थी क्योंकि वह समुदाय इतनी बड़ी तादाद में है कि इनका खयाल था कि माफी मांगने के कारण वोट मिल जाएंगे। सिख समुदाय छोटा है, इसलिए अकाल तख्त गिराये जाने की, ऑपरेशन ब्ल्यू-स्टार की माफी नहीं मांगी गयी। यह सारा वोट का तमाशा है। हमें इस बात का अफसोस है कि यह सब वोट के लिए किया जा रहा है।

BHAJAN SHRI BHAJAN LAL (KARNAL)

श्री भजन लाल (करनाल): बरनाला साहब, एक मिनट की माफी चाहूंगा। सोनिया गांधी जी जब चंडीगढ़ गयी थीं तो एक लाख लोगों की मीटिंग में उन्होंने यह कहा था कि जो हरमंदिर साहब में हुआ, उसका मुझे खेद है।

PROF. PREM SINGH CHANDUMAJRA (PATIALA)

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमजरा (पटियाला) : यही तो बात है कि वोट बटोरने के लिए ऐसा करते हैं। उस समय वे न तो प्रधान थीं और न पार्टी की मैम्बर ही थीं। अब इन्होंने उनको अध्यक्ष बनाया है।

SARDAR SURJIT SINGH BARNALA (SANGRUR)

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : अध्यक्ष जी, जैसा भजनलाल जी ने फरमाया है। जब चंडीगढ़ में इलेक्शन कम्पेन के लिए सोनिया जी गयीं तो उन्होंने कुछ शब्द कहे थे। उन शब्दों को कहने का कानून क्या था। सोनिया जी तो बहुत समय से दिल्ली में मौजूद थीं। वह पहले भी कह सकती थीं, लेकिन उन्होंने पहले नहीं कहा। मैं पूछना चाहता हूँ क्यों नहीं कहा? महज एक इलेक्शन मीटिंग में जाने के लिए उन्होंने कुछ शब्द बोले। वोट बटोरने के लिए ऐसी बातें कही गयीं। लेकिन उन शब्दों का फायदा नहीं हुआ। लोग समझ गये कि जो कुछ कहा गया है महज वोट बटोरने के लिए कहा है। यह वोट की राजनीति है और इसके अलावा कुछ नहीं है।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Mr. Minister, there is an announcement. Please take your seat for a minute.

In pursuance of the decision taken in the Meeting with Leaders of Parties and Groups held on 18th November, 1997, 24 Members, under Rule 377, are being allowed to raise matters per day. As per that decision, Members are to read only the brief subject of their notice given by the Secretary and the text of the matter will be treated as laid on the Table.

SHRI S. JAIPAL REDDY : Sir, let Shri Surjit Singh Barnala complete his speech. We can take it up after his speech is over.

MR. CHAIRMAN: All right. We will take it up after Shri Surjit Singh Barnala completes his speech.

SARDAR SURJIT SINGH BARNALA (SANGRUR)

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : मैं अर्ज कर रहा था कि पंजाब के हालात ऐसे बने और बी.जे.पी. और शिरोमणि अकाली दल न केवल पार्लियामेंटरी इलेक्शन में एक हुए वरन् इससे पहले असेम्बली के इलेक्शन में भी उन्होंने इकट्ठे होकर चुनाव लड़ा। कॉमन मिनिमम प्रोग्राम एसेम्बली से पहले इश्यू किया गया और उस बेसिस पर हम इलेक्शन लड़े और बी.जे.पी. और शिरोमणि अकाली दल को साझा सरकार बनी। इस वक्त भी ऐसा ही हुआ कि पंजाब में शिरोमणि अकाली दल एक साथ पार्लियामेंटरी इलेक्शन लड़े और एक क्लीन स्वीप पंजाब में हुई। मैं यह कहना चाहूंगा कि पंजाब में हमारे इकट्ठा होने की वजह से ऐसा माहौल बना है। ममता जी कह रही थीं कि यहां कोशिश यह होती रहती है कि लोगों को एक दूसरे से दूर करो। वह हिंदू और मुस्लिम की बात कह रही थीं, लेकिन पंजाब में कोशिश हो रही थी कि हिंदुओं और सिखों को दूर कर दिया जाए, जो सदियों से इकट्ठे रहते चले आ रहे हैं। उनको अलग करने का प्रयत्न किया जा रहा था लेकिन उनको कामयाबी नहीं मिली। बी.जे.पी. और शिरोमणि अकाली दल के इकट्ठा होने से पंजाब में हिंदू और सिख इकट्ठा हुए हैं। वहां पर ऐसा माहौल और भाईचारा बना है जैसा संत हरचंद सिंह लोंगोवाल कल्पना किया करते थे।

... (व्यवधान)

SHRI BALRAM JAKHAR (BIKANER)

श्री बलराम जाखड़(बीकानेर) : हिन्दू और सिख दोनों भाई हैं। एक बाप के दो बेटे हैं। उनको अलग करने की न कभी कोशिश हो सकती है, न की गई, इसको ध्यान में रख कर हम पर मेहरबानी करें।

SARDAR SURJIT SINGH BARNALA (SANGRUR)

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : हो तो नहीं सकती लेकिन मैं कह रहा था कि कोशिश की गई। लेकिन उसमें कामयाबी नहीं मिली। अगर मैं यह कहूँ कि पंजाब देश की सबसे पीसफुल स्टेट है तो यह कहना गलत नहीं होगा। वहाँ अभी लोक सभा का इलेक्शन खत्म हुआ। पंजाब सबूब में एक भी खून-खराबे का केंस नहीं हुआ जबकि हिन्दुस्तान में ६५ लोग इस दौरान मारे गए। आप देखते रहे हैं कि बहुत से सबूबों में क्या-क्या होता रहा? लेकिन पंजाब में मोस्ट पीसफुल इलेक्शन हुए। इसके लिए हम इलेक्शन कमीशन को, पंजाब सरकार और पंजाब के लोगों को धन्यवाद देना चाहते हैं। वहाँ माहौल ऐसा बन गया कि पीसफुल इलेक्शन हुए, कहीं रीगिंग नहीं हुई, कहीं कोई मार-पीट नहीं हुई, किसी किस्म की धक्का-मुक्की नहीं हुई। वहाँ बहुत आराम से इलेक्शन हुए। इसका नतीजा आप देख रहे हैं कि दूसरी जगहों से भाग-भाग कर लोग वहाँ आ गए हैं।

... (व्यवधान)

इलेक्शन के रिजल्ट आने के बाद कोशिश हुई कि किसी ढंग से बी.जे.पी. और उसके सहयोगी दलों को बाहर रखा जाए। श्री जार्ज फर्नान्डीज इनके मेनिफेस्टो पढ़-पढ़ कर बता रहे थे कि सभी पार्टियों का कैसा मेनिफेस्टो था, ये कैसे-कैसे एक दूसरे के खिलाफ लड़ कर आए थे और खास करके सभी कांग्रेस के खिलाफ लड़ कर आए थे लेकिन यत्न यह हो रहा था कि किसी तरह बी.जे.पी. को बाहर रखा जाए, भले ही कांग्रेस की सरकार बन जाए। सोमनाथ बाबू चले गए हैं। उनकी और उनकी पार्टी की बड़ी कोशिश रही, उनके लीडर मेरे हमनाथ हैं, उन्होंने बहुत कोशिश की कि कांग्रेस की सरकार बन जाए तो अच्छा है, हम फिर सपोर्ट कर देंगे। वह उनके खिलाफ बहुत जबर्दस्त लड़ाई लड़ कर आए थे। पता नहीं इनका सैकुलरिज्म कैसा है? मैं अभी इस सैकुलरिज्म की कहानी सुना कर हटा हूँ। वह सैकुलरिज्म १९८४ में हिन्दुस्तान के लोगों ने देखा, जब गलियों और बाजारों में सिखों को मारा गया, यह इनका सैकुलरिज्म है, जब देश के बहुत पवित्र स्थान को इस्तेमाल करने के लिए फौज भेज दी गई, यह इनका सैकुलरिज्म है। उस सैकुलरिज्म के नाम पर यह इकट्ठे होना चाहते थे और कहते थे कि कांग्रेस की सरकार बन जाए। यूनाइटेड फ्रंट का सरकार बनाने का हाल नहीं था। वे टूट चुके थे। टी.डी.पी. ने कह दिया कि हम कांग्रेस के साथ नहीं जा सकेंगे। ए.जी.पी. ने कह दिया जबकि उनके सदस्य यहाँ तो नहीं आए लेकिन बतौर पार्टी उन्होंने कह दिया हम इनके साथ नहीं जाएंगे। उन्होंने इनका व्यवहार देख लिया। उन्होंने इनकी सीधे कारगुजारी देख ली है। ऐसा ही जम्मू-कश्मीर की नेशनल कान्फ्रेंस पार्टी ने कहा कि हम इनके साथ कोई ताल्लुक नहीं रखेंगे। ऐसे हालात में लोग चाहते हैं कि यह सरकार चलनी चाहिए और बार-बार इलेक्शन नहीं होने चाहिए। मेरे ख्याल में कोई भी दुबारा से इलेक्शन नहीं चाहेगा। मेरे ख्याल में ३०० के करीब नए मੈम्बर यहाँ आए हैं। पिछली दफा भी जो नए मੈम्बर चुन कर आए थे, वे राष्ट्रपति जी के पास इकट्ठे होकर गए थे। उन्होंने उनसे कहा कि कोई रास्ता निकालिए जिससे यह लोक सभा भंग न हो सके लेकिन कोई ढंग नहीं निकला और लोक सभा भंग हो गई। हिन्दुस्तान के लोग बार-बार ६ महीने के बाद, साल-डेढ़ साल के बाद इलेक्शन नहीं चाहते हैं। यहाँ जो सदस्य बैठे हैं, कोई ऐसा नहीं होगा जो यह कहेगा कि इलेक्शन दोबारा होने चाहिए। सभी लोग यहाँ बैठे हैं। यहाँ बहुत लायक लोग चुनकर आए हैं। हमें कोई ढंग निकालना चाहिए।

जैसे राज्य सभा की मियाद छः साल के लिए होती है, उसी तरह लोक सभा में भी पांच साल की मियाद होनी चाहिए, भले ही कोई सरकार बने या न बने। इसके लिए कांस्टीट्यूशन अमेंडमेंट हमको करना चाहिए और ऐसी सलाह सारे लोग बनाइए। कोई न कोई बात ऐसी जरूर करनी चाहिए जिसका फायदा सदस्यों को हो और जिसको देश के लोग चाहते हैं।

मैं कुछ बातें रीजनल पार्टीज के बारे में कहना चाहूँगा क्योंकि मैं एक रीजनल पार्टी से आता हूँ। रीजनल पार्टीज क्या चाहती थीं? वे चाहती थीं कि स्टेट्स को ज्यादा अधिकार दिये जाएं। उनको आटोनोमी होनी चाहिए कि वे अपना थोड़ा बहुत काम कर सकें। हम पहले यही कहते थे कि देश के संविधान का ऐसा ढांचा हो, फेडरल स्ट्रक्चर हो, तो इसी बात पर हमको कहा जाता था कि ये अलगाववाद की बात कर रहे हैं, सेपैरेशन की बात कर रहे हैं, देश से अलग होना चाहते हैं। ऐसा इल्जाम बड़ी पार्टियाँ हम पर लगाती रहीं। रीजनल पार्टीज के कनक्लेव होते रहे। उनमें सभी पार्टियों की यही धारणा थी कि स्टेट्स के अधिकार कुछ न कुछ और बढ़ने चाहिए। आज वह धारणा सभी की बन गई है। रीजनल पार्टीज को कुछ इंफोटेन्स मिली है जिनको दूर रखा जा रहा था कि इनका कोई काम नहीं है। मेरे से पहले यहाँ पर पढ़कर सुनाया गया कि रीजनल पार्टीज देश को नुकसान पहुँचाएंगी। ये कहते हैं कि स्टेट्स स्ट्रॉंग होने चाहिए। आप सभी ने कहा कि जब स्टेट्स स्ट्रॉंग होंगी तभी सेन्टर स्ट्रॉंग होगा। यही बात कहते हुए हमको २७ साल हो गए। वही बात आहिस्ता-आहिस्ता सारे देश ने स्वीकार की है। अभी वाजपेयी जी बोल रहे थे कि हम स्टेट्स को ज्यादा अधिकार देंगे। उस तरफ बात चली है। अधिकारों की बात चली है, आटोनोमी की बात चली है और अब फेडरल स्ट्रक्चर की सोच होगी। यह कहा गया है कि सरकारिया कमीशन रिपोर्ट को लागू किया जाएगा और बहुत साल हो गए। बहुत मुश्किल से सरकारिया कमीशन बैठया था। हम लोगों ने मांग की थी और कमीशन बैठया गया। कमीशन ने मेहनत करके रिपोर्ट तैयार की। दो बड़े-बड़े वोल्यूम बन गए लेकिन उनको पता नहीं कहाँ छिपा दिया, कितना गर्व उस पर चढ़ गया। दस साल किसी ने उसको नहीं देखा। अब आहिस्ता-आहिस्ता जो पिछली सरकार बनी थी, उसने कहना शुरू किया था कि सरकारिया कमीशन पर अमल किया जाएगा, फेडरल स्ट्रक्चर की तरफ हम कुछ काम करेंगे, स्टेट्स को ज्यादा पावर देंगे। यूनाइटेड फ्रंट की सरकार ने यह कहना शुरू किया था और मुझे उम्मीद है कि वह जारी रहेगा।

मैं अर्ज करना चाहता हूँ कि बार-बार सरकारें तोड़ने का तजुर्बा बहुत हो गया, बहुत देख लिया। लोगों ने उसको पसन्द नहीं किया। कल इस बहस के बाद वोट होने वाला है। आप फैसला करिये कि ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे लोगों को लग कि ये अब भी सरकार तोड़ना चाहते थे। मैं आप सभी से विनती करूँगा कि कल पॉजिटिव वोट होना चाहिए, सरकार को कायम रखने का वोट होना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

">17.51 hrs.

कुमारी मायावती : माननीय अध्यक्ष जी, भा.ज.पा. सरकार द्वारा साम, दाम, दंड और भेद का रास्ता अपनाकर विश्वास मत हासिल करने की कोशिश की गई है और ऐसी सरकार द्वारा यहाँ रखे गए विश्वास मत प्रस्ताव के खिलाफ बोलने के लिए मैं खड़ी हुई हूँ। माननीय राष्ट्रपति जी ने जब प्रधान मंत्री जी को मिलने के लिए बुलाया और यह कहा कि आपको समर्थन में जिन पार्टियों की चिट्ठियाँ आपको प्राप्त हुई हैं, उनको आप हमें दे दें ताकि हम आपको सरकार बनाने के लिए दावत दे सकें। जिस दिन माननीय राष्ट्रपति जी ने प्रधान मंत्री जी के सामने यह प्रस्ताव रखा, उसी के अगले दिन भारतीय जनता पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने जो माननीय प्रधान मंत्री जी के बहुत नजदीक हैं, मुझे प्रातः लगभग आठ बजे टेलीफोन कर के यह बात की कि आप यदि हमारी सरकार में शामिल हो जाएँ, तो हम आपको गृह मंत्री बना सकते हैं और आपकी पार्टी के जो चार और सदस्य हैं उनमें से भी हम किसी को मिनिस्टर बना सकते हैं। मैंने माननीय प्रधान मंत्री जी के करीबी माने जाने वाले जो भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं, उनसे यह कहा कि हमने भारतीय जनता पार्टी को दो बार आजमाया है।

हमने भारतीय जनता पार्टी को दो बार आजमाया है। अब हम तीसरी बार नहीं आजमायेंगे। भारतीय जनता पार्टी मायावती को गृह मंत्री तो क्या प्रधान मंत्री का भी ऑफर देगी तो भी हम भारतीय जनता पार्टी के साथ हाथ मिलाने वाले नहीं हैं। जब मैंने यह बात भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता को टेलीफोन में कहा तो वे बड़े दुखी हुए। दूसरे दिन मुझे फिर टेलीफोन आया। तीसरे दिन भारतीय जनता पार्टी के दूसरे वरिष्ठ नेता ने मुझे टेलीफोन करके फिर ऑफर दिया और इतना ही नहीं बल्कि हमारी पार्टी के जो दूसरे सांसद हैं, उनको भी मंत्री पद का लालच दिया। उनको रिश्त देने की भी कोशिश की। लेकिन बहुजन समाज पार्टी के सांसद भारतीय जनता पार्टी के लालच में नहीं आये, उनके बहकावे में नहीं आये।

मैं माननीय सदन को यह बताना चाहती हूँ कि जिस दिन भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रधान मंत्री के पद की शपथ ली, उसी दिन मैंने दिल्ली दूरदर्शन पर यह खबर सुनी कि मायावती के खिलाफ फ्लोट पम्पों के घोटाले को लेकर सी.बी.आई. ने मामला दर्ज किया है। मैं यह बताना चाहती हूँ कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा साम, दाम, दंड, भेद आदि इस्तेमाल करने के बाद भी जब मैं उनके चक्कर में नहीं आई तो मेरे ऊपर भ्रष्टाचार का फर्जी मामला सी.बी.आई. द्वारा दर्ज कराकर, पूरे देश में मेरी इमेज को बिगाड़ने की कोशिश की गई। मेरे ऊपर पॉलिटिकल प्रेशर डालने की कोशिश की गई जिससे मायावती डर जाये, घबरा जाये और दबाव में आकर जब विश्वास मत का मौका आये तब उस मौके पर हमारे समर्थन में वोट दे दें।

सभापति जी, मैं आपको बताना चाहती हूँ कि मायावती घबराने वाली नहीं है, किसी लालच में आने वाली नहीं है। बहुजन समाज पार्टी ने यह फैसला लिया है। भारतीय जनता पार्टी ने पॉलिटिकल प्रेशर में सी.बी.आई. को मेरे खिलाफ इस्तेमाल किया है। यह गलत कार्य उनको बहुत महंगा पड़ेगा। यह बात मैं उनको बताना चाहती हूँ। मैं उनको यह बताना चाहती हूँ कि जिस मामले को लेकर, पॉलिटिकल प्रेशर बनाकर मेरे खिलाफ मामला दर्ज कराया

गया, वह मामला मेरे शासन काल का नहीं है। यह मामला प्रेजीडेंट रूल का है। वर्ष १९९५ का है। इसमें मायावती किधर से आ गयी। इससे साफ जाहिर होता है कि पोलिटिकल प्रेशर बनाकर विश्वास मत के मोके पर आपने हमारा वोट लेने की कोशिश की। हमें डराने, धमकाने की कोशिश की। इस कारण हम भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा रखे गये विश्वास मत का विरोध करते हैं।

दूसरा, हम इस प्रस्ताव का विरोध क्यों करते हैं? बहुजन समाज पार्टी क्यों करती है क्योंकि भारतीय जनता पार्टी विश्वास लायक पार्टी नहीं है। भारतीय जनता पार्टी भरोसे लायक पार्टी नहीं है। इसके बारे में मैं बताना चाहूँगी कि वर्ष १९९६ में जब उत्तर प्रदेश में विधान सभा के लिए इलेक्शन हुए और रिजल्ट निकला तो किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। जिसके कारण किसी भी पार्टी की सरकार नहीं बन सकी और उत्तर प्रदेश में फिर से प्रेजीडेंटस रूल लगा। जब उत्तर प्रदेश में प्रेजीडेंटस रूल लगा तो भारतीय जनता पार्टी के लीडर माननीय काशी राम जी से मिले और कहा कि बेहतर होगा कि हम मिलजुलकर सरकार बनायें। बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं ने यह फेसला लिया।

... (व्यवधान)

18.00 hrs.

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

संसदीय कार्य मंत्री तथा पर्यटन मंत्री श्री मदन लाल खुराना : सभापति महोदय, छः बजे गए हैं। सभी लीडर्स की मीटिंग में यह तय हुआ था कि यह डिबेट रात तक चलेगी। दोनों पक्षों से काफी लोगों ने बोलने के लिए नाम दिए हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि सदन की कार्यवाही तीन घंटे आगे बढ़ा दी जाए।

हमने यहां रात्रि डिनर का इंतजाम किया है। इसलिए सभी मैम्बर्स, मीडिया पर्सन्स और सेक्रेटेरिएट के स्टाफ के लिए ७.३० बजे से खाने का प्रबन्ध है।

MR. CHAIRMAN : Is it the sense of the House to extend the time of the House?

... (Interruptions)

SHRI LALU PRASAD (MADHEPURA)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। हमारे खुराना जी भोजन के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। लेकिन भोजन में नमक भी मिला हुआ होगा। इसलिए हम उसे नहीं खाएंगे क्योंकि यदि नमक खा लेंगे तो गड़बड़ हो जाएगी।

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना : यह नमक हमारा नहीं है, यह पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्ट्री का नमक है और हम सब उसके परिवार के सदस्य हैं। इसलिए उसमें कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए। (व्यवधान)

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI)

श्री शरद पवार : सभापति महोदय, हाउस को एक्सटेंड करने में हमें कोई ऐतराज नहीं है लेकिन मेरा यह सुझाव है कि लालू जी के लिए बिना नमक का खाना रखा जाए। (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: All right. The time of the House is extended for another two hours, that is, up to 8.00 p.m.

अभी आठ बजे तक बढ़ाया है, उसके बाद फिर देख लेंगे।

... (व्यवधान)

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : मैं बता रही थी कि जब उत्तर प्रदेश में किसी भी पार्टी को ऐम्सोल्व्यूट मेजोरिटी नहीं मिली तो फिर से प्रेजीडेंट रूल लगा। लेकिन उसके बाद भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अपने कुछ साथियों के माध्यम से बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान्यवर काशी राम जी से मिले और यह कहा कि प्रेजीडेंट रूल से बेहतर होगा कि हम मिल-जुलकर सरकार बनाएं। उसमें यह तय हुआ था कि पहले छः महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार चलेगी और अगले छः महीने भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में मिली-जुली सरकार चलेगी। जब पहले छः महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार चली तो हमने छः महीने के शासनकाल में उत्तर प्रदेश में समाज के हर वर्ग की

... (व्यवधान)

SHRI PRAKASH VISHWANATH PARANJPE (THANE)

श्री प्रकाश विश्वनाथ परंजपे (ठाणे) : विषय क्या है और बात क्या हो रही है। ... (व्यवधान) ये सदन का समय बर्बाद कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

SHRI ASHOK PRADHAN (KHURJA)

श्री अशोक प्रधान : हम इनको उत्तर प्रदेश में भुगत चुके हैं।

MR. CHAIRMAN : Please sit down.

... (व्यवधान)

SHRI AKBAR AHMAD (AZAMGARH)

श्री अकबर अहमद डम्पी (आजमगढ़) : मैं यह बात बी.जे.पी. के लोगों से पूछना चाहता हूँ

... (व्यवधान)

यह बहुत बड़ा अहम मसला है।

... (व्यवधान)

यह बहुत बड़ी साजिश थी।

... (व्यवधान)

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री रामदास आठवले (मुम्बई उत्तर मध्य) : अभी बंगाल की बात हुई, अभी जार्ज साहब ने मेनीफैस्टोज़ की बात की, अभी उधर से तमिलनाडू की बात हुई।

... (व्यवधान)

18.06 hrs. (Mr. Speaker in the Chair)

SHRI MITRASEN YADAV (FAIZABAD)

श्री मित्रसेन यादव (फैजाबाद) : माननीय अध्यक्ष जी, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, जरा सुन लें। अभी महामहिम राष्ट्रपति ने जो अपना अभिभाषण दिया है, उसकी पत्रिका को पेश करते हुए माननीय प्रधान मंत्री और उनके पक्ष के लोगों ने चरित्र के बारे में प्रस्तुत किया है। अब इनके चरित्र के बारे में मायावती जी कोट कर रही हैं तो उनको आपलित नहीं होनी चाहिए। वे भी तो उसी पाईट पर हिट कर रही हैं, जिसके बारे में आप रोज कहते हैं।

MR. SPEAKER: Please take your seat. This is not good. The Chair has not permitted you.

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती : माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सत्ता पक्ष के लोगों को यह बताना चाहती हूँ कि सच्चाई कड़वी लगती है, लेकिन आज मैं सच्चाई बताकर ही रहूंगी, चाहे आप कितना भी हल्ला-गुल्ला करने की कोशिश करें।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं भारतीय जनता पार्टी के करेक्टर के बारे में बता रही थी कि भारतीय जनता पार्टी विश्वास करने लायक पार्टी नहीं है। इसी संदर्भ में मैं एग्जाम्पल दे रही थी कि जब

... (व्यवधान)

यह तय हुआ कि पहले छह महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार चलेगी और अगले छह महीने भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में चलेगी। लेकिन जब पहले छह महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार बनाने की बात आई तो उसमें यह भी तय हुआ था कि जब बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार बनेगी तो मुख्य मंत्री बहुजन समाज पार्टी के कोटे से बनेगा। लेकिन विधान सभा का स्पीकर भारतीय जनता पार्टी के कोटे से बनेगा। हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं की बात मानकर छह महीने के शासन काल में भारतीय जनता पार्टी के स्पीकर को कबूल किया। उनके साथ मिल जुलकर सरकार बनाई, लेकिन जब छह महीने पूरे होने जा रहे थे तो हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं को यह कहा था कि आज छह महीने पूरे होने जा रहे हैं, हम अपने वायदे के मुताबिक आपको सत्ता सौंपेंगे, लेकिन हमारी भी एक शर्त है। जब अगले छह महीने आपके नेतृत्व में सरकार चलेगी तो मुख्यमंत्री आपका होगा, लेकिन अगले छह महीने के लिए विधान सभा का स्पीकर बहुजन समाज पार्टी के कोटे से बनना चाहिए। जब यह बात हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं के सामने रखी, तब भारतीय जनता पार्टी के

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please speak about the Confidence Motion, not about Uttar Pradesh. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please take your seats first.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER: This is not good. Please take your seats first.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Shri Arif Mohammad Khan, please take your seat. The hon. lady Member can continue to speak.

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती : माननीय अध्यक्ष जी, जब मैं भारतीय जनता पार्टी के करेक्टर के बारे में बता रही हूँ तो सत्ता पक्ष के लोगों को बड़ी तकलीफ हो रही है। लेकिन मैं अपनी बात रखकर ही रहूंगी, चाहे ये कितना भी हल्ला-गुल्ला करे। मैं बता रही थी कि जब हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं को यह कहा कि हम अपने वादे के मुताबिक छः महीने पूरा होने पर आपको सत्ता सौंप देंगे। लेकिन हमारी भी एक शर्त है कि अगले छः महीने के लिए तो उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री आपके कोटे से बनेगा, लेकिन विधान सभा का स्पीकर बहुजन समाज पार्टी के कोटे से बनना चाहिए। जब यह बात हमने रखी तो भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं ने हमारी इस शर्त को मानने के बजाए दिल्ली में पार्लियामेंट एनेक्सी में प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई। जिसमें श्री एल.के. आडवाणी और श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा इनके दूसरे साथी भी मौजूद थे। उसमें हमारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान्यवर कांशी राम जी और मैं भी मौजूद थी। उस प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एल.के. आडवाणी जी ने प्रेस मीडिया के माध्यम से पूरे देशवासियों को यह आश्वासन दिलाया था कि भारतीय जनता पार्टी किसी भी पार्टी के विधायक को नहीं तोड़ेगी। भारतीय जनता पार्टी स्पीकर की पावर का दुरुपयोग नहीं करेगी। भारतीय जनता पार्टी के कोटे से यदि स्पीकर एज इट रहता है तो हम विश्वास दिलाते हैं प्रेस मीडिया के माध्यम से पूरे देशवासियों को कि वे अपनी पावर का दुरुपयोग नहीं करेंगे और किसी भी पार्टी के विधायकों को नहीं तोड़ेंगे। हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं की इन बातों पर भरोसा करके छः महीने पूरे होने पर अपने वादे के मुताबिक इनको सत्ता सौंप दी। लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है कि सत्ता सौंपने के बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने हमने जो छः महीने के शासनकाल में दलितों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के हित में काम किए थे, यही नहीं उत्तर प्रदेश में सर्वसमाज के हित को ध्यान में रखते हुए जो भी हमने काम किए थे और महत्वपूर्ण फैसले लिए थे, उनको एक-एक करके बदलना शुरू कर दिया। इसके बाद हमने इनसे समर्थन वापस ले लिया और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने।

उन्होंने बहुजन समाज पार्टी ही नहीं, कांग्रेस पार्टी और अन्य दलों के विधायकों को भी तोड़ा और अपनी पावर का दुरुपयोग किया। इतना ही नहीं, भारतीय जनता पार्टी कहती है कि हम भ्रष्टाचार के खिलाफ हैं। हमारे विधायकों को तोड़ा गया और खरीदा गया, तो वह पैसा कहां से आया।

SHRI SATYA PAL JAIN : I am on a point of order. The conduct of the Speaker of U.P. cannot be discussed in this House. (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please conclude.

SHRI SATYA PAL JAIN : Sir, I am on a point of order.

MR. SPEAKER: What is your point of order?

... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please be seated.

Shri Satya Pal Jain, what is your point of order?

SHRI SATYA PAL JAIN : I am on a point of order under rule 352. We cannot discuss the conduct of the Speaker of the Uttar Pradesh Legislative Assembly in this House. She has used some derogatory remarks and those remarks should be expunged. (Interruptions)

* Expunged as ordered by the Chair.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L. K. ADVANI): Mr. Speaker, Sir, no references can be made to the conduct of the Speaker of any Legislature in this House. It should be expunged.

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती : ये कहते हैं कि राजभवन को राजनीति से दूर रखेंगे। मैं पूछना चाहती हूँ कि आप राजभवन को राजनीति से दूर रखने की बात करते हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश के स्पीकर महोदय ने स्पीकर के पद को राजनीति के लिए इस्तेमाल किया। (व्यवधान)

SHRI L. K. ADVANI: Sir, what is your ruling?

MR. SPEAKER: I will go through the record and if there is anything objectionable, it will be expunged.

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Kumari Mayawati, only four minutes have been allotted to your party. Please conclude.

... (Interruptions)

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती : यह दलित विरोधी पार्टी है और इतना ही नहीं, परम पूज्य बाबा साहब डा. अम्बेडकर, जिन्होंने देश का संविधान बनाया,

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please sit down.

... (Interruptions)

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती : उनकी याद में हमारी सरकार ने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बाबा साहब के नाम पर एक बहुत बड़ा पार्क बनवाया था। लेकिन यहाँ

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: This will not go on record.

(Interruptions) *

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती (अकबरपुर): भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने निर्माण कार्य बंद कर दिया और बिजली कटवा दी।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: This will not go on record.

(Interruptions) *

* Not recorded.

** Expunged as ordered by the Chair.

MR. SPEAKER: Now, I call Shri Vaiko to speak.

(Interruptions) *

MR. SPEAKER: Only Shri Vaiko's speech will go on record. Kumari Mayawati's speech will not go on record.

(Interruptions) *

MR. SPEAKER: This will not go on record.

(Interruptions) *

MR. SPEAKER: Kumari Mayawati, please take your seat.

* Not recorded.

">SHRI VAIKO (SIVAKASI): Mr. Speaker, Sir, I am thankful to you for the opportunity you have given to me to take part in the deliberations of this august Chamber. Today's debate in which I participate is going to be recorded in the annals of the political history of India as one of the very significant debates so as to decide the direction of its onward march. The country stands at the crossroads of the history. The political destiny of this great country has been decided by about 370 million people of this country, men and women, aged and the youth, haves and havenots. They exercised their franchise on the 16th, 22nd and 28th February. The outcome of the polls started coming in in the television since the evening of 2nd March. Of course, elections took place on 7th March also in Jammu & Kashmir. The people have given their mandate for the BJP and its alliance partners to form the Government.

I have been listening with rapt attention to the speeches made by Shri Sharad Pawar, Shri Somnath Chatterjee and Shri Rajesh Pilot. They were questioning the very verdict of the people as if the Bharatiya Janta Party does not have a majority. At times, in their speeches they used harsh epithets and strong vocabulary even though they know that they can never defeat this Confidence Motion, voting for which is going to take place tomorrow. This has drawn the attention of the people of India and also the political observers throughout the world. One thing is certain. Our friends from the other side could not find a sense of doubt or not even complacency in our camp. They could witness and understand the inflexible purpose and sure proof of well grounded confidence in the final outcome.

Sir, the national agenda of the BJP and its allied partners was criticised by our esteemed friends here. This country commands tremendous reputation and respect before the eyes of the world as a country committed to democracy, as a country which has withstood the trials and tribulations over time and as a country which carries the flag of Gettysberg ideal of 'of the people, for the people and by the people'. Regarding the national agenda for governance, some people say that there is a hidden agenda. But we have put the agenda before the country after deep deliberations and dialogue and a considerable thinking from our side. We have participated in the dialogue, placed our own points of view and finally evolved this agenda. They say that the BJP and its allied partners did not get a majority. The hon. President who is the sheet-anchor of this democratic polity, with right earnestness, invited Shri Atal Bihari Vajpayee to form the Government.

Sir, we follow a system. We have followed the British parliamentary system. The cardinal principle of the British parliamentary system was followed by our forefathers and in their wisdom, when they evolved this Constitution, they have followed the principle of first past the post, whether he or she is the winner. That is the principle. I do not say that it is the only perfect system. But this is the system which we have adopted. There are other systems. In France, unless they get more than 50 per cent, there will be another reconsideration again. Even in the United States of America, although a political party, whether the Republican or the Democrat, gets more votes in the States, it cannot get the chair of the President because of the electoral college system. Here, in India, first past the post is the medal winner. We should take into account that in many other constituencies, out of 630 million total voters, only 62 per cent of them have exercised their franchise. In some constituencies, the candidates who have won irrespective of the political parties, have got 30 per cent or 35 per cent, 40 per cent and even 28 per cent out of this 62 per cent. If you take into account and calculate the total voters of the constituency, they will be having 20 or 25 per cent. In some of the constituencies, the candidates who have won have got lesser votes than what other candidates put together have got. That is the system. So many representatives who have come here do not have 50 per cent of the franchise of their constituencies. The system of who comes the first or first past the post is the medal winner. So, from India, taken as one constituency, Shri Atal Bihari Vajpayee is the winner who first comes the post.

Even in the first general elections of 1952, late Pandit Jawaharlal Nehru, at his pinnacle of glory and fame inherited the legacy and credit of freedom struggle and Independence,

The Congress Party could not get 50 per cent of the total votes. Even in the year 1971, when the late Shrimati Indira Gandhi reached the height of political glory after the Bangladesh War, they could not get 50 per cent of the total votes. That is why I would say that she also had a minority Government in 1969. When Shri Narasimha Rao was invited to form the Government, first of all, they got 239 seats along with the allies.

Shri Atal Bihari Vajpayee was invited to form the Government. There is going to be a verdict of the House tomorrow. My humble wish is that the verdict of the people should be reflected by the verdict of the House. This House should reflect and respect the will of the people who have exercised their franchise in the polls. So, the House should reflect the verdict of the people.

They have levelled criticism about the formation of the Bharatiya Janata Party Front. More or less, many of them are pre-poll alliance partners. They have gone beyond their limits in their own way because they were defeated, in their own way because they could not form the Government, in their own way because they could not thrust their will and desire into the minds of the people. But they should not forget one thing. It is not only a multi-party system. We have now nurtured a multi-regional system in our Front which is one of the basic characteristics of the federal system. The question is about the ideology and the way of approach of the partners of the Bharatiya Janata Party Front.

I have the honour to belong to the Marumalarchi Dravida Munnetra Kazhagam. We cherish the ideals of the late lamented Anna. We do not compromise on our basic ideals. I would bring it to the attention of my esteemed hon. friend from that side. When we decided to join this Front after deep deliberation and thinking, we made this firm commitment in our minds: "Let us join this Front for the betterment of the country after witnessing what happened in this country for, more or less, five decades of the Congress rule."

I recall the historic conference of All-India Anna-DMK Silver Jubilee Conference which was held at the banks of river Tamiraparani. I was given a privilege to address more than a million people on 3rd January this year. Hon. Shri Lal Krishna Advani was also present on the dais at that time. The Conference was presided over by the supremo of All India Anna DMK, the then Chief Minister of Tamil Nadu, hon. Dr. Jayalalitha. I emphatically made one point that we are committed to the concept of secularism and have unshakeable confidence in the concept of secularism in its true letter and spirit.

I stated in my speech that let namaz be conducted in every Mosque, right from the Himalayas down to Kanyakumari, prayers may be conducted in every Church throughout the length and breadth of this country, pujas may be performed in all the temples, prayers may be held in Gurudwaras, in Bodhivihars, Jain temples and the message of rationalism may also be spread by the torch-bearers of rationalism without any hinderance and without offending anybody. This is the nucleus of secularism.

Sir, I stated that this is a multi-religious, multi-lingual and a multi-ethnic State. This country consists of different religions, different languages, different ethnic groups, different customs, different traditions...

AN HON. MEMBER: ... different nationalities as well.

">SHRI P. CHIDAMBARAM (SIVAGANGA): Mr. Speaker, Sir, on behalf of my party, I rise to oppose the Motion moved by the hon. Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee.

Sir, we are a parliamentary democracy. The duty of an Opposition is to oppose and if possible to depose the Government of the day. That does not mean that as long as the Government remains in office, the Opposition will not be reasonable or constructive or helpful or cooperative. But this system of parliamentary democracy can work only if there is an Opposition which is vigilant, an Opposition which is willing to oppose; an Opposition which is ready and willing to bear the responsibility of forming an alternative Government if the need arises; and an Opposition that will not hesitate to depose the Government of the day. This is the role which I believe Shri Vajpayee played when he was the Leader of the Opposition and this is the role that I wish Shri Sharad Pawar will continue to play as long as he is the Leader of the Opposition.

We begin today a new Lok Sabha. Tomorrow, we will vote. Shri Vajpayee may yet win the Vote of Confidence, which he did not in 1996. But, I wish the Government to know that this is not the only test. This is not the last test. This Government will be tested every day on the floor of the House. Therefore, it is better for all of us to recognise the nature of the mandate, the nature of this House.

Sir, there are many Members of this House who have served here much longer than I have. I have been here for almost 13 years. Never, never in the last 13 years has this House been virtually divided right down the middle.

It has had been a party with a massive majority as it was in 1984. It has had been a Government with support which made for it a large majority as was in 1989. There had been a Government which had a tenuous majority but which had support from a large number of others. Never in the last thirteen years had there been a Lok Sabha which had a line dividing the ruling benches and the Opposition benches running right down this corridor which is facing you. That is why I submit most humbly to all distinguished Members of this House, that we should understand the nature of this mandate.

Sir, the National Agenda for Governance starts like this. It says "The electorate has given its verdict BJP and alliance partners have unitedly won, we have the mandate to govern." Sir, I question this. No Party in this country was given a mandate by the people. The largest Party, the BJP has won less than one-third of the strength of this House. The people are unwilling to give a mandate to any Party. Less than one-third is all that they have given to the largest Party which went to the people on a slogan of a stable Government and an able leadership.

I have gone through the Manifesto of the BJP, there is not a word about regional parties. In fact please correct me if I am wrong in saying there is no reference to regional parties. There is no reference to a coalition. There is no reference to any alliance. The BJP went to the people in the hope that it would be elected with a majority. It came back to this House with less than one-third members. Even the National Agenda for Governance makes no reference to regional parties. It makes no reference to building an alliance between the national parties and the regional parties. It makes no reference to the phrase that we coined when we were in Government of "cooperative federalism". I think, therefore, we are falling into a grave error. We are not recognising this mandate. This mandate is a fractured mandate as it was in 1996.

Sir, there are in this country indigenous bone-setters. You come from the State of Andhra Pradesh. Puthoor, near Tirupati, is famous for indigenous bone-setters. How do they set bones? If you suffer a fracture, the indigenous bone-setters sometimes, not always, break a few more bones and then try to set them right.

SHRI HARIN PATHAK : You did it in 1991.

SHRI P. CHIDAMBARAM : My concern is this. Is hon. Shri Vajpayee trying to play the role of an indigenous bone-setter? I do not want to expatiate on this point.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI RAM NAIK): It is a plastic surgery.

SHRI P. CHIDAMBARAM : Thanks to television, thanks to the many many Channels, the last twenty days, have taken us virtually into the inner rooms of every Party.

Sir, a sober newspaper The Hindu day before yesterday in a front page article referred to the deals that the BJP was making. I am not using that word myself. I assume that Shri Vajpayee will not make any deals. But why does a newspaper like The Hindu describe actions of the BJP in the last twenty days as deals? Were not deals made in many States in this country in the last twenty days, the most recent one being in Himachal Pradesh? I ask Shri Vajpayee who promised us a stable Government and an able leadership to search his conscience and tell us whether deals were made or not.

The word 'deal' itself is not pejorative. A deal can be a transparent arrangement. A deal can be a common programme. A deal can even be a grand alliance like in Germany when the Christian Democrats and the Social Democrats came together. Were not deals made in the last twenty days in this country in order

to win the majority? Has not the BJP sent out a message that it is willing to pay any price to anybody; it is willing to meet any enemy or any foe; it is willing to arrive at any compromise; it is willing to forget every chapter of the past as long as it can be assured that it will remain in power? That is why, I oppose this Motion of Confidence.

Sir, in this very House, in 1995-96, the House was paralysed for 13 days on a scandal involving the Telecommunication Ministry. Sir, the number 'thirteen' has become a magic number. Shri Atal Bihari Vajpayee was the Prime Minister last time for 13 days. We formed a coalition initially of 13 parties. I find that the National Agenda also lists 13 parties. ... (Interruptions) This House was paralysed for 13 days. It was the height of cynicism that the gentleman involved was allotted the telephone symbol when he contested the elections. I thought, that was the height of cynicism. But we have scaled greater heights by inducting him into the Ministry, promising his son a Rajya Sabha seat, making all the members of his party Ministers in the Government.

I know, we cannot talk about the State Governments. We are the Parliament of India. If we cannot talk about governance in the States, what do we talk about? What is India? India is composed of States. The Union Government does not have any separate territory to govern. We have to talk about governance in the States. What about governance in UP of which Shri Mulayam Singh Yadav has eloquently spoken? Is the Prime Minister happy that his Government there has 95 Ministers? When poor Shri Anjaiah inducted 60 or 65 Ministers in Andhra Pradesh many years ago it was described as an 'Airbus Ministry'? What do we call this? ... (Interruptions) Mr. Prime Minister, the point that I am making is this. Is the BJP really concerned about good governance? Or, are we right in drawing this conclusion? I salute you for what you did in 1996 and I am disappointed for what is being done perhaps in your name, perhaps by others in your party, in 1998. The difference between 1996 and 1998 is too apparent to be ignored. Is the BJP today becoming a party willing to pay any price in order to remain in power? Is that the way you have understood this mandate? This mandate of the people of 1998 cannot be understood in that manner. It is a mandate for national parties and regional parties to work together. It is a mandate to reach across manifestoes, to reach across criticisms, to reach across the political dividing line and say "let us work together to build this country".

I am disappointed by the tone of Shri Geroge Fernandes. Did he win a single friend by his speech today? Was he able to make a single friend by the tone of his speech, contrast was the speech of Shri Barnala?

I think, this mandate is being misunderstood. And if you understand this mandate for a unitarian system, which, I believe, the BJP believes in, if you understand this mandate in that manner, you will use political parties and discard them as you like, like you did to Shrimati Lakshmi Parvathi in Andhra, like you will perhaps do to either Shri Chautala or to Shri Bansilal in Haryana. If the regional parties are being used and discarded in order to remain in power, I question your conclusion of this mandate and, therefore, as long as you understand this mandate in this manner, I have to oppose you and I oppose you.

19.00 hrs.

The next question, Sir, that I wish to raise is: what will we measure them by? They ask us to vote on what? Obviously they are not asking us to vote for them on the strength of their manifesto because they have given up many parts of their manifesto, at least, temporarily. I do not know when they will be revived. I do not know when they will be directed to revive it.

Only a few days ago, the RSS held a conclave, I believe, in Bangalore and this is what many newspapers reported. I am reading from a digest of these reports put forward by the Press Information Bureau after your Government took over.

"The RSS has asserted it would play an influential role in the functioning of the BJP-led coalition Government while conceding that its hands were tied on the Kasi, Madura and Ayodhya issues."

Sir, I quote: "At an appropriate time, the three issues would be settled through an Act of Parliament, the RSS General Secretary Mr. H.V. Sheshadri said."

Whose agenda is this? Is this the hidden agenda?

"The RSS would have preferred the BJP to form a Government on its own. Such a Government would not have put many issues on the back burner as has been done now, Sarsangh Chalak Rajendra Singh said yesterday. Thanks to the newspapers.

Is this the hidden agenda? The RSS in the same conclave said and I quote: "Foreign direct investment is not welcome into India and foreign institutional investors must be turned away". Is that the hidden agenda? What is the agenda? What is the programme? What is the plank on which they ask us our support? Obviously it is not their manifesto. But I suspect that there is a hidden agenda. You have a national agenda. You have the President's Address. Between the national agenda and the President's Address, there was enough time to make a considerable advance. Unfortunately, as many papers have reported, the President's Address was simply a reprint of the national agenda. Word by word, sentences were picked out. What do they want us to measure them by? Their national agenda said that foreign direct investment will be welcome in core industries and it will not be allowed in non-priority sectors. The President's Address dropped the last part of that sentence and the Finance Minister's speech introducing the Interim Budget dropped the last part. Is the omission significant or is it inadvertent? I do not know.

When they ask us for our support, they must put forward a coherent programme. There is a difference. And I am not trying to score a debating point here. There is a difference between the national agenda and the Common Minimum Programme as every newspaper has commented. I do not have to go very far. Take India Today, a magazine which broadly supported them during the election campaign and it has every right to support them. They have every right to support them. They have every right to editorially support them, every right to editorially say that theirs is perhaps the most likely party which can give a stable Government. Even that magazine in its editorial after the national agenda described it as vacuous, described it as simply empty words. There was no programme.

Contrast it with the CMP. I am not saying everything that we wrote in the CMP is right. I am not saying that is the last word on what a programme should be. But there is a vast qualitative difference between an agenda which they have put forward and a programme that we had put forward.

Even today Mr. Prime Minister, you are unwilling to come forward with a programme. The President's Address was an opportunity. The Finance Minister's speech introducing the Bill was an opportunity. But the Prime Minister did not take that opportunity. I suspect that he is unable or unwilling to put together a coherent programme.

Let me highlight one or two things. Again I am not trying to be critical. I am only trying to point out where we find them wanting.

There are many river disputes in this country. One such is the Cauvery dispute. There are two sides to it and every Member of Parliament will naturally speak up for the State he represents. There is a Tribunal. That Tribunal has given an Award. That Award has to be notified. For one reason or the other, - I include the Congress Government, I include the United Front Government, and, therefore, I am not scoring a point here. I am not trying to score a political point, - that Award has not been notified. That is the crux of the matter. There are rival positions. What is your programme? (Interruptions).

SHRI VAIKO : Shri Chidambaram, will you yield for a minute?

SHRI P. CHIDAMBARAM : I will yield to you in a minute. Let me just complete the thought. I include the Congress Government; I include the United Front Government. For one reason or the other, they were not been able to notify it.

What is your programme? The difference between an agenda and a programme is highlighted by this example. You do not say that the Award, under the law of today, has to be notified, nor do you say that the Award by virtue of supervening circumstances cannot be notified. What you say is that you would have a National Water Policy which will evolve a system for settlement of disputes. But that is not a programme. That has not satisfied anyone; that has not taken you far and that simply puts the issue on the backburner. You could have come forward with a programme. But you are unwilling to come forward with a programme. I could multiply the examples, but I will not do so because there is a constraint of time. You are asking us to support you on no programme at all.

In fact, a number of editorials have been written in the last few days. Where is the programme of this Party? Where is the programme of the Prime Minister? Where is the programme of this alliance? When you ask us to support you without a programme, it will mean that there is a hidden agenda and at an appropriate time, after discarding some of your present friends and, perhaps winning some new friends who are hiding behind the corner, you are likely to reveal your true agenda and without knowing your agenda, we cannot support you. We have to oppose your Government where there is no agenda or no programme.

SHRI VAIKO : May I know from my hon. friend, Shri Chidambaram what steps did he take for implementation of the Award? As a constituent party of the United Front Government when steps were taken not to implement the Award under the guise of talks, when the Tamils were betrayed, what role did he play as a constituent part of the United Front Government?

SHRI P. CHIDAMBARAM : My learned friend should know that not once but twice I said that both Governments could not notify the Award. I thought that the Prime Minister understood it; the Home Minister understood it and I am sure he will understand it in course of time. (Interruptions).

Finally, I have to oppose you because you started on a wrong foot. In the last few days many statements were made which undermine the confidence of the people of India. (Interruptions). I will take just as long as the hon. Speaker will allow me and I am not going to take longer time than my distinguished predecessor did.

We heard so many voices for fifteen days on television. So many people were speaking in so many voices. One of the pitfalls is of taking too long to form a Government and the pitfall is of having too many television channels.

We have heard some extraordinary statements. One of their Ministers said that the only trade left in Thailand was the flesh trade. As External Affairs Minister, Shri Vajpayee will have to answer it when he visits South-East Asian countries. Ministers have said that Foreign Direct Investment is not welcome to this country, Ministers have said that the rupee must go back to Rs.17 a dollar, as it was in 1990-91, Ministers today have said that there should be a lock-in period for Foreign Institutional Investment. I agree, others have corrected it. That is why their alliance looks like a Tower of babel. If nobody had corrected it, at least that would have been the policy. If one present Minister says that the rupee must be Rs.17 to a dollar and nobody corrects him or her, that would be the policy, but when you correct that, it becomes a Tower of Babel.

You are undermining confidence. Please remember that at any given time, the country's economy will have strengths and weaknesses. I have been a Minister here, I have been in the Opposition also. I have never exaggerated India's strength, I have never under-estimated India's weaknesses. In fact, 1996-97 was a good year, following two good years. We have reported 7.5 per cent growth. But 1997-98 was not a good year. 1997-98 has been a year of slowing down. We will probably end up with a growth of five to six per cent. But Mr. Prime Minister, you know, a hundred countries in the world and a hundred Prime Ministers will give one arm and one leg to have five to six per cent growth. It is not enough for India. India needs seven per cent growth. I congratulate you for the statement that India needs and will attain seven to eight per cent growth. I warmly congratulate you for accepting high growth as an ideal. But you cannot achieve that growth by undermining confidence. Whichever Government begins in this Lok Sabha - and your Government has made a beginning today - starts with tremendous advantages and, at the same time, with many disadvantages. One is not blind to the disadvantages. Growth has slowed down. There is no recession. It has slowed down to five to six per cent. Industrial growth has slowed down.

Thanks to the previous year of record agricultural harvest, statistically, last year's agricultural harvest will show a decline. The services sector continues to be buoyant. There are problems. Yet, please remember, In 1991, Dr. Manmohan Singh inherited a billion dollars foreign exchange. On 1st of June, 1996, the United Front Government inherited 17 billion dollars foreign exchange and in 1998, we leave to the Government of the day 24 billion dollars foreign exchange. Is that not an advantage? I would urge hon. Members not to venture adventurous statements on foreign exchange without understanding the nature of foreign exchange. They will understand it in course of time.

The second thing is inflation. In 1991, Dr. Manmohan Singh inherited an average inflation of ten per cent. In 1996, the United Front Government inherited an average inflation of 7.5 per cent, and we have left to the Government of the day an average inflation of not more than five per cent. Is that not an advantage? India's debt service ratio has come down to 24 per cent from a high of 35 per cent and India's debt to GDP ratio has come down to 20 per cent the lowest ratios achieved in the last many years. We will soon be rated not as a moderately indebted country but as a less indebted country. India's short term debt is less than seven per cent. Is that not an advantage? Instead of building confidence, instead of augmenting confidence, in the last fifteen days, the Ministers of your Government, the spokesmen of your Government have undermined confidence in India. Look at what happens to the institutional investment market.

Because of the elections, because of the high degree of political uncertainty, in November, December and January institutional investment was negative. In February, there was net institutional investment worth 200 million dollars. In March, the first week was positive, the second week was neutral and in the third week we are turning negative. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please wind up.

... (Interruptions)

SHRI P. CHIDAMBARAM : Please do not undermine their confidence. (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please wind up.

SHRI P. CHIDAMBARAM : Please do not undermine their confidence. On political issues, on economic issues and on international issues, statements made in the last 15 days have shaken their confidence in this country. For that reason, we have to oppose their Motion of Confidence.

Sir, I believe that we are at a stage in history where the Indian people are carrying on a number of political experiments. The whole nation looks like a laboratory. Every time an experiment is made it is unmade. Nothing is certain. A high degree of political uncertainty characterises India today as it did over the last two years. Therefore, whoever is in Government, whoever occupies authority, whoever is in opposition has to behave with a great degree of responsibility. I do not believe that our opposition to you is irresponsible, nor do I believe that your asking for our support under the circumstances is undeserved. But let us remember that we find ourselves in the middle of an experiment. A great political churning is going on in this country. I do not know what the churning will throw up.

I only want to draw your attention to some very thoughtful articles that have appeared recently in the Press - one by Prof. Kancha Yelliah of the Osmania University and one by Shri Pandian. The churning is throwing up a set of players and a set of parties which may go against the grain of democratisation in this country. I do not know where the BJP stands here, but I suspect that it stands for a unitarian system where plurality is crushed and plurality is ignored. That would be a great danger. I am not yet confident that you understand the plurality of India.

SHRI RAM NAGINA MISHRA (PADRAUNA)

श्री राम नगीना मिश्र (पडरौना): आपने तो देश को विदेशियों के हाथ में बेच दिया।

... (व्यवधान)

SHRI P. CHIDAMBARAM : I am not confident that you understand that India, today, is throwing up, the Indian people are throwing up a number of political parties because they are satisfied with none. There were 29 political parties in the last Lok Sabha. Now, there are 41 political parties. (Interruptions)

MR. SPEAKER: Shri P. Chidambaram, please wind up.

SHRI P. CHIDAMBARAM : I have no evidence at all that your Government understands the plurality of India. Therefore, I have to oppose your Government.

With these words, I submit that this Motion of Confidence should be defeated and I oppose this Motion.

">

">

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज): अध्यक्ष जी, आज सुबह से इस सदन में हमारी सरकार के विश्वास मत पर चर्चा चल रही है। विश्वास मत की चर्चा में विपक्ष के तैवर आक्रामक होना बहुत स्वाभाविक है किंतु इस बार की चर्चा में आक्रमण की बजाए सतर्क होने की बैचेनी ज्यादा दिखाई दे रही है। विपक्षी बेंचों से जो भाषण हुए हैं, उनमें से कुछ के स्वरों में सरकार न बना पाने की छटपटाहट थी तो कुछ की वाणी में सरकार चले जाने की हड़बड़ाहट थी। लेकिन मुझे खुशी है कि हमारी ओर से विश्वास मत रखते हुए प्रधान मंत्री जी ने आत्मविश्वास के साथ-साथ पूरे संयम और धीरज के साथ अपनी बात रखी।

मुझे दुःख हुआ, चिदम्बरम जी, आपने जॉर्ज साहब के भाषण का उल्लेख तो किया, किन्तु जिन्होंने विश्वास मत रखा था, उनके भाषण की ओर आपका ध्यान नहीं गया। प्रधान मंत्री जी के भाषण में, चिदम्बरम जी, आज के वर्तमान राजनीतिक हालात की चिन्ता भी थी, भारत की वर्तमान दुर्दशा की वेदना भी थी और सर्वानुमति से इन चीजों का निदान करने के लिए साथ-साथ चलने की अपील भी थी। अटल जी ने नेतृत्व में जो सरकार देश में बनी है, वह केवल मतदाताओं के जनादेश को लेकर नहीं बनी है, वह देश और विदेश में रहने वाले आम भारतीयों की शुभेच्छा को लेकर भी बनी है तथा उनकी शुभ-कामनायें और दुआयें लेकर भी बनी है। इसलिए मैं कहना चाहूंगी कि, यहाँ बैठे हुए कुछ लोगों को व्यक्तिगत रूप से यह सरकार पसन्द हो या न पसन्द हो, लेकिन लोकतन्त्र का तकाजा है कि हम इस जनादेश का आदर करें, इस जन-भावना का आदर करें।

महोदय, अटल जी को पूरे देश में प्रसिद्धि प्राप्त है। उससे सदन में बैठा हुआ कोई भी नेता अपरिचित नहीं है। आज केवल लोग विश्वास मत के परिणाम की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह विश्वास मत उन्हें मिले, इसकी दुआयें भी कर रहे हैं। आज शरद पवार जी ने अपने भाषण में कहा कि बीजेपी को केवल ३६ फीसदी वोट मिला है और यह जनादेश सरकार बनाने का नहीं है। मैं शरद जी को याद दिलाना चाहती हूँ, वे सदन में उपस्थित नहीं हैं, मैं आपके माध्यम से अपनी बात उन तक पहुंचाना चाहती हूँ कि, यदि जनादेश का मतलब ५१ फीसदी मत प्राप्त करके सरकार चलाना

है, तो हिन्दुस्तान के लोगों ने कभी भी कांग्रेस को सरकार बनाने का अधिकार नहीं दिया था। ४० वर्षों तक ३२ फीसदी मत प्राप्त करके आपने सरकार चलाई है और इस देश का ६८ प्रतिशत मतदाता आपके खिलाफ खड़ा रहा है, लेकिन...

PROF. P.J. KURIEN (MAVELIKARA): In the 1984 elections, the Congress Party had got 54 per cent vote. You check your record. Do not mislead the House.

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैंने इसीलिए ४५ में से ४० साल कहा है। कितने वर्ष ३२ फीसदी मत प्राप्त करके सरकार चलाई है - यह बताइए? क्या आपने ३२ फीसदी मत प्राप्त करके इस देश में वर्षों तक सरकार नहीं चलाई ? इसीलिए मैं कहना चाहती हूँ ... (व्यवधान) मैंने इसीलिए ४५ में से ४० वर्ष कहा है। १९८४ का चुनाव साधारण चुनाव नहीं था। मैंने वह पांच वर्ष निकालकर बात कही है। ३२ फीसदी मतों पर आपने इस देश में सरकार चलाई है। इसलिए ऐसा भ्रामक प्रचार करके आप जनभावना के साथ खिलवाड़ न करें और जनादेश का निरादर न करें।

अध्यक्ष जी, आज सुबह से आरोपों की झड़ी लग रही है और तीन बातें कही जा रही हैं - उत्तर प्रदेश का उदाहरण दिया जा रहा है, सुखराम जी का नाम लिया जा रहा है और जयललिता जी का उल्लेख किया जा रहा है। जहाँ तक उत्तर प्रदेश का सवाल है, मैं पूछना चाहती हूँ कि, सारी उग्र जिन चालों को चल कर आप सत्ता से चिपके रहे और हमारी एक बार की चाल से बोखला गए। जिन महानुभाव ने उत्तर प्रदेश के राजभवन से काम किया,

कोई भी आदमी उसका जवाब शराफत से नहीं दे सकता था। जिस तरह की चालें, कुचालें वे वहां बैठ कर चल रहे थे। वे धांधली पर धांधली करते जायें और सामने खड़ा हुआ मार खाता रहे - यही नैतिकता है, यही आदर्श है, यही सिद्धान्त है ?

...(व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH): Mr. Speaker, Sir, the conduct of the Governor cannot be discussed here. She is a responsible Minister. She should behave responsibly.

MR. SPEAKER: Please take your seat.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: This is not good. Please take your seat.

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदल लाल खुराना: उन्होंने गवर्नर महोदय का नाम नहीं लिया है। ... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI : Mr. Speaker, Sir, I am on a point of order. The conduct of the Governor cannot be discussed here in this House.

MR. SPEAKER: When your turn comes you can rebut it.

SHRI VIJAY GOEL (CHANDNI CHOWK)

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक) : अध्यक्ष जी, इसी सदन में रमेश भंडारी जी के कन्डक्ट पर चर्चा हुई है।

... (व्यवधान)

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) *

MR. SPEAKER: Please take your seat.

... (व्यवधान)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, जब वहां से मायावती जी स्पीकर के पूरे कंडक्ट की चर्चा करती हैं तब तो आप चुप रहते हैं। मैंने तो किसी का नाम नहीं लिया।

MR. SPEAKER: This is not good.

SHRI BHUBANESWAR KALITA (GUWAHATI): That has been expunged from the records. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: If there is anything objectionable, I will expunge it from the records.

... (व्यवधान)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, जिस तरह से संस्कृति ने हमें आदर्शों के लिए मरना सिखाया है उसी संस्कृति के नीतिकारों ने हमें यह भी बताया है कि हर बार मर कर आदर्शों की रक्षा नहीं होती, बहुत बार दुष्टों को मार कर आदर्शों की रक्षा की जाती है। इसीलिए पहली बार 'शठे शाठ्यम समाचरेत,' हमने यू.पी. में इन लोगों को मात दी है। इसीलिए ये बौखला रहे हैं, बार-बार खिसिया रहे हैं और हर बार यू.पी. की बात करके हमारे ऊपर आरोपों की झड़ी लगा रहे हैं।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: No running commentary please. You will also get an opportunity to make your points.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: It is not good.

... (व्यवधान)

* Not recorded.

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, सुबह से बहुत बार ये सुख राम जी का नाम ले चुके हैं। शरद पवार जी यहां बैठे होते तो मैं उन्हें बताती कि सुख राम जी सुख तो आप ही को देकर गए हैं, यहां तो सूखा हुआ राम आया है जिससे देश को किसी तरह का कोई खतरा, कोई नुकसान होने वाला नहीं है। उनका सुख आपने बहुत वर्षों भोग लिया। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, सुबह से बहुत बार इन्होंने जयललिता जी के संबंध में बात की और सोमनाथ जी ने तो अपने भाषण का एक-तिहाई जयललिता जी पर डिवोट कर दिया। सोमनाथ

दा यहां बैठे होते तो मैं उनसे पूछती कि सेक्यूलरिज्म के नाम पर, जिस पार्टी के साथ वह सरकार बनाने की बात कर रहे थे, क्या उसी कांग्रेस के शरद पवार जी ने जयललिता जी से सहयोग करके सरकार बनाने की बात नहीं की थी? मैं चुनाव पूर्व गठबंधन की बात नहीं कर रही हूँ। एक जरा सी नाराजगी की भनक मिलते ही झपट कर दांव मार लो, क्या इसके लिए शरद पवार जी ने जयललिता जी से गुपचुप संपर्क नहीं साधा था? बकायदा टी.वी. पर ऐलान किया था कि हम जिन लोगों से संपर्क कर रहे हैं उसमें जयललिता जी भी शामिल हैं। आज वे यहां व्यंग्य कस कर कह रहे थे कि चिट्ठी आ रही है। मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या उसी चिट्ठी के लिए पलक पांवड़े शरद पवार जी इंतजार नहीं कर रहे थे?

... (व्यवधान)

इसलिए मीडिया ने लिखा था।

कि एक चिट्ठी का दो जगह पर इंतजार हो रहा है, दो लोगों को इंतजार हो रहा है। लेकिन हमें मालूम था कि चिट्ठी हमको ही आएगी और आई भी। लेकिन बाद में, अंगूर खट्टे हैं यह सोचकर यदि शरद पवार आज खिसियाएं और यहां खड़े होकर व्यंग्य से यह बात कहें, तो यह बाद उन्हें शोभा नहीं देती है।

अध्यक्ष महोदय, सोमनाथ जी ने आधा भाषण जयललिता जी पर और आधा भाषण हिंदुत्व पर दिया। मैं चाहती थी कि मेरे भाषण के समय सोमनाथ जी और शरद पवार जी यहां बैठे होते तो मुझे बोलने में जरा ज्यादा आनंद आता। सोमनाथ जी एडवोकेट हैं। वे उस सुप्रीम-कोर्ट की जजमेंट का हवाला तो देते हैं जिसमें सेक्यूलरिज्म का

basic feature of the Constitution

बताया गया है। लेकिन उसी सुप्रीम-कोर्ट ने जिस जजमेंट में हिंदुत्व की परिभाषा दी है शायद वह जजमेंट सोमनाथ जी की नजर से नहीं गुजरा।

... (व्यवधान)

शायद उन्होंने पढ़ने की जहमत नहीं उठाई।

अध्यक्ष जी, अगर सोमनाथ जी यहां होते तो मैं उनको पढ़कर सुनाती। लेकिन अब आपके माध्यम से इस सदन को सुनाना चाहती हूँ। यह १९९४ का जजमेंट है और यह जजमेंट रिव्यू नहीं हुआ है।

... (व्यवधान)

कौन पेटिशनर है, कौन जज है, इस बात का खुलासा देकर मैं बताना चाहती हूँ। अध्यक्ष जी, एम.ईस्माइल फारूखी एंड अदर्स बनाम यूनिनयन ऑफ इंडिया एंड अदर्स। साइटेशन लिख लें, सोमनाथ जी को बताने के लिए। यह १९९४(६) एस.टी.सी. पेज ३६ पर है। यह भी बता दें कि जजमेंट किनका है। जस्टिस भरूचा और जस्टिस अहमदी। वही जस्टिस अहमदी जो बाद में हिंदुस्तान के न्यायाधीश हुए। सुप्रीम कोर्ट और हिंदुस्तान के न्यायाधीश के सचिव पद पर बैठे। मैं केवल दो पैराग्राफ पढ़कर बताती हूँ।

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : आप वकील हैं (व्यवधान)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : सोमनाथ जी भी वकील हैं, इसलिए वकील का जवाब तो वकील ही देगा। इसलिए मैं कहती हूँ कि अदालत में यह ट्रेनिंग है कि अपने पक्ष का जजमेंट तो पढ़ो लेकिन विरोधी पक्ष का जजमेंट भी पढ़ो। पता नहीं इतने सीनियर एडवोकेट होकर भी वह इस जजमेंट को पढ़ना कैसे भूल गये?

अध्यक्ष जी, जस्टिस अहमदी और जस्टिस भरूचा ने जो अलग से जजमेंट लिखी है उसमें कहा है कि -

"Hinduism is a tolerant faith. It is that tolerance that has enabled Islam, Christianity, Zoroastrianism, Judaism, Buddhism, Jainism and Sikhism to find shelter and support upon this land."

मैं जो कहना चाहती हूँ उस पर आप गौर करें।

"Ordinarily, Hindutva is understood as a way of life or as a state of mind and it is not to be equated, I repeat, it is not to be equated with or understood as a religious Hindu fundamentalism."

हिंदुत्वा को रिलीजियस फंडामेंटलिज्म से इक्वेट मत कीजिए। हिंदुत्वा एक जीवन जीने की पद्धति है और यह बात सुप्रीम कोर्ट ने कही है। अगर सुप्रीम कोर्ट की जजमेंट जिसमें सेक्युलरिज्म को बेसिक फ्रीडम ऑफ द कांस्टीट्यूशन माना है, तो भारतीय जनता पार्टी ने अपने नेशनल एजेंडा पर, गवर्नेंस में, और राष्ट्रपति के अभिभाषण में उस सेक्युलरिज्म के प्रति अपने कमिटमेंट में अन-इक्विवोकल टर्मस में बताया है। लेकिन हिंदुत्व की जो परिभाषा सुप्रीम कोर्ट ने दी है, अच्छा हो अगर आप उसे भी अपने जहन में उतार लें, ताकि हमारे नेशनल एजेंडा पर, हमारे घोषणा पत्र का हिंदुत्व आपको कम्प्युनल न लगे। उसमें आपको साम्प्रदायिकता और फिरकापरस्ती की बू न आए। जहां तक आपके सेक्युलरिज्म की परिभाषा का सवाल है तो आपकी परिभाषा तो मौके के अनुसार बदलती रहती है। कभी आप जम्मू में हिंदू कार्ड चलाकर वोट मांगते हैं, कभी आप दिल्ली में सिख विरोधी कार्ड चलाकर वोट मांगते हैं तो कभी आप केरल में मुस्लिम लीग के साथ सरकार चलाते हैं, कभी आप मिजोरम में रूल अकोर्डिंग बाईबल का वायदा करके वोट मांगते हैं। केवल आप ही नहीं संयुक्त मोर्चा के लोग भी सुबह और शाम अकाली-भाजपा गठबंधन को देश का सबसे बड़ा फिरकापरस्त गठबंधन कह करके गाली देते हैं। लेकिन जब उनका सेक्युलरिज्म उनके पूर्व प्रधान मंत्री को देश में एक भी सीट जीतने की क्षमता नहीं देता, तो उसी अकाली दल की बैशाखी पर चढ़कर उनके पूर्व प्रधान मंत्री लोक सभा में पहुंचते हैं। यह है आपका सेक्युलरिज्म। यहां बैठकर मुलायम सिंह यादव बहुत बातें कह रहे थे। मेरी दिक्कत यह है कि सब अपनी-अपनी बात बोलकर चले गये लेकिन जब जवाब सुनने की बारी आई तो कोई उपस्थित नहीं है। आप परोक्सी के जरिये उनको जवाब पहुंचा दीजिएगा। मुलायम सिंह यादव यहां बैठकर आरोप लगा रहे थे।

... (व्यवधान)

SHRI RAM NAIK (MUMBAI-NORTH)

श्री राम नाईक : वह घर पर बैठ कर सुन रहे हैं।

... (व्यवधान)

SHRI SHYAM BIHARI MISHRA (BILHAUR)

श्री श्याम बिहारी मिश्र (बिलहौर) : उन्होंने यहां बैठने का साहस नहीं किया, इसलिए चले गए।

... (व्यवधान)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : मुलायम सिंह जी यहां बैठ कर आरोप लगा रहे थे कि अटल जी को तो मंत्रिमंडल भी बनाने की स्वतंत्रता नहीं है। संघ की सलाह पर मंत्रिमंडल बनाया जा रहा है। अगर मैं मुलायम सिंह जी की बात को तर्क के लिए सच मान लूं तो संघ की सलाह पर देश की रक्षा का भार जार्ज फर्नान्डो के कंधों पर डालने की सलाह दी जाती है तो हिन्दुस्तान को इस सरकार से किसी तरह का खतरा और भय नहीं होना चाहिए, लेकिन यहां तो आरोप लगाने के लिए आरोप लगाए जाते हैं। यहां आरोप लगाया जा रहा था कि बी.जे.पी. मेरे खिलाफ हमेशा अपराधियों को खड़ा करती है। क्या मैं उन लोगों का रिकॉर्ड रख दूं जिन को बी.जे.पी. ने मुलायम सिंह जी के खिलाफ खड़ा किया? एक बार श्री उपदेश चौहान को खड़ा किया जो उनकी पार्टी के एम.एल.ए. थे। दूसरी बार श्री डी.पी. यादव को खड़ा किया जो उनकी कैबिनेट के मिनिस्टर रह चुके हैं। तीसरी बार श्री अशोक यादव को खड़ा किया जो उनकी पार्टी के सदस्य रह चुके थे। जब वे लोग उनकी पार्टी में होते हैं तो दूध के धुले होते हैं, तब वे सम्मानित विधायक, माननीय मंत्री होते हैं लेकिन जिस समय वे भारतीय जनता पार्टी में आ जाते हैं तो उनका घोर अपराधियों का चेहरा बन जाता है और क्रिमिनल हो जाते हैं।

19.36 hrs. (Dr. Laxmi Narayan Pandey in the Chair)

SHRI TARIQ ANWAR (KATI HAR)

श्री तारिक अनवर : इस तरह उधार लेकर कैसे काम चलेगा?

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : तारिक अनवर जी, हम उधार लेकर काम नहीं चला रहे हैं। उधारी में तो कभी आप यहां आने वाले हैं। मैं उनसे कहना चाहती हूँ कि वह तो बैंडिट क्वीन को चुनाव के मैदान में उतारते हैं। इधर तो प्रिंस और प्रिंसिज भी नहीं हैं, उनके यहां तो बैंडिट क्वीन चुनाव के मैदान में उतरती हैं। जिन के अपने घर शीशे के होते हैं, उनको दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकने चाहिए। इसलिए वह आरोप लगाने से पहले अपने गिरेबान में झांक कर देख लें। यह कह रहे थे कि हमने लक्ष्मी पार्वती से नाता तोड़ दिया और टी.डी.पी. से एलाइंस कर लिया। मायावती जी भारतीय जनता पार्टी को अविश्वसनीय बता रही थीं। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को अविश्वसनीयता तो बता दिया लेकिन उत्तर प्रदेश के रैस्ट हाउस की घटना भूल गईं। वे भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता थीं, जिन्होंने मुलायम सिंह यादव के चंगूल से उनकी जान बचायी थी। वह मुलायम सिंह के वे अनर्गल प्रलाप भूल गईं जो उन्होंने उनके खिलाफ लगाए थे। मैं उनसे पूछना चाहती हूँ कि २१ तारीख को रात को कल्याण सिंह का पलड़ा गिराने के लिए, और तख्ता पलटने के लिए जो गठबंधन हुआ था, वह कौन सी नैतिकता पर आधारित गठबंधन था, वह कौन से सिद्धांत पर आधारित गठबंधन था, वह कौन से आदर्शों का परिचायक गठबंधन था? क्या वह घोर अवसरवादिता नहीं थी? क्या वह सत्ता प्राप्ति के लिए किया गया गठबंधन नहीं था? इसलिए मैं कहती हूँ कि दूसरों पर आरोप लगाने से पहले जो कुकर्म स्वयं किए हैं, उनको देखना न भूलें। यहां के लोगों को सब कुछ याद रहता है और जिन्हें याद नहीं रहता है उन्हें याद दिलाया जाता है। कोई खड़ा होकर याद दिला देता है।

श्री जार्ज फर्नान्डो ने कांग्रेस और यूनाइटेड फ्रंट के अन्तर्विरोधों का यहां काफी जिक्र किया। मैं उसे दोहराना नहीं चाहूंगी लेकिन उनका जरूर जिक्र करूंगी जो सोमनाथ दा यहां हमारी और हमारे एल्लाइएंस के ऐटिट्यूड की बात कर रहे थे। वह बार-बार कह रहे थे कि हम एल्लाइएंस पार्टनर्स से पूछना चाहते हैं

What is your attitude towards BJP's economic policy and towards BJP's Hindutva?

मैं उनकी की भाषा में उनसे पूछना चाहती हूँ

What is your attitude towards GATT, WTO and patent law?

आपके मार्गदर्शक, स्वयं को कहने वाले राजनैतिक चाणक्य कामरेड सुरजीत जिस कांग्रेस के साथ मिल कर सरकार बनाने की बात कर रहे थे, उनका ऐटिट्यूड क्या आपके ऐटिट्यूड से मेल खाता है? इसलिए वे तमाम बातें जो अपने यहां घट रही हैं, उनको अनदेखी करते हुए वे जब दूसरों पर आरोप लगाते हैं तो उनका बाद में असर नहीं रहता। वह बात बेअसर हो जाती है। मैं कहना चाहती हूँ कि यह तर्क-कुतर्क, कटाक्ष, प्रहार तो बहुत हो गए। इस

वाक युद्ध से देश का कोई भला नहीं होने वाला। हम अच्छी बहस करके अच्छे डिबेटर तो कहला सकते हैं लेकिन देश को अच्छे एडमिनिस्ट्रेटर और अच्छे रूलर की जरूरत है, अच्छे डिबेटर की जरूरत नहीं है।

इस देश के सामने बहुत समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं। अभी चिदम्बरम् जी यहां नहीं हैं। वे कह रहे थे और मैं चाहती तो तुरन्त उनकी बात का जवाब देती। वे कह रहे थे कि हम क्यों आपका समर्थन करें? आपके नेशनल एजेण्डा में कोई प्रोग्राम नहीं है, आपके राष्ट्रपति अभिभाषण में कोई प्रोग्राम नहीं है। आरोप की ध्वनि में उन्होंने कहा कि आपके नेशनल एजेण्डा से ही राष्ट्रपति अभिभाषण बना है, बिल्कुल वर्ड फोर वर्ड लिया है। उपेन्द्र जी से मैं कहना चाहूंगी कि अगर नेशनल एजेण्डा फोर गवर्नन्स से राष्ट्रपति अभिभाषण न बनाते तो हम पर अनकनसिस्टन्सी का आरोप आप लगाते और अगर हमने नेशनल एजेण्डा से वर्ड फोर वर्ड राष्ट्रपति अभिभाषण बनाया है तो आप आरोप लगा रहे हैं कि सब कुछ नेशनल एजेण्डा से उठा लिया है।

सभापति महोदय, राष्ट्रपति का अभिभाषण किसी सरकार का नीतिगत दस्तावेज होता है और वह नीति हमने अपने नेशनल एजेण्डा फोर गवर्नन्स से ली तो क्या हुआ? वह आरोप लगाते हैं कि हमारे पास कोई प्रोग्राम नहीं है। वह पूछते हैं कि हम किसलिए आपका समर्थन करें? मैं कहती हूँ कि पैरा दर पैरा पढ़ते जाओ नेशनल एजेण्डा फोर गवर्नन्स को, पैरा दर पैरा पढ़ते जाओ राष्ट्रपति अभिभाषण को, आपको प्रोग्राम के सिवाय उसमें कुछ नहीं दिखाई देगा। मैं पूछना चाहती हूँ उधर बैठे हुए साथियों से कि किसी भी बालक को भूखा न सोने देने का संकल्प क्या प्रोग्राम नहीं है? बेघरों को २० लाख घर वार्षिक बनाकर देने का संकल्प क्या प्रोग्राम नहीं है? ३३ फीसदी आरक्षण देकर महिलाओं को राजनैतिक अधिकार को भागीदारी में बढ़ाती करना क्या प्रोग्राम नहीं है? पूरे देश की कन्याओं को प्रेजुएशन तक निःशुल्क शिक्षा देकर शिक्षित करना क्या प्रोग्राम नहीं है? मेरे यहां से और लोगों को बोलना है, समय कम है वरना मैं सारे पैरा आपको पढ़कर सुनाती और चिदम्बरम् जी की बात का यहां जवाब देती कि किसी पैरा में आपको कार्यक्रम दिखाई नहीं दिया? और आप हमसे पूछ रहे हैं कि हम किस प्रोग्राम पर आपका समर्थन करें, हम किस कार्यक्रम पर आपका समर्थन करें? मैं पूरे अदब से कहना चाहती हूँ कि अगर सर्वानुमति और आम सहमति से सरकार बनाने का समय कभी आएगा तो आज आया है। क्यों? न तो हमारे पास इतना बड़ा बहुमत है कि हम विपक्षियों को धता बताकर हेकड़ी से राज चला सकें और न हमारे पास इतना कम बहुमत है कि हम बाहर बैठे हुए कुछ लोगों के दबाव में सरकार चला सकें। आज हम इस दबाव में नहीं कि दूर से कोई बटन दबाकर हमारी सरकार की गर्दन दबोच दे लेकिन इतना बड़ा बहुमत लेकर भी नहीं आए हैं कि आप लोगों के सहयोग के बिना समस्याओं का निदान कर सकें। इसलिए मैं कहना चाहती हूँ कि आज वक्त है आम सहमति से सरकार चलाने का। देश में सर्वानुमति का वातावरण पैदा करने का आज वक्त है। ये समस्याएं वर्षों से निदान खोज रही हैं लेकिन निदान नहीं मिला क्योंकि या तो राज हेकड़ी से चला या राज दबाव में चला।

एक माननीय सदस्य : आप हेकड़ी मत बताइए।

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं हेकड़ी में नहीं बोल रही। आप जब थोड़ा भी शोर करते तो मैं चुप कर जाती थी। मुझे मालूम है, अपनी जिम्मेदारियों का अहसास है इसलिए मैंने उनको जवाब दिया। लेकिन मैं आपके माध्यम से एक अपील करना चाहती हूँ इस सदन के तमाम विपक्षी बेंचों पर बैठे हुए लोगों से कि आइए, इस मुल्क का मुस्तकबिल साथ-साथ चलकर लिखें। आइए, इस देश का नवनिर्माण मिलकर करें, लेकिन निर्माण नफ़रत से नहीं होगा। पूरे वार्गहों के चश्मे लगाकर अगर आप हमें देखेंगे तो निर्माण नहीं होगा। मेरी केवल एक अपील है। एक बार पूर्वाग्रहों को त्यागकर हमें परखिये।

... (व्यवधान)

मैं अपील दोहराना चाहती हूँ क्योंकि बीच में शोर हो गया। एक बार पूर्वाग्रहों को त्यागकर हमें परखिये और मुझे उम्मीद ही नहीं, बल्कि विश्वास है कि साथ-साथ हमसफ़र बनकर चलते हुए आपकी सारी मिथ्या धारणाएं समाप्त हो जाएंगी, सारे भ्रम का वातावरण समाप्त हो जाएगा। हिन्दुस्तान में राजनीति तो बहुत हो चुकी लेकिन राज नहीं हुआ। वर्षों से अघाया हुआ देश स्वराज का इंतज़ार कर रहा है। वर्षों से अघाया हुआ देश एक अच्छी सरकार का इंतज़ार कर रहा है। अगर नफ़रत को थोड़ी देर ढककर, पूर्वाग्रहों के चश्मे उतारकर

... (व्यवधान)

SHRI A.C. JOS: I want to know one thing from you, if you kindly yield. Shri Chidambaram, in his speech, quoted the decisions taken or statements made in a meeting of the RSS in Bangalore. They said that when time comes, they would take up the issue of building of the temples in Mathura, Varanasi etc. Is it also a method of conciliation?... (Interruptions)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : भारतीय जनता पार्टी का कोई एजेण्डा सीक्रेट एजेण्डा नहीं है मैं आपको बता दूँ।

मैं यहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार के मंत्री के नाते बोल रही हूँ, आर.एस.एस. के स्पोक्सपर्सन के नाते नहीं बोल रही हूँ।

... (व्यवधान)

SHRI A.C. JOS : I am talking of the RSS which controls the BJP.

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह आपकी धारणा है। इसलिए मैं कह रही हूँ कि यह जो आपकी धारणा है, मैं आपको यह बात कहती हूँ कि साथ चलकर देखिये आपकी मिथ्या धारणाएं समाप्त हो जायेंगी। ऐसे भ्रमों के जाल में आप फंसे हुए हैं। एक समय आप हमें एंटी-दलित कहते थे, कभी आप हमें महिला विरोधी कहते थे, कभी आप हमें अल्पसंख्यक विरोधी कहते थे। अब धीरे-धीरे चीजें हटती हैं। जिस हिंदू और सिख में आपने दरार डालकर रखी थी, आज पंजाब में वही हिंदू और सिख को इकट्ठी सरकार बन रही है। वे धारणाएं समाप्त हो गईं। आज लोग हमारे साथ मिलकर सरकार चला रहे हैं। उनसे उनका अनुभव पृथिव्ये। कितने अच्छे तरीके से वे शासन चला रहे हैं। इसीलिए कह रही हूँ एक बार कुछ देर के लिए मौका देकर देखिये, हमसफ़र बनकर देखिये, अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर देखिये, जिन भ्रमजालों में आप फंसे हुए हैं, ये मिथ्या धारणाएं केवल कम नहीं होंगी, समाप्त हो जायेंगी। यह मैं आपको पूरे विश्वास के साथ कहना चाहती हूँ और जैसा मैंने कहा कि एक राष्ट्र के नवनिर्माण का संकल्प हमारे सामने है ... (व्यवधान)

SHRI A.C. JOS : Do you mean to say that the RSS will not interfere?

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति महोदय, मुझे नीरज की चार पंक्तियां बहुत पसंद हैं जो इस मौके पर बहुत प्रासंगिक हैं, वे मैं यहां कहना चाहूंगी।

... (व्यवधान)

SHRI KANTILAL BHURIA (JHABUA)

श्री कान्ति लाल भूरिया : चार पंक्तियों के पहले धारा ३७० पर बोलिये, आपके उस पर क्या विचार हैं।

... (व्यवधान)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुषमा स्वराज : कभी आप नेशनल एजेंडा को देखिये, वे तमाम मुद्दे जो हिन्दुस्तान के सामने मुंह बाये खड़े हैं, वे उसमें हैं। चार पंक्तियां कहकर मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूंगी।

नीरज ने कहा था -

‘निर्माण घृणा से नहीं प्यार से होता है,

सुख-शांति खड़ग पर नहीं प्रेम पर चलते हैं,

आदमी देह से नहीं नेह से जीता है,

बम्बों से नहीं बोल से वज्र पिघलते हैं।’

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपील करना चाहूंगी कि इस विश्वास मत के पक्ष में मतदान कर इस सरकार को मजबूती बख्शें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

DR. SHAKEEL AHMAD (MADHUBANI)

डा. शकील अहमद (मधुबनी): हिन्दू महासभा, उसके बाद जनसंघ, जनसंघ से जनता पार्टी, जनता पार्टी से भारतीय जनता पार्टी, पिछले ७० सालों से यह भाषा क्यों नहीं बोली। आज ७० साल के बाद इनकी भाषा बदली है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिये।

DR. SHAKEEL AHMAD (MADHUBANI)

डा. शकील अहमद : यह धोखे की भाषा लग रही है।

... (व्यवधान)

">

श्री अजीत जोगी : सभापति महोदय, असत्य वादों की खोखली बुनियाद पर खड़ी यह सरकार १९९८ के लोक सभा चुनाव के जनादेश के प्रतिकूल बनी यह सरकार, माननीय अटली जी के नेतृत्व में बनी यह सरकार, जिसकी इतना, जिसकी शुरुआत एक सक्षम आदिवासी के साथ धोखाधड़ी से हुई, उस सरकार के द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत के प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करने के लिए, अपनी पूरी शक्ति, अपने पूरे मन अपनी पूरी भावना से उसका विरोध करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ।

... (व्यवधान)

१९८४ से १९९८ तक की १५ वर्षों की सियासी यात्रा भारतीय जनता पार्टी ने तय की है। इस संसद में दो सदस्यों से बढ़कर आज ये १६० से ऊपर सदस्य हो गये हैं।

सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी की आठ हजार प्रतिशत से ज्यादा ताकत इस सदन में बढ़ी है। यह इसलिए बढ़ी है कि जनता के जनबातों को आपने उभारा है। यह इसलिए हुआ क्योंकि आपने यह कहा था कि हम सौगंध राम को खाते हैं, हम मंदिर वहीं बनाएंगे। आपने यह कहा था कि हम पावन नदी सरयू, गंगा और जमना की सौगंध उठाते हैं हम मंदिर वहीं बनाएंगे। आपने भारत के आराध्य देव भगवान राम की सौगंध खाई, ... (व्यवधान)

SHRI KANTILAL BHURIA (JHABUA)

श्री कान्ति लाल भूरिया: सुनने का साहस रखिए। अब जब भगवान राम की बात आई है, तो आप शोर क्यों मचाने लगे,

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : भूरिया जी, आप कृपया बैठिए।

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी : एक जमाना था जब जय श्रीराम का उदघोष पूरे उत्तर भारत में गूँजता था। आज वह उदघोष कहाँ गया? मैं भारतीय जनता पार्टी का नेशनल एजेंडा पढ़ रहा था, लेकिन अब जय श्रीराम का उदघोष, 'जय सुखराम' में बदल गया है। हमने कई बार अटल जी को सुना, हम बार-बार उनको सुनते थे और आज तो मैं उनके पुराने भाषणों को भी लाइब्रेरी से निकालकर लाया हूँ। उन सभी भाषणों में वाजपेयी जी ने हमेशा कहा था कि कश्मीर हमारा मुकुट है, कश्मीर हमारी आन, बान और शान है, कश्मीर में दो विधान नहीं हो सकते और आर्टिकल ३७० संविधान में नहीं रहना चाहिए। माननीय अटल जी, हमने आपके नेशनल एजेंडे को बड़े ध्यान से पढ़ा, लेकिन उनमें अब कश्मीर आपके के लिए मुकुट नहीं रहा, देश की आन, बान और शान नहीं रहा,

... (व्यवधान)

अब कश्मीर की अहमियत नहीं रही। अब तो आपके लिए नेशनल कान्फ्रेंस के वहाँ से जीते दो सांसदों की अहमियत हो गई। आपने दिल्ली की गद्दी पाने के लिए, प्रधान मंत्री बनने के लिए, दिल्ली में सरकार बनाने के लिए इतना बड़ा समझौता किया कि आपने अपने पुराने सब सिद्धान्तों को भुला दिया। आपने भारत के मुकुट कश्मीर को भुला दिया, आपने भारत की पवित्र नदियों सरयू, गंगा, यमुना की कसम को भुला दिया, आपने भगवान राम की सौगंध को भुला दिया। आपने अपने सिद्धान्तों के साथ इतना बड़ा समझौता किया कि आपने सबको खत्म कर दिया और यह केवल दिल्ली की गद्दी पाने के लिए किया।

सभापति महोदय, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी, हमेशा कहते थे कि भारत समाज एक है, फिर इस समाज में सिविल कोड अलग-अलग कैसे हो सकते हैं? सबके लिए एक सी आचार संहिता होनी चाहिए, यूनीफार्म सिविल कोड होना चाहिए। आज आपने जो सरकार बनाई है उसमें आप न तो यूनिफार्मिटी को बात करते हैं, न सिविल को बात करते हैं और न कोड की बात करते हैं, कहाँ गया आपका वह भाषण जिसमें हमेशा आप इनकी चिन्ता किया करते थे? मैंने आपका १९९६ का घोषणा पत्र भी पढ़ा और १९९८ का घोषणा पत्र भी पढ़ा। उनमें आपने लिखा है कि आप भय, भूख और भ्रष्टाचार से इस देश को मुक्ति दिलाएंगे। भ्रष्टाचार के बारे में आपने क्या कहा, उस बारे में सब वक्ता यहाँ बोल चुके हैं। मैं उन बातों को पुनरावृत्ति नहीं करूँगा।

... (व्यवधान)

SHRI LARANG SAI (SARGUJA)

श्री लरंग साय (सरगुजा): सभापति जी, मुझे शंका है, इसलिए मैं एक बात का स्पष्टीकरण करना चाहूँगा। मैं जानना चाहूँगा कि म.प्र. के मुख्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने इनके बारे में कहा था कि ये सतनामी है और ये आदिवासी है, क्या ये वही अजित जोगी हैं?

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : नारंग सहाय साहब मैं आपको सब बातें बता दूँगा।

मेरी बात सुनिये। जिस भ्रष्टाचार के नाम से आपने इतना ढिंढोरा पीटा, इतना हाई मॉडल ग्राउन्ड लेकर आप बैठे थे, उस भ्रष्टाचार के साथ आपने कैसा समझौता किया। किस तरह से आपने पंडित सुखराम जी के लिए यहाँ १३ दिन तक संसद नहीं चलने दी। मैं वह रिकार्ड लेकर आया हूँ। माननीय अटल जी, माननीय जसवंत सिंह जी, माननीय प्रमोद महाजन जी तथा आपके अन्य नेताओं ने पंडित सुखराम जी के बारे में क्या कहा, वह सब मेरे पास है। लेकिन समय न होने की वजह से मैं उसे पढ़ना नहीं चाहता। परन्तु यह रिकार्ड की बात है कि आपने क्या-क्या बातें कही थीं। आज वही पंडित सुखराम जी आपके आगोश में बैठे हैं। आप अपने मंत्रिमंडल में उनसे आलिंगन कर रहे हैं। यह तो दिल्ली की कुर्सी के लिए आपने समझौता किया लेकिन मुझे तो दुख इस बात का है कि शिमला की छोटी सी कुर्सी के लिए आपने इतना बड़ा समझौता किया। इतना बड़ा हाई मॉडल ग्राउन्ड, इतने बड़े उच्च नैतिक धरातल पर आप बैठकर देश के सामने निकले थे और अब कहाँ पहुँच गये हैं।

आप अपराधीकरण की बात करते रहे कि हम राजनीति से अपराधीकरण को दूर करेंगे। आपने जो राष्ट्रपति जी का अभिभाषण पढ़ा, उसके क्रम न. ३८ में लिखा है कि हम इस देश में ऐसी व्यवस्था लाना चाहते हैं जिसमें राजनीति से अपराधी दूर हो जायेंगे। मैं अपने मध्य प्रदेश की बात कहता हूँ। पूरे हिन्दुस्तान में केवल एक स्थान पर ऐसा हुआ है कि अपराधी होने के नाते किसी उम्मीदवार का कैंडिडेटचर रिटर्निंग ऑफिसर ने निरस्त किया है। पूरे हिन्दुस्तान में इस चुनाव में केवल एक स्थान पर ऐसा हुआ। मध्य प्रदेश की धार लोक सभा सीट पर श्री दरबार छत्रसिंह जी का

... (व्यवधान)

जो आपके उम्मीदवार थे, उनका नामांकन रिटर्निंग ऑफिसर को निरस्त करना पड़ा क्योंकि हत्या के अपराध में उन्हें सजा हुई है।

... (व्यवधान)

SHRI THAWAR CHAND GEHLOT (SHAJAPUR)

श्री थावर चन्द गेहलोत (शाजापुर): मुख्य मंत्री जी के दबाव में कलेक्टर ने कर दिया। परन्तु आपका जो निर्वाचन हुआ है, वह कोर्ट से निरस्त हो जायेगा। आप आदिवासियों के नाम पर बात करते हो लेकिन आप आदिवासी नहीं हैं।

... (व्यवधान)

कोर्ट से आपके खिलाफ फैसला हो जायेगा

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी : आपको सच्चाई अच्छी नहीं लगती। मैं केवल यह कह रहा हूँ कि भगवान राम के मंदिर की बात, यूनीफार्म सिविल कोड की बात, अपराधीकरण की बात, भ्रष्टाचार की बात, आर्टिकल ३७० की बात आदि इन सब बातों को छोड़कर आपने नेशनल एजेंडा बनाया है। आप शास्त्रों की बात करते हैं। आदरणीय उमा भारती जी यहाँ बैठी हैं, वे शास्त्रों की बात करती हैं। इसलिए मैं शास्त्रों की दुहाई देकर कहना चाहता हूँ कि दुनिया में केवल दो पाप ऐसे बताये गये हैं जिनकी क्षमा नहीं होती। शास्त्रों में

SHRI S.S. OWAISI (HYDERABAD)

लिखा है:

सेतुबंध रामेश्वरम गंगासागर संगमं,

मुच्यते सर्वपापकर्मं,

न मुच्यते तु,

मित्रद्रोहम यति च राजस्य कृतघ्नता।

इन चार तीर्थों को सबसे अधिक प्रताप वाले, सबसे अधिक महिमा वाले, सबसे अधिक शक्ति वाले, सबसे अधिक आध्यात्मिक वाले बताये गये हैं। सेतुबंध, रामेश्वरम, गंगासागर और प्रयाग का संगम, बड़े से बड़ा पाप करने पर, इन तीर्थों में स्नान-ध्यान करने, पूजा पाठ करने से उन पापों की क्षमा हो जायेगी लेकिन दो पाप ऐसे हैं जिनकी क्षमा इनमें से कोई भी नहीं कर सकता। न सेतुबंध, न रामेश्वरम, न गंगासागर

और न प्रयाग संगम, ये चारों तीर्थ मिलकर भी उन दो पापों को क्षमा नहीं कर सकते, ऐसा हमारे शास्त्रों में लिखा है।

आदरणीय अटल जी , मैं आपको सरकार और आपको पार्टी को शास्त्रों की दुहाई देकर कह रहा हूँ।

... (व्यवधान)

SHRI VIJAY GOEL (CHANDNI CHOWK)

श्री विजय गोयल : क्या आप इस सदन का समय बढ़ाने जा रहे हैं? अगर बढ़ाने जा रहे हैं तो फैसला ले लीजिए क्योंकि ८ बज गये हैं।

... (व्यवधान)

आप सदन का समय दुबारा निश्चित कीजिए।

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना: मेरा प्रस्ताव है कि दोनों तरफ से बोलने वाले वक्ता काफी हैं इसलिए दो घंटे सदन का समय और बढ़ाया जाये।

... (व्यवधान)

20.00 hrs.

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना : इसके साथ-साथ मैं दूसरी घोषणा कर रहा हूँ कि एम.पीज और प्रैस के लिए फर्सट फ्लोर के कमरा नम्बर ७० में और स्टाफ के लिए कमरा नम्बर ७३ में डिनर की व्यवस्था है। आप बीच-बीच में जाकर डिनर कर सकते हैं।

एक घंटे का समय और बढ़ा दिया जाए।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय अभी इस पर काफी सदस्य बोलने वाले हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : सभी माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं। ऐसी दशा में दो घंटे का प्रस्ताव रखा था लेकिन माननीय खुराना जी ने स्वयं ही एक घंटे के लिए कहा है। इसलिए मैं सदन का मत जानना चाहूंगा कि क्या एक घंटे का समय बढ़ा दिया जाए।

... (व्यवधान)

SHRI M. THAMBI DURAI: Mr. Chairman, Sir, I request you to give some preference to the small parties because they may not get a chance tomorrow. The major parties can be somehow accommodated but the smaller parties especially will have to be given time today.

सभापति महोदय : अभी एक घंटा बढ़ा है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आपका समय पूरा हो रहा है।

... (व्यवधान)

श्री सान्छुमा खुंगुर बैसीमुथियारी (कोकराझाड) :सभापति महोदय, बात करते-करते इतना वेल्युएबल टाइम खत्म करते जा रहे हैं। लेकिन बोडोलैंड से आए हुए हम जो दुखी हो रहे हैं, उसे बोलने देंगे या नहीं। (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिए। आपको जब बुलाया जाएगा तब बोलिए।

... (व्यवधान)

SHRI VIJAY GOEL (CHANDNI CHOWK)

श्री विजय गोयल : मेरा निवेदन है कि अगले स्पीकर्स के नाम बता दिए जाएं।

सभापति महोदय : ठीक है।

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी : मैं अपनी बात पर फिर से आता हूँ। मैं शास्त्रों की दुहाई देकर कह रहा था कि भारतीय जनता पार्टी के दोस्त बात करते हैं। इसलिए मैंने कहा कि शास्त्रों में यह लिखा है -

सेतुबन्ध रामेश्वरम गंगासागर संगमम मुच्यते सर्वपापघ्नम

न मुच्यते तु मित्रदोहम यति च राजस्य कृतघ्नता।

... (व्यवधान)

आपने पूरे देश में शास्त्रों की बात बताई है। आपने पूरे देश को शास्त्रों के आधार पर गुमराह किया है। इसलिए हम आपको बताना चाहते हैं कि वास्तव में हिन्दुत्व क्या है, वास्तव में शास्त्र क्या कहते हैं। दो पाप ऐसे हैं - मित्र के साथ दगा करना और राजा का प्रजा को वादा करके पूरा न करना। इन दो पापों को चारों तीर्थ मिलकर भी क्षमा नहीं कर सकते। आपने राजा बनकर प्रजा के साथ जो वादा किया, आपने कहा, हम राम का मंदिर बनाएंगे और उससे मुकर गए, आपने कहा, हम आर्टिकल ३७० को हटाएंगे और उससे मुकर गए, आपने कहा, हम यूनीफार्म सिविल कोड लागू करेंगे और उससे मुकर गए, आपने कहा कि हम भ्रष्टाचार हटाएंगे और उससे मुकर गए।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : अब आप समाप्त करिए।

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी : मेरा समय को सब इन्होंने ले लिया है।

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH)

श्री सत्यपाल जैन : आपकी पार्टी का स्टैंड क्या है, आप अपनी बात बताइए।

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी : हमने कई बार कहा है कि राम मंदिर के बारे में न्यायालय जो कह दे, उसे मानिए।

... (व्यवधान)

मैं कह रहा था कि चारों तीर्थ मिलकर भी इस पाप को नहीं धो सकते। ... (व्यवधान) यह इतना जघन्य अपराध है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अब समाप्त कीजिए।

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजीत जोगी : मुझे बोलने का अवसर ही नहीं मिला।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आपका समय पूरा हो गया है।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please conclude now. I am going to call Shri V. Sathiamoorthy to speak next.

... (Interruptions)

सभापति महोदय (डा. लक्ष्मी नारायण पांडेय) : आप बैठिये। भूरिया जी, आप बैठिये। आप क्यों समय ले रहे हैं ?

Now you are disturbing.

जोगी जी खुद कैपेबल हैं, वे बात कर लेंगे। आप बैठिये।

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : मैं अब आपके आदेश का पालन करके अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। मैं बहुत सी बातें कहना चाहता था, लेकिन मैं केवल इतना कहना चाहूँगा कि आदरणीय अटल जी, यह जो वोट मिला था, इसमें आपकी छवि का बहुत बड़ा हिस्सा था। लोगों ने यह सोचकर वोट दिया कि माननीय अटल जी प्रधान मंत्री बनेंगे तो इस देश का वातावरण बदलेगा। बहुत से लोगों की इस भावना से मैं सहमत हूँ। लोगों ने ऐसा सोचकर वोट दिया था पर जिस तरह की सरकार आपने बनाई है, जिस तरह की वादाखिलाफी आपने की है, उसको देखकर जो लोगों की यह आशा थी, जिस तरह से शुरू में ही आपने मंत्रिमंडल बनाया, उसमें पहली बार ऐसा हुआ कि इतने बड़ा मंत्रिमंडल आपने बनाया। देश के दस करोड़ लोग आदिवासी हैं, लेकिन एक आदिवासी को भी कैबिनेट मिनिस्टर का दर्जा आप नहीं दे पाये। आपने शुरूआत ही ऐसी की कि एक आदिवासी के साथ वायदा करके कि उसको हम स्वीकार बनाएंगे, उसको स्वीकार नहीं बनाया। आदिवासियों के साथ जो इतना बड़ा अत्याचार आपने किया है।

सभापति महोदय : कृपया समाप्त करें।

... (व्यवधान)

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना : तुम्हारे मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री वाले मामले का क्या हुआ? आप इतने सालों से चिल्ला रहे हो, इतने सालों से कांग्रेसी चिल्ला रहे

हैं।

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : माननीय अटल जी, आपसे जो आशाएं थीं, उनपर कुठाराघात हुआ है। मैं यही कहना चाहूँगा कि आपसे जो आशाएं थीं, उसके बारे में कहना चाहता हूँ:

'पंछी समझते थे कि चमन बदला है,

तारे समझते थे कि गगन बदला है,

पर माननीय अटल जी हालात यह बताते हैं,

कि लाश वही है, केवल कफन बदला है।'

कुछ भी बदला नहीं है।

... (व्यवधान)

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना : लाश किसने बनाई? सरकार तो पचास साल तक आपने चलाई। ५० साल तक किसने राज किया, हमने या तुमने?

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : मिनिस्टर हमें बोलने नहीं दे रहे हैं।

सभापति महोदय : जोगी जी, कृपया बैठिये।

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूँ।

... (व्यवधान)

आपको बात अच्छी नहीं लगेगी। आप क्यों वादाखिलाफी करते हैं ?

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : बैठिये।

... (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : मैं आपसे अन्त में यही निवेदन करना चाहूंगा कि इस देश के लोगों की आशाएं केवल कांग्रेस पर हैं। कांग्रेस का ही चिन्तन ऐसा है, जो सब को एक साथ लेकर चल सकता है। कांग्रेस का ही दर्शन ऐसा है जो एक छत के नीचे चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा हो, चाहे अगड़ा हो, चाहे पिछड़ा हो, चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिख हो, चाहे ईसाई हो, चाहे गरीब हो, चाहे अमीर हो, सब को एक साथ ले चलने का दर्शन, जिस दर्शन को सैण्ट्रल हाल के मुख्य द्वार पर ऋग्वेद के श्लोक में लिखा हुआ है:

‘अयम् निजः परोवेति, गणना लघुचेतषाम्,

उदार चरितानाम् तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।’

अयम् निजः और परोवेति की बात करने वाले जो यह कहें कि मैं और तू तू, जो यह कहें कि मैं बड़ा, तू छोटा, मैं अमीर, तू गरीब, मैं हिन्दू, तू मुसलमान, मैं सिख, तू ईसाई, ऐसा कहने वाले इस देश को नहीं चला सकते। जो इतने उदार चरित का होता है, जो यह कहे ‘उदार चरितानाम् तु, वसुधैव कुटुम्बकम्’ जो यह कहे कि पूरी वसुधा मेरा कुटुम्ब है। ऐसा कहने वाली केवल कांग्रेस पार्टी है। ऐसा कहने वाले केवल हम लोग हैं।

सभापति महोदय : समाप्त करिये।

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : केवल कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : जोगी जी, कृपया समाप्त करिये।

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : आपने मुझे बोलने नहीं दिया।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : जोगी जी, बिल्कुल नहीं। अब आप समाप्त करिये।

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना : जब आपका राज आवेगा, तब बनेगा तो

बनाओ न। (व्यवधान)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी : आदरणीय सभापति जी, मंत्री जी मुझे बोलने नहीं दे रहे हैं, व्यवधान डाल रहे हैं। खुद तो मुख्य मंत्री बने नहीं, मुझे टोक रहे हैं। आपको मुख्य मंत्री बनना था, अटल जी ने नहीं बनाया, लेकिन हमारे यहां अ वश्य आदिवासी मुख्य मंत्री बनेगा।

में केवल चार पंक्तियां कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा।

शर्मिदा कभी न रूहे मेहनत होगी

हिम्मत है तो हर गांव में नुसरत होगी

वक्त चाहे कांग्रेस से गुरेजां हो तो हो

कल वक्त को खुद कांग्रेस की जरूरत होगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस विश्वास मत का विरोध करता हूँ और निवेदन करता हूँ कि इसे निरस्त किया जाए।

">SHRI V. SATHIAMOORTHY (RAMANATHAPURAM): Before addressing this august House, I express my gratitude towards my eminent leader, AIADMK General Secretary, Dr. Puratchi Thalaivi and the people of my constituency, Ramanathapuram, who have voted for me.

Our hon. Prime Minister has moved the Motion of Confidence. I am of the opinion that the motion had already been placed before the public in the past election. The public has given their consent for the motion. They have voted for a stable and able Government of India. They do not want general elections every year. There was a triangular contest and in the triangular contest, the mandate given was very clear. There is no doubt that the public has called Shri Vajpayee to run the Government by the BJP and its allied parties. The other two fronts, the Congress and the so-called United Front --I will say, it is not a united front but a universally failure Front. The people have totally neglected it. Is anybody bold enough to say that the Congress is approved by the public to run the Government? No one can say it from the Congress side. In the same way, can anyone from the UF say that it is approved by the public or that it has got the mandate of the people in the past elections to run the Government? No one is bold enough to say it but you are opposing the confidence motion. Why are you opposing it? Are you standing together, in a united manner? Have you got any leader to lead the House on behalf of the United Front? There is no leader and there is no unity among you. Then, why are you opposing it? The Indians do not want any more elections in the next five years. Responsible leaders are coming to the House and opposing the verdict of the people. This is the House of the People. The people have decided to put the BJP in the chair of the Central Govt. No one can decide against the decision of the people. No one can take any decision in this House against the verdict of the public. If that verdict is negatived, then the people of India will never forgive the parties concerned.

At the time of the election, our eminent leader, Dr. Puratchi Thalaivi placed the demand before the public that they should vote for an able and stable Government at the Centre. In the meantime, she put forward some more demands.

In the morning, Shri Somnath Chatterjee levelled some charges against our eminent leader. He showed some newspaper. According to that newspaper, he said that there were so many cases against Puratchi Thalaivi Dr. Jayalalitha and her colleagues. I want to say that all those cases have been foisted against her. I want to make it clear and to attribute that the complaint out of all these cases are only the Chief Minister, Shri Karunanidhi. The investigation is by the Chief Minister, Shri Karunanidhi. The chargesheet has been filed by the Chief Minister, Shri Karunanidhi. The Special Court has been formed by the Chief Minister. The Judges of the Special Court are selected by the Chief Minister, Shri Karunanidhi.

At this juncture, I would like to make it clear to the House that Shri Karunanidhi cannot appeared and dispose as prosecution on witness in the witness box. He cannot be summoned to give evidence against our eminent leader. The original sighted witnesses will be called to give evidence. At that time, the truth will come to the light. The House would realise it. After knowing about the truth, Shri Somnath Chatterjee will realise it.

Our eminent leader asked the voters that they should vote to condemn the State Government*

Hundreds of persons were killed in Coimbatore. In the past two years, there have been so many bomb blasts in Tamil Nadu. In those unwarranted incidents, hundreds of people were killed. I want to bring it to your notice that Shri L. K. Advani proposed to attend an election meeting at Coimbatore. His life was aimed at by the extremists. Fortunately, the flight was delayed by one hour. But the people of Tamil Nadu would not forget that unfortunate black day of Tamil Nadu. In those horrible bomb blasts, hundreds of persons were killed and more than two hundred persons were wounded seriously. There were

* Expunged as ordered by the Chair.

27 bomb blasts on that day. I want to bring it to the notice of the hon. Chairman that this horrible occurrence is itself an evidence* All these incidents were placed before the voters in the recent elections.

The Government of Tamil Nadu had sown disparities amongst the different religious people and also amongst the various castes. There is no law and order in the State. After having realised all these things, the people of Tamil Nadu came to the conclusion that the Government headed by Shri Karunanidhi was unable to maintain law and order and was also unable to stop encouragement of the extremist forces; and also unable to stop the recurrence of the bomb blasts. That is why the people have voted in favour of the AIADMK and sent 30 Members of Parliament from the AIADMK and its allies to this august House. At this juncture I would like to submit that the Government headed by Shri Vajpayee would certainly continue for five years with our support and with the support of the people of India. There is no doubt about it.

In the meantime, I would like to ask our hon. Prime Minister to send a Central machinery for taking action against the Tamil Nadu Government and for taking steps to prevent the Government of Tamil Nadu from committing atrocities. I would also like to ask the Central Government to punish the Tamil Nadu Government for the crimes that have been committed by it so far.

I would like to make clear one more thing. Some doubts have been created by what Shri Somnath Chatterjee had said about the AIADMK and the BJP alliance. He has attributed certain motives for the delay in giving supporting letter to the President. I would like to say that our Party leader is a political fighter. She would fight out the cases foisted against her in the courts of law. She would not send any request or stand before any political leader or before any Government for personal help. She would fight for her rights and for the rights of the people of Tamil Nadu. I would like to make this point clear.

* Expunged as ordered by the chair.

MR. CHAIRMAN : Please conclude.

SHRI V. SATHIAMOORTHY : The mandate of the 1996 General Elections suggested that the people wanted to put BJP in power. But it was prevented from being done by some selfish opportunist leaders. The Motion of Confidence was negated. It should not have been done. The verdict of the 1996 General Elections suggested that the BJP ought to have been given a chance to rule this country.

Alterstep down of the Gujrat Govt. our hon. President would certainly have made Shri Vajpayee as Prime Minister and would allowed him to govern this country till the year 2001 unless otherwise prohibited by the Constitution. If the Constitution had not been the obstacle then the President would certainly have asked the BJP to continue in office and thus mid-term elections would not have been held. If the hon. President had done so, the people would certainly have welcomed it and would have accepted it with plea sure. So, I would again like to submit before the august House not to take any decision against the againt the willingness of the people.

In the last two years the United Front Government has decreased the dignity and prestige of India in the international level. Our economy is in crisis. People all over the world are under an impression that the BJP Government headed by Shri Vajpayee can alone regain the prestige lost in the last Govt. and strengthen the economy. That is why our eminent leader has promised an un-conditional support to this Government. In that line, on behalf of my Party AIADMK and on behalf of the people of Tamil Nadu, I confirm my support and welcome the confidence motion moved by Hon. Prime Minister Shri Vajpayee.

has spoken just now, has made some reference ... (Interruptions)

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN (COIMBATORE): Since the hon. Member has referred to my constituency, I must be given at least five minutes' time. This is my request.

SHRI SANSUMA KHUNGGUR BWISWMUTHIARY : I should at least be given five minutes to speak... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I am calling your name.

hon. Member who has just spoken. He has made a reference to a matter which is sub judice.

SHRI BHASKARRAO PATIL (NANDED): Under which Rule he is raising the point of order?

to behave.... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: What is your point of order?

SHRI SANSUMA KHUNGGUR BWISWMUTHIARY : Hon. Chairman and the learned Members of this House, I am thankful to you... (Interruptions) for giving me this opportunity to speak on our burning Bodoland Question.

MR. CHAIRMAN: I have not allowed you.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: What is the point of order? Please quote the Rule that has been violated.

... (Interruptions)

be enquired into.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order. Please sit down.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions) *

SHRI VAIKO: It is not sub judice. He has made his point. There is nothing wrong in it.

* Not recorded.

MR. CHAIRMAN: Nothing is going on record.

(Interruptions)*

SHRI VAIKO : There was a bomb blast in Coimbatore.... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please sit down.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please sit down. I am on my legs.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: What is your point of order. Quote the rule.

">SHRI SANSUMA KHUNGGUR BWISWMUTHIARY : Sir, I come from Bodoland which is far away from Delhi. ... (Interruptions)... At least you should try to understand the genuine and aggrieved sentiments of the Bodos living in the North-Eastern India. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: You can speak when your name comes.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Your name is in the list.

raised by the hon. Member who has just finished his speech is sub judice. I request you to please go through the record and expunge the relevant portion.

MR. CHAIRMAN: I will examine the record.

SHRI SANSUMA KHUNGGUR BWISWMUTHIARY : Hon. Chairman and the learned Members of the august House, today I rise before you all to table on the floor of the House our genuine demands relating to (1) creation of a separate State of Bodoland on the northern bank of the river Brahmaputra, (2) creation of two Autonomous Districts named Nilachal and Lalung under the Sixth Schedule of the

* Not recorded.

Indian Constitution on the southern bank of the river Brahmaputra and (3) inclusion of the Bodo-Kacharis living in Karbi Anglong Autonomous District in Assam in the Scheduled Tribes (Hills) List. These are the burning and genuine political demands of the indigenous Bodos.

I appeal to the present Government of India to bring a Constitutional Amendment Bill on the floor of this august House to create the long-awaited separate State of Bodoland on the northern bank of river Brahmaputra in order to ensure survival and peaceful existence of the Bodos, their safety and security, their all-round growth and development, and to safeguard the distinct ethnic self-identity of the Bodos. Despite being the sons of the soil being the most aboriginal people and the aboriginal autochthones of Assam, we people have been neglected, discriminated, oppressed, suppressed and misruled ever since Independence. Until and unless this demand for creation of a separate State of Bodoland is considered by the Government, whether it is a Government led by BJP or any other party, any attempt to restore peace and to bring all-round development to Bodoland area in Assam or to the entire North-Eastern region will be an absurd idea. That is why, I would like to appeal to the Government of India, particularly to the hon. Prime Minister, to amend paragraph No.28 of the address made by the hon. President on 25th March, 1998 at the joint sitting of Parliament wherein only the three demands relating to creation of Vananchal in Jharkhand area in Bihar, Uttaranchal in Uttar Pradesh and Chattisgarh in Madhya Pradesh are agreed to and the genuine demand of the Bodos is excluded. I would like to appeal to the hon. Prime Minister to amend this paragraph and to include our genuine and most legitimate demand too for creation of a separate State of Bodoland.

I would like to appeal to the Government of India to include the Bodo language in the Eighth Schedule of the Constitution of India. I felt very sad when I was not allowed to take oath as a Member of Parliament on the 23rd March, 1998 on the floor of this august House in my mother tongue. I requested the hon. Speaker to allow me to take oath in my mother tongue, Bodo.

But, because of certain constitutional constraints, I was not allowed to take my oath in Bodo language. Therefore, I would humbly like to appeal to the present Government of India to include our Bodo language in the Eighth Schedule of the Constitution so as to give it and also to the indigenous Bodo people living in India a due impetus, importance, honour, equal status and dignity.

I could not find any precise language to ascribe about all sorts of manifold tragedies and sufferings that are being faced by the Bodo people ever since Independence. The total population of the Bodos in India will be around one crore. We have 45 tribal belts and blocks. But, interestingly, and also unfortunately, what has happened in Assam is that each and every tribal belt and block is now on the verge of being extinguished. So, under such a crucial situation, creation of a separate State of Bodoland has been a must and this is the only and lasting political solution.

All these tribal belts and blocks were created under special provisions, and protective measures were taken up for the protection of tribal lands and areas, but all these seem to have gone in vain now.

A few years ago, an assurance was given that our language would be given the status of associate State official language but that assurance was not implemented as yet. This status was given only for two areas, namely, Kokrajar district and Udalguri Sub-division. This also has not yet been implemented.

On 20th February, 1993, we had signed a Bodo Accord. That was also not yet implemented. All sorts of assurances and commitments given by the then Congress Government at the Centre headed by Shri P.V. Narasimha Rao were not at all implemented. They backed out of their own words.

I would like to appeal to the Government of India, particularly, the present Prime Minister of India and the learned Members of this august House to extend their helping hand and cooperation towards a political solution of the Bodo land problem through peaceful political negotiations without any further delay.

In this connection, I would also like to urge upon the Prime Minister and the Government of India to introduce a Constitution Amendment Bill on the floor of the House in this current Session itself.

जब तक हम लोगों की प्रोब्लम्स की तरफ ध्यान नहीं दिया जाएगा तब तक हम सोच नहीं पाएंगे कि आप हमारे साथ दिल से मोहब्बत और दया करते हैं। जब हमें अलग राज्य मिल जाएगा तो लाखों लोगों के दिलों में एक नई भावना पैदा होगी कि भारत के अन्य प्रान्तों के लोग भी बोड़ो लोगों से मोहब्बत करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। केवल मुंह से मीठी-मीठी बातों के जरिए मोहब्बत करने से कुछ नहीं होगा। आप भी इंडियन हैं और हम भी इंडियन हैं। केवल मुंह से बोलने पर काम नहीं चलेगा।

We want to live in India as dignified Indian citizens, with equal status and justice.

I have requested the Prime Minister of India and the Government of India to consider our genuine demand for the creation of a separate State of Bodoland. By giving mere crores of rupees as economic package, you cannot bring permanent peace and stability in the Bodoland area in particular and the North-Eastern Region in general. That is why, I strongly urge upon the Union Government of India for immediate creation of a separate State of Bodoland which has been a must. This is my earnest appeal to the Union Government of India as well as to all the hon. Members of this august House.

हमारी कोई परवाह नहीं करता। चाहे जिस पार्टी की गवर्नमेंट बने - चाहे वह बी.जे.पी. की गवर्नमेंट हो या दूसरी पार्टी की गवर्नमेंट हो, उसे हमारी मांग को पूरा करना पड़ेगा।

">

श्री रामदास आठवले : सभापति जी,

‘अंगुली कटवाने से शहीद नहीं हुआ करते।

उसके लिए सिर कटवाने पड़ते हैं।

राज को चलाने वाले अटल बिहारी वाजपेयी जी।

राज को चलाना है तो चलाओ मगर सेक्यूलरिज़्म को अपनाओ।

भाषण कैसा करना है यह अटल जी से पूछो।

राज कैसा चलाना है यह शरद पवार जी से पूछो।

होली कैसी खेलनी है यह लालू से पूछो।

बाबरी मस्जिद को कैसे बचाना है यह मुलायम सिंह से पूछो।

भाजपा से नाता कैसे तोड़ना है यह मायावती से पूछो।

भाजपा से नाता कैसे जोड़ना है यह चंद्रबाबू से पूछो।

भाजपा का सपोर्ट कब निकालना है यह जयललिता जी से पूछो।

सीपीएम का सामना कैसे करना है यह ममता जी से पूछो।’

सभापति जी, इस सभागाह में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने विश्वास का प्रस्ताव रखा है। लोकतंत्र में सबको सरकार स्थापित करने का अधिकार बाबासाहेब अंबेडकर ने दिया है। हमारे दिल में कोई जलजलाहट नहीं है, हमारे दिल में इसके बारे में कोई गड़बड़ाहट नहीं है। सवाल इतना ही है कि सरकार जो भी स्थापित हो रही है, इस सरकार ने कौन सी विचारधारा अपनाई है? भारत के संविधान ने जो सेक्यूलरिज्म का तत्व स्वीकारा है, सर्वधर्म समभाव का तत्व स्वीकारा है ये तत्व भारतीय जनता पार्टी को क्या मंजूर है? अगर भारतीय जनता पार्टी को ये तत्व मंजूर है तो हमारा कहना इतना ही है कि हिन्दुत्व का नारा देने का प्रयत्न नहीं होना चाहिए।

सभापति जी, हिन्दू धर्म से हमारा विरोध नहीं है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर भी हिन्दू थे और दलित समाज भी हिन्दू था मगर यहां के सभी दलितों को गांव के बाहर कुचलने का प्रयत्न हुआ और उनके ऊपर अन्याय करने का प्रयत्न हुआ और इसीलिए बाबासाहब अंबेडकर जी ने हिन्दू समाज को बहुत बार बताया था कि हम भी हिन्दू हैं, हम भी मानव हैं, हमें भी मानव का अधिकार दीजिए। मगर इस हिन्दू समाज ने बाबासाहब और उनके समाज को उनका अधिकार देने का प्रयत्न नहीं किया इसलिए बाबासाहब अंबेडकर जी को बौद्ध धर्म की दीक्षा लेनी पड़ी।

हमारा कहना इतना ही है कि हमारा किसी धर्म से विरोध नहीं है।

राजकाज की बात मैं नहीं कर रहा हूँ, यह बात मान्यता की है। यहां के दलितों को मानवाधिकार देने का प्रयत्न नहीं हुआ इसलिए यहां के दलितों को हिन्दू धर्म छोड़कर दूसरे धर्मों में जाना पड़ा। हमारा कहना इतना ही है कि आप हिन्दू धर्म की रक्षा करें। बाबासाहब अंबेडकर ने जब संविधान लिखा तो वह उन्होंने हिन्दू समाज पर अन्याय करने के लिए नहीं लिखा। बाबासाहब अंबेडकर जी ने संविधान लिखा और उन्होंने हिन्दू समाज को, मुस्लिम समाज को, बौद्ध समाज को, सिख समाज को, ईसाई समाज को समान अधिकार देने का प्रयत्न किया।

सवाल इतना ही है कि भारत के संविधान में जो ईक्वेलिटी की बात कही गई है क्या वह ईक्वेलिटी आज देश में आई है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है। इसके लिए केवल सत्ता में आये हुए लोग जिम्मेदार हैं या हम सभी लोग जिम्मेदार हैं। समाज में एकता लाने के लिए भाजपा की सरकार क्या करने वाली है? यह सरकार कितने दिन चलेगी, हमें मालूम नहीं हमने भी शुरू में अपनी सरकार बनाने का प्रयत्न किया था, लेकिन कुछ लोग उधर चले गये। अभी सरकार बन गई है। आप इधर आते हैं या हम उधर जाते हैं, यह बाद में देखेंगे। लोकतंत्र में इसका हमें अधिकार भी है। यहां मैं पोलिटिकल बात नहीं कर रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ कि अगर अटल जी की सरकार मैजोरिटी में है तो उनको सरकार जब तक मैजोरिटी में है तब तक चलेगी। उसे हम नहीं रोक सकते हैं। लेकिन जब मैजोरिटी कम हो जायेगी तो वह कैसे चलेगी और आप भी नहीं चलेंगे। तब हम चलेंगे। मेरा कहने का मतलब इतना ही है कि यह बारी-बारी से होता है।

सभापति महोदय, चुनाव में नारा था - 'अटल बिहारी, अटल बिहारी', मेरा कहना

है कि साहब, आपकी कितने दिन की है पारी। यहां आपके मैनडेट का क्या परसेंट है। कांग्रेस ने कितने परसेंट मैनडेट पर राज किया है और संयुक्त मोर्चा ने कितने परसेंट में राज किया है। मेरा सुझाव है कि बाबासाहेब अंबेडकर भी टू-पार्टी सिस्टम चाहते थे, जिस तरह अमरीका में टू पार्टी सिस्टम है, इंग्लैंड में टू पार्टी सिस्टम है तथा कुछ देशों में दो-दो पार्टियां हैं। उसी तरह से आप लोगों ने जो सपोर्ट किया है। मेरा कहना यह है कि ममता जी को बी.जे.पी. में नहीं जाना चाहिए और जॉर्ज फर्नांडीज को भी बी.जे.पी. में नहीं जाना चाहिए। बाकी जो बचते हैं हम उनको अपने साथ ले लेते हैं। मेरा कहने का मतलब है कि टू-पार्टी सिस्टम के संबंध में हमारे देश को सोचने की बहुत जरूरत है, वरना हर बार ऐसा ही होने वाला है।

सभापति महोदय (श्री लक्ष्मी नारायण पांडेय): अठावले जी, आप समाप्त कीजिए।

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री रामदास आठवले : सभापति महोदय, मैं पहली बार चुनकर आया हूँ और यहां मेरा पहला भाषण हो रहा है।

सभापति महोदय : आपका पहला भाषण है इसलिए इतना समय आपको दिया है।

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री रामदास आठवले : सभापति महोदय, मुझे थोड़ा समय और दीजिए। मैं कह रहा था कि अभी तो आपकी मैजोरिटी है इसलिए अटल जी हम आपको अभी कुछ तकलीफ देने वाले नहीं हैं। अभी आपके पास मैजोरिटी है। लेकिन इस देश में टू-पार्टी सिस्टम के संबंध में हम सभी लोकतंत्र को मानने वाले लोगों को सोचने की बहुत जरूरत है। अगर सरकार चलानी है तो सेक्यूलरिज्म को अलग रखकर आप सरकार नहीं चला सकते हैं। आपने जो भी वादे किये थे उसमें राम मंदिर बनाने संबंधी किए वादे के बारे में मेरा कहना यह है कि जिस जगह पहले बाबरी मस्जिद थी, उसी जगह पर बाबरी मस्जिद बननी चाहिए अगर राम मंदिर बनाना है तो राम मंदिर उसके बाजू में बनायें। उसके बाजू में बौद्ध विहार भी बना सकें तो नेशनल इंटरेशन का अच्छा नमूना इस देश में रहेगा। आपके मंदिर से हमारा कोई विरोध नहीं है। लेकिन भारत के संविधान ने किसी को मंदिर तोड़ने का अधिकार नहीं दिया है, किसी को मस्जिद तोड़ने का अधिकार नहीं है।

इसलिए वाजपेयी साहब हमें आपसे इस हाउस में आश्वासन चाहिए कि जिस जगह पर बाबरी मस्जिद थी, वह वहीं बनेगी। हम आपका बहुत आदर करते हैं। आप अच्छे कवि हैं, आप एक अच्छे विद्वान हैं। लेकिन आप वहां क्यों चले गये, हमारा इससे मतलब नहीं है। हम आपको एक अच्छे इंसान के रूप में देखते हैं। आर.एस.एस. वालों पर मैं टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहता हूँ। आर.एस.एस. वाले राष्ट्र के लिए अच्छा काम कर रहे हैं, आर.एस.एस. वाले हिंदू धर्म के लिए काम कर रहे हैं और इसीलिए ये लोग आपको कब धोखा दें इसका कोई पता नहीं है। यदि अटल जी जैसे आदमी हमारे साथ होते तो हम आपको प्रधान मंत्री बना देते और वह प्रधान मंत्री का पद पांच साल के लिए होता।

सभापति जी, वह अटल जी पांच साल के थे, ये कितने दिन के हैं, हमें मालूम नहीं। इसलिए हम आपको इतना ही बताना चाहते हैं कि दलितों की रक्षा की जाए। जब तक आपके हाथ में सत्ता है तब तक आपको दलितों के ऊपर होने वाली एंट्रोसिटीज को सख्ती से रोकना चाहिए। इसलिए हमारी आपसे डिमांड है कि बाबा साहेब अम्बेडकर का राष्ट्रीय स्मारक २६, अलीपुर रोड पर बनाने के लिए अधिक से अधिक धन दिया जाना चाहिए। दलितों के हितों की रक्षा किए जाने की बहुत जरूरत है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : अठावले जी, समाप्त करिए।

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री राम दास आठवले: सभापति महोदय, मुझे थोड़ा समय और दिया जाए। मैं कहना चाहता हूँ कि मुम्बई में रमाबाई घाटकोपर में जिन १९ लोगों की हत्या करने का प्रयत्न किया गया था, उन लोगों को न्याय नहीं मिला। मैं चाहता हूँ कि श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट पर हाउस में चर्चा होनी चाहिए। श्री कृष्ण आयोग ने दंगे के लिए जिनको जिम्मेदार ठहराया है, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की जरूरत है। हमारे अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए। इस बात का हमें आश्वासन मिलना चाहिए।

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइए।

MR. CHAIRMAN : Shri N.K. Premachandran.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (QUILON): Sir, the time may be extended. Otherwise, tomorrow I may be called.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record then.

... (Interruptions)

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री राम दास आठवले : सभापति महोदय, हम रिकार्ड के लिए ही तो बोल रहे हैं और आप कह रहे हैं कि रिकार्ड में नहीं जा रहा है। हमें थोड़ा टाइम और दीजिए। हम देश का बंटवारा नहीं होने देंगे। हम आपको इस देश के संविधान को बदलने नहीं देंगे।

सभापति महोदय : अब आप समाप्त करिए।

जब रिकार्ड में कुछ नहीं जा रहा है, फिर भी आप क्यों बोले जा रहे हैं।

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री राम दास आठवले :आप संविधान को बदलने की कोशिश न करे।

(व्यवधान) ।

सभापति महोदय : रिकार्ड में कुछ भी नहीं जा रहा है।

SHRI RAMDAS ATHAWALE (MUMBAI NORTH-CENTRAL)

श्री राम दास आठवले : जय भीम जय भारत।

* Expunged as ordered by the Chair.

">SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, only five minutes' time is left. I may be allowed to speak a few minutes more.

Mr. Chairman, Sir, I am on my legs on behalf of my party, the Revolutionary Socialist Party (RSP) to oppose the Motion of Confidence moved by hon. Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee. The reason for opposing the Motion of Confidence has already been submitted and substantiated by most of the leaders of this Front.

Sir, the election to the Twelfth Lok Sabha which was concluded recently, has again given us a fractured mandate, not giving majority to any single party or a political front. So, the first question to be considered is: Whether the BJP and its allies do they have the majority or do have the mandate of the people to form a Government at the Centre? Sir, according to me, the mandate of the people means the simple majority in the House of the People to form a Government. Whether the BJP and its allies have a simple majority to form a Government is the question to be considered as the first point.

Since the mandate of the people is not with the BJP, I would like to highlight the Constitutional provision also under Article 75(3) of the Constitution which envisages that the Council of Ministers which is appointed by the President of India shall have the collective responsibility to the House of the People. It indicates that the Council of Ministers should command a simple majority in the House of the People.

Sir, immediately after the election, the hon. Prime Minister and the BJP have been invited by hon. Rashtrapatiiji.

They have been asked to give the number of Members who are supporting the B.J.P. They have been allowed to form a Government only on the receipt of the letter from the Telugu Desam Party that they will remain neutral during the Motion of Confidence. That itself goes to show that Rashtrapatiiji has allowed the B.J.P. to form the Government only on the neutral stand taken by the Telugu Desam Party and not because of the majority which is attained in this House.

I would like to say that the mandate of the people is not in favour of the B.J.P. and its allies. Hence, it is lacking in majority. That is why, I oppose this Motion of Confidence.

The second point to be considered is: what was the main slogan of the B.J.P. in the last election? 'You please vote for a Stable Government and an Able Prime Minister.' So, the second question to be considered is whether the B.J.P. and its allies are able to provide a stable Government at the Centre. I would like to submit that the answer is 'no'. It is because that this is a combination of unnatural, unreal and unholy combination of various political parties.

What are the political philosophy and social views of the AIADMK? Are they similar or identical with that of the B.J.P.? There is no political programme or policy. There is no unanimity. First of all, I would like to say that the AIADMK has joined hands with the BJP because the Congress has failed to join hands with the AIADMK. It is not based on any programme or policy. It is due to compulsion that they have joined hands with the BJP.

I am coming to the second constituent, namely, Trinamul Congress led by Kumari Mamata Banerjee. Even Kumari Mamata Banerjee had unequivocally spoken out in the Press conference that she waited for Shrimati Sonia Gandhi's call for seven days. However, no response had come from Shrimati Sonia Gandhi. Hence, she was joining with the B.J.P. Is it on the basis of a political programme? (Interruptions). It has come out in the Press. It is on record. (Interruptions). I am not yielding to you. (Interruptions).

The alliance of Trinamul Congress with the BJP is a revengeful reaction to the Congress Party and a revengeful reaction to the Left Front in West Bengal. That is also not on the basis of a programme or policy.

In Haryana, the Haryana Vikas Party and the Haryana Lok Dal are fighting each other. However, in Delhi they are supporting the B.J.P. The stability of this Government could be tested from the first instance itself because the AIADMK supremo had come to Delhi, had discussions with the B.J.P. leaders and even accused Shri Ramakrishna Hegde, who is the Minister in the Cabinet and who is an ally of the B.J.P. (Interruptions). What is the meaning of it? The B.J.P. is ready to surrender all the political values and whenever the AIADMK demands something, they are ready to surrender everything. (Interruptions). It is learnt from the Press that they have demanded the portfolio of the Ministry of Law. It is given to them. They have demanded the portfolio of the Ministry of Finance. They have been given again a fractured Finance portfolio. There are some other demands. They have demanded for reservation, etc. (Interruptions).

THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI R. MUTHIAH): What is the proof for it? (Interruptions).

SHRI N.K. PREMCHANDRAN : It has come out in the Press. (Interruptions).

SHRI M. THAMBI DURAI: In the Press so many things might come. Is it necessary to bring everything here to say that we were bargaining? (Interruptions).

SHRI N.K. PREMCHANDRAN : There are two important issues which are concerned with Kerala also. The Government should disclose the assurances and commitments given to AIADMK regarding these two disputes, i.e., Mullaperiar Dam and Cauvery Water Dispute. (Interruptions).

21.00 hrs

About Mullaperiyar Dam, it has come out in the newspapers that its height has to be increased. Like that, the Cauvery water dispute is also there. I would appeal to the hon. Prime Minister... (Interruptions) You are a Minister, please be seated... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please, Shri, Janarthanan.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, through you, I would appeal to the hon. Prime Minister... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Premachandran, your time is over now. Only four minutes were allotted to your party. Please conclude now.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir, half of the time has been taken away by way of interruptions.... (Interruptions)

SHRI MADAN LAL KHURANA (DELHI SADAR)

श्री मदन लाल खुराना : सभापति जी, मेरा प्रस्ताव है कि सदन का समय एक घंटा और बढ़ा दिया जाए।

सभापति महोदय : सदन का समय ९.०० बजे तक था। माननीय संसदीय कार्य मंत्री प्रस्ताव कर रहे हैं कि सदन का समय एक घंटा बढ़ा दिया जाए। क्या एक घंटा और बढ़ाने के लिए सदन की राय है ?

कुछ माननीय सदस्य : नहीं, नहीं।

कई माननीय सदस्य : ठीक है।

AN HON. MEMBER: He can continue tomorrow, Sir.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I shall continue tomorrow, Sir.

सभापति महोदय : सदन का समय एक घंटा बढ़ा दिया जाता है।

Now please continue, Shri Premachandran, and finish within two-three minutes.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, through you, I would like to ask the hon. Prime Minister what are the commitments and assurances given regarding this Cauvery dispute and also about this Mullaperiyar Dam. To that extent, I am forced to say that AIADMK asked BJP to kneel but BJP has crawled before them.

Another ally of BJP is Shri Subramaniam Swamy. He has accused even Shri Ramkrishna Hegde for some commission in the HDW submarine case also. So, these things are being done by the allies of the BJP front.

SHRIMATI MALTI DEVI (NAWADA)

श्रीमती मालती देवी (नवादा) : आप बार-बार एक-एक घंटे का समय बढ़ा रहे हैं, एक बार ही बोल दें कि सदन का समय चार घंटे के लिए बढ़ाया जाता है।

सभापति महोदय : यह माननीय सदस्यों की राय पर हो रहा है। आप बैठिए।

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, BJP has always been criticising the unnatural combination and intra-contradictions of the United Front Government. What type of alliance is going on now?

SHRI RAJO SINGH (BEGUSARAI)

श्री राजो सिंह (बेगुसराय) : हाउस को चलाना है तो लोगों की राय से चलाएंगे या जैसा मन होगा, डिक्टेटरशिप करेंगे।

... (व्यवधान)

आपने ही पूछा था कि क्या ९.०० बजे तक टाइम बढ़ा दें।

... (व्यवधान)

ऐसा मत करिए। कल भी तो डिबेट होगी।

सभापति महोदय : इस तरफ से भी समय बढ़ाने के लिए बोला गया था।

... (व्यवधान)

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, the fourteen-party United Front is having a common cause. The common cause of the United Front was to keep the communal forces out of power. I would like to know what is the common cause in uniting BJP and all its allies which I have already enunciated.

Coming to the manifesto and the national agenda for governance, in the manifesto, it has already been illustrated here that there were three main planks of the election campaigning. Number one, scrapping of article 370; number two, construction of temple at Ramjanmabhoomi at Ayodhya; and number three, uniform civil code. What has happened to these three planks in the election campaigning immediately after the national agenda? So, that has become the hidden agenda. I am damn sure that these three agendas will come up. Now it is being kept under the carpet and it will come out after getting the Confidence Vote. So, I would like to enlighten the partners of the BJP allies that if the national agenda for governance is silent in respect of all these three issues, these will emerge as the three main important issues in the coming days.

So, they will be forced to repel at that time. I would like to say something regarding Hindutva. The BJP always sails on Hindutva. What is meant by Hindutva? Sir, Hindutva is a glorious tradition which is an electric and cosmopolitan tradition of our country. Sir, I feel it is. Since the BJP is following that Hindutva tradition, I would say that "

सर्वधर्म समभाव

is the hallmark of the tradition. "

वसुधैव कुटुम्बकम्

which has already been mentioned means that the whole world is one family. The Hindutva is always identified with liberalism and tolerance. We are witness to December 6, 1992 incident.

MR. CHAIRMAN : Shri N.K. Premachandran, kindly conclude.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, I am concluding. Does BJP follow the principles of Hindutva? I would like to say, Sir, 'No'. They are always misinterpreting the principles of Hindutva for political advantages. That is what is happening in the country. In their election campaign, all these measures have been used for getting votes. Immediately after getting the votes and getting the majority here, that is, getting more seats in Parliament, they have combined their front. A national agenda has been formed. It is a hidden agenda and it will again come up which is clear from the Sangh Parivar leader's statement about which it has already been said.

Sir, I conclude with the words of the hon. Prime Minister. We all respect him. There is no doubt about it. The disrespect is done by the senior General Secretary of the Bharatiya Janata Party by saying that he is a mask. We never say about him in such a way. So, I would like to conclude with the words of the Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee. Shri Vajpayee in his speech on the first Confidence Motion in the Eleventh Lok Sabha said and I quote "Democracy rests on moral ethics. Basically, that is a morality based system."

I oppose this Motion only because this BJP led front is lacking moral ethics and moral principles. It is lacking majority also. Hence, I once again strongly oppose the Motion of Confidence. It is being laid before this House by Shri Atal Bihari Vajpayee.

श्री किशन सिंह सांगवान (सोनीपत) : सभापति जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने विश्वास मत हासिल करने के लिए जो प्रस्ताव पेश किया है, उसके समर्थन के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ।

मैं न सिर्फ अपनी तरफ से, बल्कि अपनी पार्टी की तरफ से

... (व्यवधान)

COL. SONA RAM CHOUDHARY (BARMER)

कर्मल सोनाराम चौधरी (बाड़मेर) : कौन सी पार्टी? आपकी शर्तें क्या हैं?

SHRI KISHAN SINGH SANGWAN (SONEPAT)

श्री किशन सिंह सांगवान : हरियाणा लोकदल राष्ट्रीय पार्टी, चौधरी देवी लाल की पार्टी माननीय वाजपेयी जी को बाहर से समर्थन दे रही है। हमारे माननीय नेता स्वतंत्रता सेनानी पूर्व उप प्रधान मंत्री चौधरी देवी लाल जी की तरफ से मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ, उनको हार्दिक बधाई भी देता हूँ।

आज जो राजनैतिक स्थिति है, जिस प्रकार का गठन लोकसभा का हुआ है, उससे जाहिर है कि आज देश की जनता ने क्षेत्रीय पार्टियों को, रीजनल पार्टियों को काफी महत्व दिया है। हमारी पार्टी हरियाणा लोकदल राष्ट्रीय पार्टी भी रीजनल पार्टी है। हमने हरियाणा के दोनों फ्रण्ट जो आज लोकसभा में हैं, दोनों के खिलाफ चुनाव लड़ा है। जिस भारतीय जनता पार्टी की सरकार को हम समर्थन दे रहे हैं, हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी का हरियाणा विकास पार्टी के साथ गठबन्धन है। उनकी मिली जुली सरकार वहाँ चल रही है, वहाँ हमारा राजनैतिक तौर पर उनसे टकराव है, अनेक मतभेद हैं और हरियाणा की जनता ने उस सरकार के खिलाफ फतवा देकर चौधरी देवी लाल जी की पार्टी, चौटाला साहब की पार्टी के हक में मत दिया है।

जिसकी वजह से आज हमारे चार साथी आपके बीच में विराजमान हैं। अनेक मतभेदों के बावजूद, अनेक टकरावों के बावजूद राष्ट्रीय हित में हमने भारतीय जनता पार्टी को बिना शर्त समर्थन दिया है।

COL. SONA RAM CHOUDHARY (BARMER)

कर्मल सोना राम चौधरी (बाड़मेर): यह तो ऊपर की बात, अंदर की क्या बात है?

SHRI KISHAN SINGH SANGWAN (SONEPAT)

श्री किशन सिंह सांगवान : अंदर की बात आप जानते होंगे। मेरे साथी मुलायम सिंह जी ने और कांग्रेस के दूसरे नेताओं ने शक की नजर से देखा है, मैं कहना चाहता हूँ कि यह समझौता बिना शर्त का है। यह पार्टी चौधरी देवीलाल जी की पार्टी है। देवीलाल जी ने जिंदगी में जो जुबान की, उसको निभाया है। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि अटल बिहारी वाजपेयी जैसा नेता आज की स्थिति में कोई दूसरा नहीं है। वह प्रधानमंत्री बने।

सभापति महोदय, इनकी कथनी और सोच कांग्रेस के भाइयों की तरह नहीं है। हमारी पार्टी का कई बार भाजपा के साथ समझौता हुआ है और टूटा है। लेकिन हमने कभी कांग्रेस के साथ समझौता नहीं किया है और न ही करेंगे। हम हृदय से राष्ट्रीय हित में भारतीय जनता पार्टी का समर्थन कर रहे हैं और बिना किसी लोभ या लालच के कर रहे हैं।

आज जिस स्थिति में देश गुजर रहा है, यह वाजपेयी जी के लिए बड़ी भारी चिंता है। हर क्षेत्र में गरीबी की वजह से, बेरोजगारी की वजह से और भ्रष्टाचार की वजह से तथा राजनीतिक अस्थिरता की वजह से देश अनेक चिंताओं से गुजर रहा है। मैं आपके माध्यम से प्रधान मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूँ कि कुछ ऐसी समस्याएँ हैं, जिनको भाईचारे से बैठकर, बातचीत के जरिए सुलझाया जा सकता है। हमारे हरियाणा प्रदेश की भी कुछ

समस्याएं हैं। आज से ३२ साल पहले १९६६ में हरियाणा अलग प्रदेश बना था। चौधरी देवीलाल जी के संघर्ष की वजह से हरियाणा बना था। ३२ साल के बाद लगातार हरियाणा प्रदेश का टेरिटरी का मामला, पानी का मामला, राजधानी का मामला तथा सीमा का विवाद लम्बित पड़ा है। मैं आपके माध्यम से कांग्रेस के भाइयों को और देश की जनता को बताना चाहता हूँ कि यून तो क्षेत्रीय समस्याएं पानी की और सीमा की अन्य राज्यों की भी हैं, लेकिन कांग्रेस का आज तक का इतिहास रहा है कि वह पहले समस्याओं को पैदा करती है, फिर उनको उलझाती है और फिर लटकाती है। आज जितनी भी ऐसी समस्याएं लटकी पड़ी हैं, वे कांग्रेस की देन हैं। जैसे जार्ज फर्नांडीज जी ने बताया कि आजादी के ५० सालों में से कम से कम ४५ साल तक देश में कांग्रेस का राज रहा है। इसलिए सारी समस्याएं कांग्रेस की देन हैं।

हरियाणा की राजधानी का मामला, क्षेत्रीय विवाद और पानी का मामला उलझा पड़ा है। मुझे पूरा विश्वास है कि अटल बिहारी वाजपेयी जी, जिनमें पूरी काबिलियत है, इनकी सूझबूझ से हरियाणा प्रदेश की ३२ साल से लटकी इन समस्याओं को सुलझा लिया जाएगा। हमारे प्रदेश की मुख्य समस्या पानी की है। आज यहां के लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस रहे हैं। सबसे दुख की बात तो यह है कि और प्रदेशों का तो आपस में झगड़ा हो सकता है, लेकिन हमारा जिस पानी का झगड़ा है, वह हमारे हिस्से का पानी पाकिस्तान जा रहा है लेकिन हरियाणा को उसका हिस्सा नहीं दिया जा रहा है।

हमारे हिस्से का पानी पाकिस्तान में जा रहा है। पंजाब सूबा हमारा बड़ा भाई है। हम उसको बड़ा भाई मानते हैं लेकिन अपने अधिकार के लिए हर आदमी लड़ता है। यदि वह पानी पाकिस्तान जाने की बजाए हरियाणा को दे दिया जाए तो हरियाणा की प्यासी धरती को पानी मिल सकता है, वहां का किसान खुशहाल हो सकता है। ये कुछ ज्वलंत प्रश्न हैं। हमारे प्रदेश को ये बहुत पुरानी समस्याएं पीडित पड़ी हुई हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार इन समस्याओं पर गौर करेगी और हरियाणा के किसानों को, वहां के गरीब आदमियों को पानी और बिजली अवश्य दिलाएगी। इसके अलावा आज देश की अस्सी प्रतिशत जनता

... (व्यवधान)

">">

COL. SONA RAM CHOUDHARY (BARMER)

कर्नल सोनाराम चौधरी (बाड़मेर): अभी आप कह रहे हैं बिना शर्त का समर्थन है। ... (व्यवधान)

SHRI KISHAN SINGH SANGWAN (SONEPAT)

श्री किशन सिंह सांगवान : यह शर्त नहीं है।

... (व्यवधान)

अपनी समस्याएं बताना कोई शर्त नहीं है।

... (व्यवधान)

हरियाणा के लोगों की समस्याएं हमने बताई है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय (डा. लक्ष्मी नारायण पांडेय): कृपया समाप्त करिए।

SHRI KISHAN SINGH SANGWAN (SONEPAT)

श्री किशन सिंह सांगवान: आपने मुझे दो मिनट का समय दिया। समस्याएं तो बहुत हैं।

... (व्यवधान)

COL. SONA RAM CHOUDHARY (BARMER)

कर्नल सोनाराम चौधरी (बाड़मेर): बंसीलाल जी की बात करिए कि उन्होंने क्या किया है।

... (व्यवधान)

SHRI KISHAN SINGH SANGWAN (SONEPAT)

श्री किशन सिंह सांगवान: बंसीलाल जी तो अपने बोझ से गिर जाएंगे।

... (व्यवधान)

हमारी कोई शर्त नहीं है। बंसीलाल जी अपने कुकर्मों की वजह से, अपनी गलतियों की वजह से और गलत नीतियों की वजह से खुद गिर जाएंगे। हमें किसी से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

... (व्यवधान)

में आपके सामने अर्ज कर रहा था कि अस्सी फीसदी जनता खेती पर निर्भर करती है। आज किसान की हालत बहुत बुरी है। पंजाब की सरकार ने अच्छा उदाहरण पेश किया है। वहां के किसानों को बिजली और पानी मुफ्त मिलता है और हमने भी अपने घोषणा-पत्र में यह वादा किया था कि यदि हरियाणा में हमारी सरकार बनेगी तो किसानों को मुफ्त बिजली तथा पानी देंगे। मुझे वाजपेयी जी पर पूरा भरोसा है। उन्होंने जो राष्ट्रीय एजेंडा तैयार किया है, उसमें कृषि नीति के बारे में भी उल्लेख किया गया है। हालांकि उसमें कुछ विस्तार से नहीं है लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि कृषि के लिए, किसानों के लिए, योजनाएं अवश्य बनाई जाएंगी।

आज अखबार में इस बात का जिक्र हुआ था कि गेहूँ का भाव ४५५ किन्टल रुपए तय करने की चर्चा है। बड़े अफसोस की बात है कि हरियाणा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के सर्वे के मुताबिक ६७५ किन्टल रुपए का भाव इस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने आंका है। अतः मैं वाजपेयी जी से अनुरोध करूंगा कि हरियाणा के किसानों की खुशहाली के लिए, देश के किसानों की खुशहाली के लिए आप कम से कम ७०० रुपए किन्टल के हिसाब से किसान को भाव दें क्योंकि खाद, डीजल और पेस्टीसाइड्स के दाम काफी बढ़ गए हैं तथा पानी और बिजली की अत्यंत कमी है, इसलिए किसान को भी उचित मूल्य मिलना चाहिए। तथा गरीब लोगों को सस्ता दिया जावे।

जब तक किसान खुशहाल नहीं होगा, कोई भी वर्ग खुशहाल नहीं हो सकता, यह देश खुशहाल नहीं हो सकता। अतः किसान को बिजली, पानी और उसका उचित दाम दिया जाए। यह मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ।

समस्याएं तो बहुत सारी हैं। बाढ़ का मामला है, सेम का मामला है, और भी बहुत सी समस्याएं हैं। कल रेलवे का बजट आया था, समय कम होने की वजह से हमें बोलने का समय नहीं मिला। सारे हरियाणा प्रदेश की एक समस्या मैं आपके सामने जरूर रखना चाहता हूँ

कि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि रेलवे विभाग के पास हरियाणा का कोई मानचित्र नहीं है। रेलवे के पास जो मानचित्र है, उसमें हरियाणा का कहीं नाम नहीं है। आज्ञादी के बाद रेलवे विभाग द्वारा हरियाणा में कोई काम नहीं किया गया, कोई नई रेलवे लाइन नहीं बिछाई गई। दिल्ली हमारी राजधानी है। दिल्ली के तीनों तरफ हरियाणा है। कम से कम दस लाख आदमी रोजाना हरियाणा से दिल्ली में आते हैं।

नौकरी के लिए आते हैं, व्यापार के लिए आते हैं और कोई दूध व सब्जी लेकर आते हैं। मेरे कहने का मतलब है कि दस लाख आदमी रोजाना दिल्ली में आते हैं और जाते हैं। उनकी कितनी बुरी हालत है, यह आप स्वयं देख सकते हैं। भेड़-बकरियों की तरह से, जैसे मुर्गियों को लाद कर ले जाया जाता है, इस प्रकार से लोग आते हैं। सारे पढ़-लिखे सभ्य आदमी हैं। इसलिए मैं आपसे मांग करता हूँ कि उनकी समस्याओं का निदान कीजिए। यह कोई बहुत लम्बी-चौड़ी बात नहीं है, सिर्फ एडिशनल बोगियां लगा दीजिए या एडिशनल ट्रेन चला दीजिए, इतने से ही समस्या हल हो जाएगी और दस लाख आदमियों का भला हो जाएगा।

अंत में, मैं आपका शुकिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया। मैं सदन में यह वायदा करता हूँ और आपको आश्वासन दिलाता हूँ, जिन भाइयों के दिमाग में इस बात का भ्रम है कि हमारा बाहर से समर्थन है, वे इसको दिमाग से निकाल दें। हमें विपक्ष में बैठना मंजूर है, लेकिन वाजपेयी जी का साथ छोड़ना मंजूर नहीं है।

MR. CHAIRMAN : Now, I call Shri R.K. Hegde. He is absent; then, Shri Banatwalla - absent; Dr. Jayanta Rongpi - absent; Shri Hannan Mollah - absent; Shri Sultan Owaisi - absent; Shri Anand Mohan absent. Shri M.A. Naqvi...

... (Interruptions)

SHRI SURESH KURUP (KOTTAYAM): Sir, thinking that the House will sit only up to nine o'clock and their turn will come tomorrow, they have all left.

">

">

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार नकवी): सभापति महोदय, मैं विश्वास मत के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। इस बार के चुनाव ने हर मजहब, हर जाति और हर समुदाय के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी को और उनके सहयोगी दलों को केन्द्र में सरकार बनाने के लिए जनादेश दिया है। पिछली बार जब अटल जी की सरकार के विश्वास मत पर बहस हो रही थी, मुझे याद है, उस समय धर्म-निरपेक्ष कहे जाने वाले लोगों ने एक चिन्ता व्यक्त की थी कि इस सरकार के साथ नार्थ-ईस्ट के कितने लोग हैं, दक्षिण से कितने लोग हैं, मुसलमान कितने हैं और अल्पसंख्यक कितने हैं। मैं यह बहुत सुबह से सुन रहा हूँ। धर्म-निरपेक्ष कहने वाले वरिष्ठ नेताओं ने इस संबंध में बहस की है। आज भारतीय जनता पार्टी और सहयोगी दलों को नार्थ-ईस्ट में भी अच्छी सफलता मिली है और दक्षिण में भी भारतीय जनता पार्टी व सहयोगी दलों को अच्छी सफलता मिली है। मैं खुद एक मुसलमान हूँ और भारतीय जनता पार्टी के टिकट से मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र रामपुर से चुनाव जीतकर आया हूँ।

COL. SONA RAM CHOUDHARY (BARMER)

कर्मल सोनाराम चौधरी : और कितने आए हैं ?

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: कांग्रेस में कितने हैं ?

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : हर बार आप डिस्टर्ब कर रहे हैं। कोई सीमा होती है। ... (व्यवधान)

SHRIMATI SUKHDA MISRA (ETAWAH)

श्रीमती सुखदा मिश्र (इटवा): उत्तर प्रदेश से तो कांग्रेस का एक भी जीत कर नहीं आया है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : माननीय सदस्य बैठे-बैठे इस तरह से बात न करें। यह ठीक नहीं है।

SHRI MUKHTAR NAQVI (RAMPUR)

श्री मुख्तार नक्वी: एक धर्म-निरपेक्ष कही जाने वाली पार्टी के नेता ने एक अखबार में ब्यान दिया है कि अगर भारतीय जनता पार्टी ने एक भी मुसलमान को संसद में चुनाव जीत कर बैठा दिया, तो उसका समर्थन केन्द्र में रूकीकर कर लेंगे। मुझे यह उम्मीद थी, मुझे यह आशा थी कि जिस तरह से दक्षिण में भारतीय जनता पार्टी को सफलता मिली है, जिस तरह से नार्थ-ईस्ट में भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दलों को सफलता मिली है,

जिस तरह से पूरे देश में हर जाति, हर धर्म, सम्प्रदाय और हर क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों को एक मजबूत सफलता मिली है, जिस तरह से अल्पसंख्यकों में भारतीय जनता पार्टी के लिए विश्वास बढ़ा है तो हमें लग रहा था कि विपक्ष के लोग, धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले लोग इसका स्वागत करेंगे। पिछली बार इन्होंने चिन्ता व्यक्त की थी और इस बार इतनी अच्छी सफलता के बाद पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी हर जाति, सम्प्रदाय के लोगों द्वारा स्वीकार कर लेने के बाद मुझे लगता था कि विपक्ष के लोग स्वागत करेंगे लेकिन अफसोस है कि वह स्वागत इन्होंने नहीं किया। वास्तविकता यह है कि विपक्ष के जो धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले लोग हैं, जो आज विपक्ष में बैठे हैं, जो ५० सालों तक सत्ता में बैठे रहे हैं उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का हौवा दिखा कर, साम्प्रदायिकता का हौवा दिखा कर, क्योंकि मेरी समझ से अगर किसी भी कौम, किसी भी व्यक्ति को डराना हो, उसका शोषण करना हो तो उसके अंदर डर पैदा करना होता है, भय पैदा करना होता है और इन लोगों ने आज तक मुसलमानों में अल्पसंख्यकों में भारतीय जनता पार्टी का भय एवं डर पैदा किया। क्योंकि जब आदमी डरता है तो कमजोर होता है और जब कमजोर होता है तो उसका आसानी से शोषण किया जा सकता है। उन्होंने देश को मुसलमानों के अंदर भय पैदा किया और उसके बाद उन्हें कमजोर किया और कमजोर करके उनका राजनैतिक शोषण आज तक किया। उनकी चिन्ता केवल यह है कि अब उस राजनैतिक शोषण की उनकी दुकानें बंद होने के कगार पर आ गई हैं। आज भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में सरकार बन गई है। आज भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में टिकाऊ सरकार बन गई है और अब इनके सामने कोई चारा ऐसा नहीं है कि ये कह सकें कि भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में सरकार बन जाएगी तो मुसलमानों का अहित होगा, नुकसान होगा।

महोदय, मैं मुस्लिम समुदाय से आता हूँ। मैं अपने मजहब पर विश्वास करता हूँ लेकिन मैं उसके साथ ही अपने को गौरवान्वित होकर कहता हूँ कि मैं भारत माँ की संतान हूँ, मैं राष्ट्रवादी हूँ। मैं आज इस बात को कहता हूँ कि इस देश का हर मुसलमान, हर सिख, ईसाई फ़ख्र के साथ अपने आपको भारत माँ की संतान कहेगा तो वह सच्चा मुसलमान, हिन्दू, सिख, ईसाई होगा। मगर हमारे धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले लोगों का यह दुर्भाग्य है कि जो लोग धर्मनिरपेक्षता के नाम पर आज तक देश में सरकार चलाते रहे हैं, जो राजनैतिक पार्टियाँ आज तक धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अपनी राजनैतिक दुकानें चलाती रही हैं उन्होंने लोगों को अपने आपको राष्ट्रवादी कहने में शर्म महसूस की। उन्होंने लोगों के अंदर ऐसी भावना पैदा कि कि वे अपने आपको भारत माँ की संतान न कह सकें। आज जो मुसलमानों की समस्याएँ रही हैं वे समस्याएँ नहीं हैं, उनकी समस्या रोजगार की समस्या है, शिक्षा की, सम्मान की समस्या है, बराबरी की समस्या है। अटल बिहारी वाजपेयी जी और उनके सहयोगी दलों की सरकार मुसलमानों की इन समस्याओं का हल तत्परता और प्राथमिकता से करेगी, जिसे कि आपने ५० सालों में नहीं किया है। आपने उनका शोषण किया है। आपने बोटों की दुकानें चला करके, राजनैतिक दुकानें चला कर मुसलमान बोटों की नीलामी और खरीद-फरोख्त की है लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने उस पर विश्वास नहीं किया है। हमारा मानना है कि आज पूरे देश में जो संकट का समय है, आज इस संकट की घड़ी में, जब कि यह बात आज सारे लोगों को स्पष्ट हो गई है कि जनादेश भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दलों के लिए है। मेरी तो अपील है-

'दे रहा है आदमी का दर्द जब आवाज दर-दर,

चुप रहे तुम तो, कहां सारा जमाना क्या कहेगा,

जब बहारों को खड़ा नीलाम पतझड़ कर रहा,

तुम रहे खामोश तो यह आशियाना क्या कहेगा।'

महोदय, मेरा तो यह कहना है कि आज इस संकट की घड़ी में, जब कि इस देश को, इस देश की बहारों को धर्मनिरपेक्ष कही जाने वाली आपकी विचारधाराएं नीलाम कर रही हैं, ऐसे में आप खामोश मत रहिए, इस बहार को और मजबूत करिए। इस देश को राष्ट्रवाद को मजबूत कीजिए।

इसी में मुसलमानों का भी भला है, इसी में हिंदुओं का भी और देश का भी भला है।

मैं रामपुर संसदीय क्षेत्र से चुनकर आया हूँ। वहां ५० प्रतिशत मुसलमान रहते हैं। वह भारतीय जनता पार्टी का पारंपरिक क्षेत्र नहीं है। भारतीय जनता पार्टी वहां बहुत कठिन परिस्थितियों में चुनाव लड़ती रही है। जब मैं चुनाव लड़ रहा था तो ये धर्म-निरपेक्ष कहे जाने वाले लोग, जो मुसलमानों का दोस्त बनने का ढोंग करते हैं, इन्हीं समाजवादी पार्टी के और बहुजन समाज पार्टी के लोगों ने अपने सदस्य को चुपचाप बैठा दिया और कांग्रेस के सदस्य को सुपोट किया। मुझे याद नहीं आ रहा है कि रामपुर को अलावा भी कोई ऐसा संसदीय क्षेत्र है जहां बसपा और सपा दोनों की जमानतें जब्त हुई हैं। इनकी कोशिश रही कि भारतीय जनता पार्टी का मुस्लिम कैंडिडेट न जीत पाए। क्योंकि अगर भारतीय जनता पार्टी की तरफ से मुसलमान कैंडिडेट जीत गया तो उन्होंने जो पिछली बार शोर मचाया था कि तुम्हारे पास मुसलमान कहां हैं, तुम्हारे पास दक्षिण का कहां है, तुम्हारे पास पश्चिम का कहां है, तुम्हारे पास नार्थ-ईस्ट का कहां है, वह शोर नहीं मचा पाएंगे, वह बोल नहीं पाएंगे। लेकिन उनकी योजना बुरी तरह असफल हुई और भारतीय जनता पार्टी ने मुस्लिम बहुल क्षेत्र से शुरूआत की है। आज एक सीट जीती है और मैं देश को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि भारतीय जनता पार्टी और मित्र दलों के छः महीने का काम देखने के बाद इस देश का मुसलमान भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ पैदा की गयी गलतफहमियों को दूर करेगा और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व भारतीय जनता पार्टी की ओर से इस सदन में बहुत बड़ी संख्या में होगा।

... (व्यवधान)

KUMARI MAMATA BANERJEE : Sir, when the discussion on the Motion of Confidence is going on, they are questioning the credibility of the Government. They want the Government to prove its majority. But no opposition leader is there. Please see this side. We are all sitting. Please also see that side which is totally vacant...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Prof. Kurien, he is not yielding. Please take your seat.

... (Interruptions)

SHRI MUKHTAR NAQVI (RAMPUR)

श्री मुख्तार नक्वी : साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस सदन में काफी चर्चा हुई। साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता को इस देश में जिस तरह से पेश किया गया है वह पूरे देश के लोगों के लिए चिंता का विषय है। भारतीय जनता पार्टी को साम्प्रदायिकता के कठघरे में खड़ा कर दिया गया है और अपने आपको इन्होंने धर्मनिरपेक्षता की लाइन में खड़ा करने की कोशिश की है। यह मात्र लोगों को गुमराह करने और लोगों का वोट लेने के लिए किया गया है। मैं बताना चाहता हूँ कि भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ इनकी धर्मनिरपेक्षता वोट की राजनीति के अलावा कुछ नहीं है।

१९७७ में वाजपेयी जी जब विदेश मंत्री बन रहे थे तो उस समय भी खुद को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले लोगों ने चिंता व्यक्त की थी कि ये जनसंघ से संबंध रखते हैं और इस देश के मुसलमानों में परेशानी होगी और इस्लामिक देशों से हमारे संबंध खराब होंगे। लेकिन आपको याद होगा कि इस्लामिक देशों के लोग और यहाँ तक कि पाकिस्तान आज भी कहता है कि अटल जी जब विदेश मंत्री थे तो भारत के सबसे अच्छे रिश्ते इस्लामिक देशों से थे। यह बात आज भी इस्लामिक देशों के लोग महसूस करते हैं। अब मैं इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

श्री रामानंद सिंह (सतना) : जनता ने अपना जनादेश भारतीय जनता पार्टी को पक्ष में दिया है। चालीस में से तीस लोग मध्यप्रदेश से जीतकर आए हैं। मध्यप्रदेश की ओर से श्री अजीत जोगी ने अपने विचार रखे हैं। हम चाहते हैं कि जिस पार्टी को मध्य प्रदेश ने बहुमत दिया है उसके विचार भी सदन में आ जाएं। मैं रामानंद सिंह मध्य प्रदेश की ओर से अपने विचार रखना चाहता हूँ। कृपया मुझे पांच मिनट का समय दिया जाए।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय, लोक सभा चुनाव में देश के मतदाताओं ने अपना जनादेश दे दिया। आज जनादेश मोटे तौर पर स्पष्टतः पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में सरकार बनाने का रहा। यही कारण है कि भारतीय जनता पार्टी के सभी सहयोगी दलों ने भारतीय जनता पार्टी के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को लिखित समर्थन महामहिम राष्ट्रपति महोदय को दिया। यह बहुत खेद की बात है कि जब विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है तो सारा विपक्ष गायब है। वे कुछ सुनना ही नहीं चाहते। अभी कुछ सदस्यों का बोलना बाकी है। बड़े लोग बोल-बोल कर भागते जा रहे हैं।

... (व्यवधान)

मेरा पहला भाषण है। आप उसे सुनें। देश की जनता का कुल मिला कर जनादेश यह है कि राष्ट्रीय राजनैतिक दल, क्षेत्रीय दल और राष्ट्रीय नेता, क्षेत्रीय नेता इस देश को चलाएं और पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में जो एक योग्य सरकार का गठन हुआ है, उसे काम करने का मौका दें।

महोदय, आज समूचे देश की निगाहें इस संसद की ओर लगी हैं। पिछले ५० वर्षों में जो सरकारें चलीं, उनके क्रियाकलाप से पूरा देश अवगत है। इसलिए भारत के मतदाताओं ने पिछले दो चुनावों में कांग्रेस को कोई बहुमत नहीं दिया। तिकड़म जोड़-तोड़ करके भले ही वे कुछ संख्या में आए लेकिन इस दल की सत्ता में जो दुर्गति हुई है, समूचा देश उसका साक्षी रहा है। मैं कहना नहीं चाहता लेकिन आज जो लोग वोट आफ कॉन्फिडेंस का विरोध कर रहे हैं, मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि जनता पार्टी के शासनकाल में सवा दो रुपए किलो शक्कर थी और उनके राज में आज साढ़े पांच रुपए किलो नमक मिल रहा है, वे लोग इस विश्वास प्रस्ताव का किस मुंह से विरोध करना चाहते हैं ?

">

महोदय, प्रधानमंत्री महोदय ने राष्ट्रीय एजेंडे और राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के माध्यम से अपना इरादा राष्ट्र के सामने स्पष्ट कर दिया है कि वे आम सहमति से सब को लेकर इस देश और सरकार को चलाना चाहते हैं लेकिन प्रतिपक्ष पिछले दो-तीन दिन से जो भूमिका निभा रहा है, सारा राष्ट्र उनकी भूमिका को देख रहा है। आप किन बिन्दुओं पर आलोचना कर रहे हैं ? कितनी विसंगति से भरे लोग वहाँ बैठे हैं ? आज मैं मुलायम सिंह यादव जी का भाषण सुन कर चकित हो गया। लालू जी. यहाँ से उठ कर चले गए। आज ये लोग सरकार का विरोध कर रहे हैं। उन्हें यह स्पष्ट करना होगा कि क्या वे कांग्रेस का खुला समर्थन करने के लिए तैयार हैं ? भाजपा और सहयोगी दलों को जनादेश प्राप्त हुआ है। क्या आपको सरकार बनाने का जनादेश है ? क्या आप आज फिर से मध्यावधि चुनाव चाहते हैं ? क्या आप इसके लिए तैयार हैं ? आप कोई सरकार इस देश में चलने देना चाहते हैं या नहीं ?

महोदय, जो राष्ट्रीय एजेंडा राष्ट्र के सामने है, उन्हीं पर हमारी सरकार चलेगी। यह अलग बात है कि भारतीय जनता पार्टी ने घोषणा पत्र में क्या कहा। जो राष्ट्रीय एजेंडा है, वही राष्ट्र के सामने एक दस्तावेज है। इस एजेंडे के किस बिन्दु का आप विरोध कर रहे हैं ? मैं जानना चाहूँगा जब कोई प्रतिपक्ष का कोई नेता खड़ा होकर कहे,

इस राष्ट्रीय एजेंडे में जो बातें कही गई हैं धर्मनिरपेक्षता के बारे में, उस पर आपको भाजपा पर कई शंकाएँ हैं लेकिन धर्मनिरपेक्षता की घोषणा की प्रधान मंत्री ने इस दस्तावेज में तो आपको क्यों इससे शिकायत है ? धर्मनिरपेक्षता के बारे में प्रधान मंत्री ने कहा कि यह हमारी संस्कृति और सभ्यता का अटूट अंग रहा है। यह देश धर्मनिरपेक्ष रहा है और आगे भी रहेगा।

इसमें अशक्तों की सहायता की बात कही गई है। पिछली सरकारों में बड़े-बड़े लोग मौज मारते रहे और देश में अंतिम आदमी वहाँ का वहाँ है। उसके लिए क्या किया गया ? अशक्तों की सहायता की बात जो राष्ट्रीय एजेंडे में कही गई, राष्ट्रपति के अभिभाषण में कही गई, उससे आपको क्या आपत्ति है ? सार्वजनिक वितरण प्रणाली में बहुत भ्रष्टाचार व्याप्त है। अगर उसमें सुधार करने की बात कही गई तो क्या आपत्ति है ? रोजगार के अवसरों में वृद्धि के मामले पर आपको क्या आपत्ति है ? समाज के बुनियादी ढाँचे में अधिक धन लगाने की बात कही गई है। अधिक से अधिक लोगों को आवास की बात कही गई है। शिक्षा पर अधिक व्यय और महिलाओं की प्रेजुएशन तक निःशुल्क शिक्षा पर आपको क्या आपत्ति है, ज़रा खड़े होकर बोलिये। पीने का पानी पहुँचाने की घोषणा की गई है। कांग्रेस ने तीसरी पंचवर्षीय योजना के दस्तावेज में कहा था कि भारत के हर गाँव को पीने का पानी मुहैया कराया जाएगा। आठ योजनाओं में आपने वायदों को पूरा नहीं किया। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार पांच साल रही तो पीने का पानी भारत के हर गाँव को मिल जाएगा, राष्ट्र को इस बात का पूरा विश्वास है। अब वह व्यक्ति प्रधान मंत्री पद पर बैठा है जिस पर देश को विश्वास है।

सभापति महोदय, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति पर केवल आपने इमरजेन्सी में जो नीति अपनाई थी, उसका हथ्र क्या हुआ? लेकिन जनसंख्या नीति पर यदि सरकार कोई नीति तैयार करना चाहती है तो इस पर आपको क्या आपत्ति है? आज्ञादी के पचास साल बाद भी बच्चे लाटरी और मूंगफली बेच रहे हैं। इनके लिए पचास सालों में आपने कौन सी योजनाएं बनाई? श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे दूरदृष्टा ने देश के अनाथ गरीब बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय नीति बनाने की बात कही। आपको उससे क्या आपत्ति है? महिलाओं के लिए स्थानीय संस्थाओं से लेकर विधान सभा और लोक सभा में ३३ परसेंट आरक्षण की बात आप भी कहते रहे। इसको पारित कराने में आपको क्या दिक्कत है? महिलाओं को ३३ परसेंट आरक्षण देने के लिए पहला प्रधान मंत्री हुआ है जिसने छाती ठोककर कहा है कि यह बिल सरकार पारित कराएगी। आप आइए और इसको पारित कराइए और महिलाओं को अधिकार दीजिए। बड़ी बातें की जा रही हैं कि भारत की बेटों और भारत की बहू। भारत की बेटों ममता बनर्जी जिसे कांग्रेस ने निकाल दिया, वह भारत की बेटों हमारे साथ है। जो झुग्गी-झोंपड़ियों में गरीबों के लिए संघर्ष करती रही, वह भारत की बेटों आज भारतीय जनता पार्टी की अलायंस की सरकार में है।

सभापति महोदय, सकल घरेलू उत्पादन को आठ परसेंट बढ़ाने का और बेरोजगारी हटाओ का नारा इस सरकार ने दिया है। आपको क्या आपत्ति है इस पर? कृषि पर योजना का ६० परसेंट खर्च करने की बात कही गई है। आज देश भुखमरी के कगार पर खड़ा है। किसानों को छला गया, बेतूल में हक मांगने पर २९ किसानों की हत्या करने वाले किस मुंह से श्री अटल बिहारी वाजपेयी का विरोध करते हैं? गवर्नर के पद का जिस तरह से दुरुपयोग हुआ है, उसको रोकने के लिए सरकारिया आयोग बैठा था। उसको लागू करने की बात सरकार कह रही है और अभी भी प्रधान मंत्री ने कहा है कि किसी भी राज्य सरकार को दुर्भावनापूर्वक बर्खास्त नहीं किया जाएगा। लेकिन कई सरकारें तो ऐसी हैं कि उनको तत्काल बर्खास्त कर देना चाहिए लेकिन यह पहले प्रधान मंत्री हैं जो सत्ता में आने के बाद आपकी राज्य सरकारों को देश के सभी क्षेत्रीय दलों की सरकारों को बर्खास्त करने की बात नहीं कर रहे हैं। पिछड़ा क्षेत्र आयोग बनाने की बात कही गई है। जितने रीजनल इंवेलेन्सेज़ हैं जिनके कारण उत्तरांचल की मांग, वनांचल की मांग और छत्तीसगढ़ की मांग हो रही है

... (व्यवधान)

मैं प्रधान मंत्री जी को सुझाव दूंगा कि दूसरे राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन करना चाहिए और राज्यों के पुनर्गठन पर पुनर्विचार होना चाहिए। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

">

">

श्री अनंत गंगाराम गीते (रत्नागिरि) : सभापति महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद। प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो विश्वास का मत सदन में पेश किया है मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूँ। मैं अपनी ओर से और अपने पक्ष शिवसेना की ओर से इस प्रस्ताव का पूरी तरह से समर्थन करता हूँ। ग्यारहवीं लोक सभा में १८ महीने इस सदन में रहने का मुझे मौका मिला। अब दोबारा इस सदन में उपस्थित रहने का मुझे मौका मिला है। पिछली लोक सभा में विश्वास मत के प्रस्ताव पर जो चर्चा इस सदन में हुई थी, वह समय मुझे याद आ रहा है, जिसका जिक्र प्रधान मंत्री जी ने विश्वास मत के समय दिये गये अपने भाषण में किया। जब ग्यारहवीं लोक सभा के प्रधान मंत्री के रूप में उन्होंने अपना प्रस्ताव इस सदन में रखा था तो वर्तमान सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने विश्वास मत पर सदन में होने वाली चर्चा को दूरदर्शन पर सारे देश के लोगों को दिखाने की एक अच्छी परम्परा डाली थी। विश्वास मत पर जब प्रधान मंत्री जी अपना उत्तर देने के लिए खड़े हुए तो मुझे वह क्षण याद है कि पूरे सदन में सन्नाटा छाया हुआ था और देश के करोड़ों लोग दूरदर्शन पर उस चर्चा को देख रहे थे। वे प्रधान मंत्री श्री वाजपेयी जी का भाषण ऐसे सुन रहे थे जैसे क्रिकेट का वन डे मैच होता है। उस समय हर नागरिक टी.वी. के सामने अटल जी के विचार सुन रहा था। उस समय मैं सदन के सदस्य के रूप में यहाँ मौजूद था। मुझे ऐसा लगा था कि अटल जी अभी कहेंगे कि मैं अपना बहुमत यहाँ सिद्ध करता हूँ। लेकिन जब उन्होंने यह कहा कि इस सदन का विश्वास मैं हासिल नहीं करा हूँ, इसलिए मैं राष्ट्रपति जी को अपना इस्तीफा देने जा रहा हूँ ये शब्द जब उन्होंने कहे तो देश के करोड़ों लोगों की आँखों में पानी आ गया जो टी.वी. पर अटल जी के विचार सुन रहे थे।

... (व्यवधान)

SHRI TARIQ ANWAR (KATI HAR)

श्री तारिक अनवर : आंसू तो नहीं आये।

... (व्यवधान)

SHRI RAM NAIK (MUMBAI-NORTH)

श्री राम नाईक : आप इस पर मजाक कर रहे हैं। जब कोई गैरहिंदी भाषी हिन्दी में बोलता है तो आपको उसका उत्साह बढ़ाना चाहिए। आप क्यों मजाक उड़ा रहे हैं। थोड़ी बहुत सभ्यता तो होनी चाहिए। आप लोगों ने सभ्यता बिलकुल छोड़ दी लगती है।

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति महोदय, उस दिन हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों को दुख हुआ। आप इस बात को हंसी-मजाक में यहाँ पर ले रहे हैं, लेकिन यह सत्य है कि करोड़ों लोगों को दुख हुआ। गरीब से गरीब आदमी, एक आटो रिक्शा चलाने वाला भी चाहता था कि वाजपेयी जी देश के प्रधान मंत्री हों और आज वह समय आ गया है जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी इस देश के प्रधान मंत्री हो गये हैं और वे पांच साल तक इस देश के प्रधान मंत्री रहेंगे।

यह आपको पता चलेगा।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप कृपया बैठिए। इस प्रकार से बीच में टोका-टाकी ठीक नहीं है। अगर आपको कोई बात कहनी है, तो ठीक ढंग से कहिए। इस प्रकार से किसी सदस्य के बीच में न बोलें।

... (व्यवधान)

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, कल विश्वास मत पर मतदान होगा, लेकिन आज ही ऐसा लग रहा है कि अटल बिहारी जी को विश्वास मत प्राप्त हो गया है क्योंकि जिन विपक्ष के नेता ने इस विश्वास मत के ऊपर अपने विचार आरंभ में प्रकट किए थे वे यहां मौजूद नहीं हैं। उन्हें मालूम है कि अटल जी विश्वास मत प्राप्त करने वाले हैं, उनकी जीत होने वाली है। हालांकि यह कल सिद्ध होना है, लेकिन उसकी छाया आज ही दिखाई पड़ रही है।

सभापति जी जब विपक्ष के नेता शरद पवार जी बोल रहे थे तो उन्होंने महाराष्ट्र और विशेषकर मुम्बई में हुए दंगों का जिक्र किया, बाबरी मस्जिद का जिक्र किया, श्री कृष्ण कमीशन का जिक्र किया। जब वे बोल रहे थे, तो हमने उनको टोकने की कोशिश की थी और पूछा था कि जब मुम्बई में दंगे हुए थे, तो उस समय वहां किसकी सरकार थी, कौन मुख्य मंत्री थे? मैं बताना चाहता हूँ उस समय महाराष्ट्र में कांग्रेस की सरकार थी और शरद पवार स्वयं मुख्य मंत्री थे। इनकी सरकार ने क्या किया? उस वक्त पूरी मुम्बई जल रही थी और मुख्य मंत्री और आपके लोग डरकर घर में छिपकर बैठे हुए थे, सरकार खामोश बैठी रही।

... (व्यवधान)

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR)

श्री तारिक अनवर: श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट आने दें। दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

... (व्यवधान)

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते : श्री कृष्ण कमीशन की रिपोर्ट तो आएगी, लेकिन मुम्बई की जनता इस बात को मानती और जानती है कि यदि मुम्बई को किसी ने बचाया है तो वे हमारे शिव सेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे हैं। जब मुम्बई जल रही थी और सरकार खामोश थी, तो मुम्बई को शिव सेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे ने बचाया। शिव सेना के लोग जगह-जगह गए और स्थिति को बिगड़ने से रोका और काबू किया, यह संदेश पूरे मुम्बई वासियों को गया। ऐसी भयंकर स्थिति में जब मुम्बई जल रही थी, किसी में जाने का साहस नहीं था, एक दिन में १२ जगह विस्फोट हो गए, सैकड़ों लोग मर गए, हजारों घायल हो गए, करोड़ों की संपत्ति नष्ट हो गई, लेकिन उसके खिलाफ तब के मुख्य मंत्री और यहां के विपक्ष के नेता ने कुछ नहीं कहा। श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट आएगी और उस पर विधान सभा में चर्चा होगी और जो सत्यता है वह देश और दुनिया के सामने प्रकट होगी। श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट की चिन्ता हमें नहीं है।

सभापति महोदय, हमें दुख इस बात का है कि जब १२वीं लोक सभा चुनी गई और वाजपेयी जी को विश्वास मत प्राप्त होने वाला है, तो ११वीं लोक सभा की बजाय १२वीं लोकसभा में महाराष्ट्र से हमारे सांसद कुछ कम आए हैं। इसका हमें ही नहीं पूरे महाराष्ट्र के १० करोड़ लोगों को दुख है कि हम आज वाजपेयी सरकार को उतनी ज्यादा संख्या में सांसद भेजकर समर्थन नहीं दे पाए जितनी संख्या में दिया जाना चाहिए। यहां पर विपक्ष के नेता बोल रहे थे कि उन्हें बड़ी भारी सफलता महाराष्ट्र में लोक सभा चुनावों मिली, मैं इस बात को तो स्वीकार करता हूँ, लेकिन मैं उन्हें आगाह करना चाहता हूँ कि अभी तो लोक सभा के ही चुनाव हुए हैं दो साल बाद वहां विधान सभा के चुनाव भी होने वाले हैं। तब आपको परिणाम देखने को मिलेगा कि महाराष्ट्र में कहीं भी कांग्रेस दिखाई नहीं देगी और आपको बुरी तरह हार होगी। लोक सभा चुनाव में कैसे हुआ, क्या हुआ, इस बारे में ज्यादा विस्तार में और कारणों में जाना नहीं चाहता हूँ, लेकिन जनता दुखी है कि यह सब कैसे हो गया।

हर आदमी परेशान था। हर मतदाता परेशान था। आज दुर्भाग्य से हम संख्या में कम आये हैं। महाराष्ट्र ने पूरा साथ नहीं दिया, हमें इस बात का दुख होता है। यदि महाराष्ट्र साथ देता तो आज सदन में विश्वास मत रखने का समय भी न आता। इस बात से सारा महाराष्ट्र दुखी है। इस बात से सारा महाराष्ट्र चिन्तित हुआ है।

सभापति जी, यहां पर आरोप लगाये जाते हैं। हमारे विपक्ष के नेताओं से, विपक्ष के साथियों से, जो यहां पर विश्वास मत के खिलाफ बोल रहे हैं, उसका विरोध कर रहे हैं, मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि यदि भाजपा और मित्र पक्षों की सरकार यहां पर नहीं आयेगी तो यहां कौन सरकार बनाने वाला है। यहां पर कांग्रेस की सरकार आयेगी या यहां पर फ्रंट की सरकार आयेगी? किसकी सरकार यहां पर आने वाली है? कौन सरकार बना पायेगा? राष्ट्रपति जी ने सही निर्णय लिया है जो कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को सरकार बनाने का आमंत्रण दिया। आज सरकार बनी है, कल विश्वास प्राप्त करने वाली है। यह सरकार चलेगी। आज यहां पर विरोध किया जाता है, आरोप लगाये जाते हैं। यूनाइटेड फ्रंट की सरकार १४ पार्टियों की थी लेकिन हमारी १८ पार्टियों की सरकार है। आज करीबन १८ पक्ष एक साथ हुए हैं। चार मित्र पक्ष हमें बाहर से मदद कर रहे हैं। यह १८ पार्टियों की सरकार है। मैं अपने विपक्ष के नेताओं और विपक्ष के साथियों को यह कहना चाहता हूँ कि १८ पार्टियों की सरकार १८ जड़ी बूटियों का च्यवनप्राश बना हुआ है, जो कि ५ साल आसानी से हजम कर जायेगा। आप इसकी चिन्ता मत कीजिए। केवल ५ साल ही नहीं बल्कि उसके बाद में आने वाले चुनाव में भी भाजपा और मित्र पक्ष इस देश के अंदर जीत जायेंगे। यह विश्वास मैं यहां पर देना चाहता हूँ।

सभापति जी, कहने के लिए तो बहुत है लेकिन समय की पाबंदी यहां पर मौजूद है। अभी दो-तीन मिनट और बाकी है।

... (व्यवधान)

मैं समर्थन इसलिए करता हूँ।

सभापति महोदय : आप कन्कलूड करिये। आपका समय हो रहा है।

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, अभी तीन मिनट और बाकी है।

सभापति महोदय : आप जल्दी समाप्त करिये।

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते : यहां पर विपक्ष के नेता भाषण करके चले गये। सुश्री ममता बनर्जी ने उनको सही जवाब दिया। जार्ज साहब ने उनको सही जवाब दिया। वे आरोप लगाकर जाते हैं। केवल आरोप लगाने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते। पिछले १८ महीने में तीन सरकारें आईं। माननीय श्री देवेगौड़ा जी की सरकार और माननीय श्री गुजराल साहब की सरकार कांग्रेस के समर्थन से यहां पर आईं। वह दो सरकारें किसलिए गिराई गयीं, इसका जवाब उनको देना चाहिए। जनता इस बात को जानना चाहती थी कि देवेगौड़ा जी की सरकार से सपोर्ट क्यों वापस लिया गया। गुजराल साहब की सरकार क्यों गिराई गयी, यह जनता जानना चाहती थी। जिस जैन कमीशन का यहां पर रैफरेंस दिया गया, जिस जैन कमीशन के नाम से लोक सभा भंग हो गयी, उसके बारे में विपक्ष के किसी नेता ने अपने भाषण में कहीं कुछ नहीं कहा।

सभापति महोदय : कृपया कन्कलूड करिये।

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, मैं अपने आपको कंट्रोल कर रहा हूँ। ... (व्यवधान) लेकिन मैं इसलिए कहने जा रहा हूँ कि कांग्रेस के नेता जब प्रचार के लिए जाते हैं। चुनाव में जब हार गये थे।

सभापति महोदय : आप कन्कलूड कीजिए, समय हो गया है।

SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI)

श्री अनंत गंगाराम गीते: मैं आपके आदेश का पालन करने वाला हूँ। आपकी आज्ञा का पालन करने वाला हूँ लेकिन जिस तरह से जनता को गुमराह करने की कोशिश कांग्रेस के नेताओं ने कई सालों से की, वही काम वह आज भी करने जा रहे हैं। इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। श्री वाजपेयी जी की सरकार का समर्थन करने का मौका आपने मुझे दिया। विश्वास मत के प्रस्ताव पर समर्थन देने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

Sir, it is not fair to say it. This is our national agenda. It is genuine secularism instead of the so-called secularism only to play the communal card. What have we seen, Sir?